अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि-परिषद् (रजि.)

बुलेटिन

श्री कपूरचंद जैन घुवारा जी

स्मृति विशेषांक

महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटील का सम्मान

श्री शिवराजसिंह जी (मुख्यमंत्री) म.प्र. शासन द्वारा सम्मान

गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंहजी और घुवाराजी

कृषि मंत्री कमल पटेल जी के साथ

हस्तशिल एवं हथकघा विकास निगम अध्यक्ष का पद भार ग्रहण करते हुए

श्री कैलाश विजयवर्गीय जी के साथ

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि–परिषद् (रजि.)

बुलेटिन

रजिस्ट्रेशन नं. DS/S1530/2019

श्री कपूरचंद जी जैन घुवारा स्मृति–विशेषांक

✼ अंक ✼

अप्रैल – जून 2021

✼ परामर्श मण्डल ✼

डॉ. श्रेयांसकुमार जैन

बड़ौत (उ.प्र.)

डॉ. वृषभ प्रसाद जैन

लखनऊ (उ.प्र.)

✼ सम्पादक ✼

पं. विनोद कुमार जैन

रजवांस, सागर (म.प्र.)

मो.: 95756 34411

डॉ. सुनीलकुमार जैन 'संचय'

ललितपुर (उ.प्र.)

✼ प्रकाशक ✼

ब्र. जयकुमार निशान्त

पुष्प भवन, पपौरा चौराहा

टीकमगढ़ (म.प्र.)

मो.: 94251 41697

अनुक्रमणिका

- प्रकाशकीय 02
- सम्पादकीय 05
- अध्यक्षीय 07
- मंगल आशीर्वाद 09
- श्री कपुरचंद्र घुवारा का जीवन परिचय 10–12
- बुन्देलखण्ड के गांधी घुवाराजी 13–14
- अनुकरणीय व्यक्तित्व : घुवाराजी 15
- सिद्धांतवादी व्यक्तित्व के धनी श्री कपूरचंद घुवारा 16–17
- शताधिक संघर्षो में सफल घुवाराजी को अंतिम प्रणाम 18–19
- श्री कपूरचन्द्रजी जैन 'घुवारा' 20
- श्रद्धा–सुमन 21
- श्रद्धा–सुमन 22
- पुण्यशाली–जैनकुलीन, राजनैतिक पुरोधा, सबके दिलों में राज करने वाले.... 23–25
- एक जननायक की निर्भीक, बेबाक मुखर आवाज हुई मौन 26–29
- जन–जन के ह्रदय में सदैव जीवन्त रहेंगे श्री कपूरचन्द्रजी घुवारा 30–31
- दृढ़ इच्छा के धनी, दूर दृष्टा 32–33
- शेर–ए–बुन्देलखण्ड 34
- काजल की कोठरी में रहकर बेदाब रहे रजनीति के शेरदिल... 35–36
- मानव समाज के कोहिनूर थे कपूरचन्द्र घुवारा 37–38
- मेरे मार्गदर्शक 39–40
- श्रद्धेय श्री घुवाराजी युगों–युगों तक जीवन्त रहें 41–42
- प्रबंधकीय व्यवस्था के सफल संचालक आदरणीय घुवाराजी 43–44
- घुवाराजी की जीवन ज्योति 45–46
- मेरे आदर्श, मेरे पिताजी .... ''लौहपुरुष'' 46
- पिताजी की सीख 47
- राजनेताओं द्वारा घुवाराजी को श्रद्धांजलि 48–49
- शोक संदेश 49–60
- अक्षय अमृत विश्वशांति अनुष्ठान में 5 लाख से अधिक आहुतियां 61
- 300 के लगभग साधर्मी जनों देव आस्था पुस्तकालय द्वारा श्रद्धांजली सभा 62–63
- सामूहिक श्रद्धांजलि सभा 64–65
- समाज की विभूतियों के अकस्मात निधन पर वर्चुअल दी गई श्रद्धांजलि 66–68

www.shastriparishad.com

Indian Overseas Bank, Saharanpur, Account No. 043401000017111 IFSC-IOBA0000434 Punjab National Bank, Bank Account Number 0042000100146664 IFSC - PUNB0004200

लेखकों के विचार से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
लेखों के तथ्यों की प्रामाणिकता के सम्बन्ध में लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं।

प्रकाशकीय

बहुआयामी व्यक्तित्व : दादा कपूरचन्द्रजी घुवारा

— **ब्र. जय कुमार निशान्त,** टीकमगढ़
महामंत्री — अ.भा.दिग. जैन शास्त्रि–परिषद्

जन्म की सार्थकता कर्म से होती है, जब व्यक्ति का कर्म ही धर्म हो जाता है तो उसका जीवन मंदिर सा पावन और पवित्र होने लगता है। जैसे-जैसे व्यक्तित्व विराट होता है, वह परिवार एवं समाज से परे सम्पूर्ण राष्ट्र क्या विश्व का पथ प्रदर्शक बन जाता है। ऐसे ही राष्ट्रीय बहुमान प्राप्त व्यक्तित्व का नाम है 'कपूरचन्द्र घुवारा'। यह हमारा सौभाग्य है कि हमें ऐसे विराट व्यक्तित्व का सान्निध्य सहज ही प्राप्त होता रहा है।

दादा जितना ऊपर उठते गये वह उतने ही सरल-सहज होते गये, जन–जन की चाहत का केन्द्र बनते गये, उनकी उपस्थिति ही लोगों का संबल बनकर कुछ विशेष करने की प्रेरणा बन जाती थी। आपने स्वयं अभाव में संघर्षशील रहकर जन-जन की समस्याओं का निदान करके सु ख समृद्धि एवं खुशहाली के द्वार खोले हैं। आप मोमबत्ती की तरह गलते-पिघलते रहे पर विषम झंझावातों में भी उनकी लौ निष्कम्प प्रकाशमान रही, जीवन के अंतिम क्षण तक उनका जीवन समाज, राष्ट्र एवं धर्म के लिए समर्पित रहा।

ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व के लिए शब्द बौने पड़ जाते हैं, उपमाएँ निस्तेज हो जाती हैं, उपाधियाँ धूमिल हो जाती हैं, उनका हमारी कल्पना से परे होकर हमसे बहुत-बहुत ऊपर उठने पर भी उनका वरद हस्त हमेशा हमारे शीश पर रहा है। छोटे से छोटा व्यक्ति भी उनके लिए उतना ही महत्त्वपूर्ण था जितना कोई राष्ट्रीय व्यक्तित्व, यही कारण है वह शासन-प्रशासन एवं राजनैतिक पदों पर रहते हुए भी सभी के थे, सब उनके थे, आप शासन पर ही नहीं सभी के दिलों पर भी राज करते थे।

धर्म और राजनीति – बचपन से ही आप निडर, स्वाभिमानी, बेबाक, हँसमुख सभी को अपना बनाने एवं नेतृत्वकला में निष्णात थे। आपको जैनत्व के संस्कार घूँटी में पिलाये गये थे। धार्मिक सिद्धान्तों को प्राणप्रण से निभाने के लिए आप दृढ़ संकल्प रहे। देश–विदेश की यात्रा में धर्माचरण कभी भी शिथिल नहीं हुआ। आपकी सहधर्मिणी श्रीमती भागवती घुवारा परछांई की तरह आपके साथ रहकर सदैव धार्मिक सिद्धान्तों एवं संस्कारों की परिपालना में सहयोगी एवं सम्बल बनी रहीं।

आपकी गुरुभक्ति जगत् प्रसिद्ध थी, जहाँ भी जाते मुनिसंघों के दर्शन करके उनकी कुशलता एवं संयम साधना की, जानकारी लेकर उनकी चर्या, वैयावृत्ति, धार्मिक समारोह, अनुष्ठान एवं चातुर्मासों में सहयोग करके श्रावक के कर्तव्यों का निष्ठा एवं समर्पण के साथ पालन करते थे।

राजनैतिक–सामाजिक धरना, घेराव, पदयात्रा, जेलयात्रा, चुनाव आदि में आप सदैव अग्रणी रहते थे। कई दिनों तक चलने वाले आयोजनों को भी आपने धर्माचरण में आड़े न हीं आने दिया। आपने सिद्ध कर दिया

जब–जब राजनीति धर्म की शरण में आई है तब–तब उसे सत्य एवं निष्ठा के साथ अन्याय के विरुद्ध खड़े होने का सम्बल मिला है। नैतिक एवं आध्यात्मिक शक्ति से चरित्र जाज्वल्यमान रहता था। इसके विपरीत धर्म में राजनीति आती है, तो विध्वंस, अन्याय, स्वार्थ, शोषण से धर्म हमेशा विकृत हुआ है, आहत हुआ है, कलंकित हुआ है।

शिक्षा एवं संगठन – आप दृढ़ संकल्पी एवं दूरदर्शी रहे हैं, समय देशकाल की स्थिति को परखते थे। यही कारण था आपने अपने क्षेत्र की युवाशक्ति के भविष्य निर्माण के संकल्प के साथ लघु नगर घुवारा में वर्णी कॉलेज की आज से 38 वर्ष पूर्व सामाजिक सहयोग से स्थापित करके क्षेत्रीय समाज का गौरव वृद्धिंगत किया। आपकी नेतृत्व शक्ति, सरलता,सहजता एवं निष्पृहता से आबाल बृद्ध आपके प्रति समर्पित था। जात–पाँत का भेदभाव न रखकर आपने जनसेवा से सबको इस प्रकार संगठित किया जैसे धागा मोतियों की माला में मोतियों को सहेजकर उनका सौन्दर्य, चमक को संवारता है और स्वयं अदृश्य रहता है।

आपके समर्पण का सुफल था आपकी एक आवाज पर पूरा क्षेत्र एकत्रित हो आपके नेतृत्व में क्रियान्वित हो जाता था, इसीलिए आपके धरना प्रदर्शन सफल होकर शासन–प्रशासन को झुकाने तथा अपनीमांग पूरी करवाने में सक्षम होते थे।

समाज उन्नायक – दादा घुवाराजी की कार्यप्रणाली इतनी निष्पक्ष एवं पारदर्शी थी कि कभी किसी के मन में संशय या निराशा को स्थान नहीं मिला। सभी समाज के आयोजनों, अनुष्ठानों एवं धार्मिक समारोहों में आपकी उपस्थिति एवं सहभागिता रहती थी।

आपके धर्माचरण, कर्तव्यनिष्ठा, श्रद्धा एवं समर्पण ने गोलापूर्व समाज के साथ जैन समाज को राष्ट्रीय ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर स्थापित कर हमारा गौरव बढ़ाया है। आपके पास जब भी सामाजिक विषमता का प्रश्न खड़ा हुआ आपने कुशलतापूर्वक सभी पक्षों को ध्यान में रखकर सम्यक् समाधान देकर समाज एवं धर्म के गौरव को बढ़ाया है।

पुरातत्त्व एवं इतिहास – मुझे दादा का सान्निध्य बचपन से ही मिलता रहा है। पवन, सुनील, अन्नू भ्रातवत रहे हैं। सामाजिक कार्यों एवं धार्मिक आयोजनों में पूज्य पिता श्री गुलाबचन्दजी पुष्प के साथ जाने का सौभाग्य मिला। उन्हीं के आशीर्वाद से आज हमारा परिवार इतना धार्मिक एवं सक्षम है। नवागढ़ क्षेत्र का पुरातात्त्विक सर्वेक्षण पिताजी की समाधि के पश्चात् ही आरंभ हुआ जिसमें कई प्रकार के अवरोध भी आये, जिनका निराकरण दादा घुवाराजी से ही हुआ करता था। शासन–प्रशासन एवं क्षेत्रीय समाज का सहयोग, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं पुरातात्त्विक धरोहर के संरक्षण में अनमोल एवं महत्त्वपूर्ण सुझाव आदरणीय घुवारा जी से ही मिले हैं।

आप क्षेत्रों के प्रति सदैव समर्पित रहे हैं यही कारण है आपकी अध्यक्षता में सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि का चरमोत्कर्ष रहा है। मंदिर निर्माण हो या पंचकल्याणक, भूमि संरक्षण हो या क्षेत्र विस्तार सभी में आपने निडरता–पूर्वक संघर्ष किया। क्षेत्र के विकास में आपका अवदान स्तुत्य, वंदनीय एवं श्लाघनीय है।

शास्त्रि परिषद् – दादा घुवाराजी को किताबी ज्ञान के साथ सभी नीतियों का ज्ञान था जिसके कारण आप सभी क्षेत्रों में सर्वमान्य रहे हैं। जब मुझे शास्त्रि परिषद् में कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया तब मैं दादा के पास आशीर्वाद लेने गया, तो आपने कहा क्या शास्त्रि परिषद् में केवल विद्वानों को ही रखा जाता है? तब मैंने कहा जो व्यक्ति सामाजिक, धार्मिक, धर्मायतनों की सुरक्षा एवं देवशास्त्र गुरु के प्रति समर्पित हो वह अपने अनुभव एवं सक्रियता से सदस्यता को प्राप्त कर सकता है और आप तो धर्माचरण के साथ सामाजिक संगठनों एवं अजैनों का नेतृत्व करके, उनके जीवन से सामाजिक कुरीतियों के साथ शराब, मांसाहार जैसे अभिशापों को दूर करके उनका जीवन व्यसनमुक्त करके सन्मार्ग सिखाते हैं।

आप राजनैतिक, धार्मिक एवं सामाजिक सभी प्रकार से जैन समाज एवं जैन धर्म का संरक्षण करके अपनी धार्मिक चर्या से हमारा गौरव बढ़ाते हैं। तब उन्होंने शास्त्रि परिषद् की सदस्यता ग्रहण कर परिषद को गौरवान्वित किया था।

आपकी गुरुभक्ति एवं सर्मपण सेवा भावना अनुकरणीय रही। आपने परिषद के अधिवेशनों में अधिक से अधिक सान्निध्य दिया है। यही नहीं जितने दिन रहे विद्वानों के साथ शिक्षण-प्रशिक्षण लिया एवं सभी गतिविधियों में सम्मिलित हुए।

सराकोद्धारक आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज के प्रति आपकी अनन्य श्रद्धा थी। शास्त्रि परिषद् के सम्मान को आपने इतने उच्च पद प्रतिष्ठा पर रहकर भी पूर्ण बहुमान दिया जो अविस्मरणीय है। आप सदैव हमारे प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं।

आदरणीय घुवाराजी का मानना था कि वर्तमान में जो पंथ, ग्रन्थ, संत एवं एकल परिवार के व्यामोह में आपस में इतना बंट गये हैं कि हमारी सामाजिक, राजनैतिक शक्ति के साथ धार्मिक भावना भी क्षीण होती जा रही है। इसी के साथ तेजी से घट रही जनसंख्या एवं युवा शक्ति का पलायन गंभीर रूप लेता जा रहा है। हमारे शीर्षस्थ श्रमण, बुद्धिजीवी एवं नेतृत्व शक्ति को सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ गंभीरतापूर्वक समन्वय अति आवश्यक है। ऐसा न हो हमारे इस अलगाव से जैन समाज का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाये, हमारी श्रमण परम्परा एवं धर्मायतनों का संरक्षण करना भी मुश्किल हो जाये। शास्त्रि परिषद को इस समस्या का समाधान करने में अपनी भूमिका निभाना चाहिए।

आप हमसे शरीर से विलग हुए हैं, आपकी सरलता–सहजता एवं कर्तव्यनिष्ठा सदैव परिषद् की कार्यप्रणाली में सहयोगी रहेगी।

इसी भावना के साथ आपके प्रति श्रद्धाभाव समर्पण, शत्–शत् नमन।

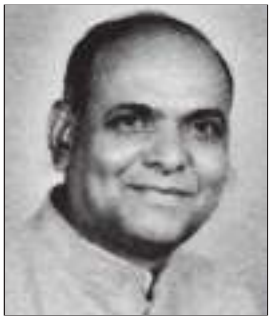

सम्पादकीय

– पं. विनोद कुमार जैन, रजवांस
संयुक्त मंत्री–अ.भा.दिग.जैन शास्त्रि–परिषद्

युक्ति साधन सम्पन्नः सुव्यवस्थः सुरक्षितः ।
अहो चेदसि शत्रूणां द्रुतं गर्वो विनंक्ष्यति।।81।।

जो युक्तिपूर्वक अपने साधनों को सुदृढ़, सुसंगठित और सुरक्षित बना लेते हैं, वे महापुरुष अपने शत्रुओं के गर्व को नष्ट कर देते हैं।

स्वनाम धन्य, कुशल वक्ता, श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ, सदाचारी, धर्मनिष्ठ, न्यायप्रिय, समाजसेवी, संचालक, संयोजक, मुनिभक्त, तीर्थ संरक्षक, अनुभवी संगठक, संवेदनशील, स्पष्टवादी सफल लोकप्रिय नेतृत्व की प्रतिमूर्ति श्री कपूरचंद्र जैन 'घुवाराजी' युक्तिपूर्वक कार्य करने के साथ सर्वजनहिताय, सर्वजन सुखाय के पक्षधर थे।

आपकी वक्तृत्व कला का कौशल ही था कि आप सामान्यजन ही नहीं बुद्धिजीवियों को भी अपनी ओर आकृष्ट कर लेते थे। आपने अपना जीवन समाजसेवा, तीर्थ संरक्षण को समर्पित किया था। जीवन को धर्ममय बनाया, शुद्ध आहार ग्रहण किया। परिवार को सुसंस्कारित किया। जिससे आपकी यश पताका फहरा रही है। नीतिकारों ने भी कहा है कि–

जनमना सदृशाः मानवाः सन्निमूतले।
कीर्तो किन्तु महान् भेदास्तेषां कार्यप्रभेदताः।।

उत्पत्ति तो सब लोगों की एक ही प्रकार की होती है परन्तु उनकी प्रसिद्धि में भिन्नता होती है। क्योंकि उनके जीवन में महान अन्तर होता है। इसी प्रकार का अन्तर श्री घुवाराजी के जीवन में था आपने पतितों का उद्धार, भयाकुलितों में निर्भय और भ्रमित जनों को सन्मार्ग प्रदर्शित किया है। गुणीजनों का बहुमान, साधर्मियों के प्रति वात्सल्य भाव और युवाओं को स्नेह आपकी प्रकृति बन गई थी।

सबका साथ देना, सबको साथ लेना, और सबका ध्यान रखना, आपकी विशेषता थी जिसके कारण आपने अनेक धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक महोत्सवों का कुशल संचालन और अभूतपूर्व सफलतापूर्वक सम्पादन भी किया। आपकी कार्यकुशलता को अनेक बार मुझे देखने का और आपके साथ घुवारा, भेलसी, द्रोणगिरि आदि अनेक स्थानों में पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव आदि का अवसर प्राप्त हुआ। 2008 भेलसी पंचकल्याणक में पदवी प्रदान करने का अवसर आया तब आपने अनेक महानुभावों को उनकी गरिमा, दानशीलता, धार्मिकता आदि के अनुसार सिंघई, सवाई सिंघई आदि उपाधियां प्रदान की।

सत्रहवीं शताब्दी में हमारे पूर्वजों ने भेलसी में मंदिर निर्माण कराकर श्री शांतिनाथ, श्री कुंथुनाथ, श्री अरनाथ भगवान के बिम्ब स्थापित कराये और पंचकल्याणक प्रतिष्ठा गजरथ महोत्सव किया। उस समय राज्य स्वभाव के साथ समाज ने सिंघई की उपाधि प्रदान की थी। घुवाराजी ने उसी भेलसी में

पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव के अवसर पर हमें पगड़ी पहना कर सवाई सिंघई की उपाधि से अलंकृत किया था।

2012 में घुवारा में अभूतपूर्व प्रभावना के साथ भगवान नेमीनाथ स्वामी के पंचकल्याणक सम्पन्न हुए। इसमें श्री घुवाराजी के कुशल नेतृत्व का कौशल ही था जिससे यह सफलतम आयोजन हुआ। आपकी सूझबूझ अनुकरणीय ही नहीं प्रशंसनीय भी थी।

श्री कपूचन्द्रजी घुवारा अखिल भारतीय दिगम्बर जैन शास्त्रि–परिषद् के सम्माननीय सदस्य थे। सन् 2007 में भोपाल में परिषद् के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर आपको शास्त्रि–परिषद् के वाणी भूषण पं. बाबूलाल जमादार स्मृति पुरस्कार के गौरवशाली पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया था।

आप विद्वानों के साथ विद्वान, राजनेताओं के साथ नेता, धार्मिकजनों के साथ धर्मी, मुनिभक्त, व्रतीजनों के साथ व्रती और पंचायत के समय कुशल पंच होते थे। आपको निर्णय लेने की अद्भुत क्षमता थी।

निष्ठावान तीर्थ भक्त श्री घुवाराजी ने श्री सिद्धक्षेत्र के विकास, उद्धार एवं सास बहु मंदिर की भूमिका का निर्वहन तो किया ही था साथ ही सन् 2016 में भगवान अरनाथ स्वामी के 15 फुट ऊँचे एक विशाल जिनबिम्ब की स्थापना कर अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग किया।

नीतिकारों ने विद्वत्ता, प्रभावोत्पादक वक्तृता, शान्त वृत्ति और समयसूचनकता प्रगट करने वाली प्रत्युत्पन्नमति ये सभी सफल राजनीतिज्ञ के आवश्यक गुण हैं। इन सभी गुणों का श्री घुवाराजी जी में प्रत्यक्ष दर्शन होते थे। धार्मिक, राजनैतिक, जातिगत, शोकसभा एवं सामाजिक, कैसी भी सभा हो आपकी स्पष्टवादिता अनुकरणीय होती थी। मंगलगिरि सागर में आचार्य श्री विभवसागरजी महाराज मुनि दीक्षा प्रदान कर रहे थे। आचार्यश्री ने दीक्षा देने की स्वीकृति समाजजन से मांगी ऐसी सभा में श्री घुवाराजी ने कहा कि महाराज जी आप दीक्षा प्रदान कीजिए किन्तु अपने शिष्यों को निर्देश दें कि वे मंदिर, समाज, परिवार तोड़नें का कार्य न करें। आपकी सूक्ष्म बूझ और त्वरित निर्णय लेने की क्षमता अद्भुत थी।

ऐसे गौरवशाली, प्रतिभावान, समाजसेवी ही नहीं अपितु समाजोद्धारक, साधना करने वाले एक युगपुरुष के अवसान से सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक के क्षितिज से एक दैदीप्यमान सितारा लुप्त हो गया है। आपके कृतित्व को प्रेरक बनाने एवं उनकी स्मृतियों को संबल बनाने के लिए अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि–परिषद् बुलेटिन के इस अंक को श्री कपूरचन्द्र जी जैन 'घुवारा' स्मृति विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया। इसमें अनेक महानुभावों की श्रद्धांजलि संदेश प्राप्त हुए थे। जिन्हें संक्षिप्त कर दिया है। अनेक चिन्तकों, लेखकों के आलेख प्राप्त हुए जिन्हें यथा संभव दिये गये है। घुवाराजी को विनम्र श्रद्धांजलि।

अध्यक्षीय

– **डॉ. श्रेयांसकुमार जैन,** बड़ौत
अध्यक्ष–अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि–परिषद्

बुन्देलखण्ड की वसुन्धरा पर ऋषियों, मुनियों, मनीषियों और शूरवीरों का जन्म हुआ। उन्हीं में श्री कपूरचन्द्र जैन 'घुवारा' अदम्य साहसी, दृढ़ निश्चयी, पुरुषार्थवान् व्यक्तित्व थे। इन्होंने अपने पुरुषार्थ के बल पर ही अपनी विशिष्ट पहचान बनाई थी। घुवारा से छोटे गाँव में जन्में श्री कपूरचन्द्र जैन सम्पूर्ण देश में 'घुवाराजी' नाम से विख्यात हुए। माध्यमिक तक की लौकिक शिक्षा ग्रहण कर सामान्य व्यवसाय करते हुए जैन धर्म के संस्कारों के साथ राजनीति में प्रवेश करते हैं । गाँव देहात में लोकप्रियता प्राप्त कर छतरपुर जिले में धर्मनिष्ठ राजनैतिक व्यक्तित्व के धनी बने।

जैन समाज के संरक्षण के लिए कृत संकल्प थे। देव–शास्त्र–गुरुभक्त श्री कपूरचन्द्र जैन घुवारा जैसा व्यक्ति होना दुर्लभ है, जो जैन श्रावक के आचरण का नियमित पालन करते रहे। प्रतिदिन देवदर्शन, जिनपूजा, स्वाध्याय करते थे। शुद्ध भोजन, छना हुआ जल पीना उनके जीवन में हमेशा चलता रहा। चाहे वह विधानसभा के कार्यक्रमों में सम्मिलित हुए हों या सामाजिक, राजनैतिक कार्यों से देश की राजधानी में रहे। हमेशा अपने हाथ से शुद्ध भोजन तैयार कर ही ग्रहण करते थे। बाहर यात्राओं में हमेशा अपने नियमों का पालन किया। सामाजिक बड़ी–बड़ी सभाओं में भाग लेने जाते किसी की शादी या अन्य किसी भी समारोह में भाग लेने पहुँचते तो वहाँ किसी सद्गृहस्थ के यहाँ ही भोजन किया करते थे। व्यवस्था न होने पर फल खाकर ही या मात्र पानी पीकर पूरा दिन निकाल देते थे किन्तु किसी अशुद्ध वस्तु का सेवन नहीं करते थे। रात्रि भोजन के सर्वथा त्यागी थे। ऐसे संस्कारवान, राजनेता को न देखा गया, न सुना गया। उन्हीं के पदचिन्हों पर श्री पवनजी एवं सुनील जी चल रहे हैं।

घुवाराजी ने अमीर–गरीब में भेद नहीं किया। सभी के कार्यों को कराया, उन्होंने डाकुओं के आतंक को कम कराया। वे निडर थे, बेझिझक पूजा बब्बा आदि के पास पहुँच जाते थे। उन्हें धार्मिक क्षेत्रों को बचाने के लिए तथा उनसे दूर रहने की सलाह देते थे। डाकूओं ने उनके कहने पर नैनागिर, द्रोणगिरि आदि क्षेत्रों पर आने वालों को कभी नहीं लूटा। क्षेत्रों के निर्भय होने से सन्त शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के कई चातुर्मास वहाँ हुए। समाज का आना–जाना चलता रहा।

चलना ही जीवन है चाहे व्यक्ति हो या समाज, धर्म हो या राष्ट्र जो चल रहा है, समय के साथ कदम बढ़ाए जा रहा है, वह जीवित है। जहाँ अटका वहीं मृत्यु है। यदि जीवन में सफलता प्राप्त करनी है तो विश्वास प्रेम और बुद्धिपूर्वक कार्य करने की नीति घुवारा जी ने अपनाई और सफलता प्राप्त की। वे कठिन से कठिन परिस्थिति में भी धर्म और समाज का साथ देते थे । उन्होंने आचार्य श्री विरागसागर महाराज के

ऊपर हुए उपसर्ग निवारण में अहम भूमिका निभायी थी। मुनिसंघों के आहार–विहार की व्यवस्था में हमेशा बढ़–चढ़कर भाग लेते थे। उनकी प्रतिज्ञा थी कि जैन धर्म और समाज पर आंच नहीं आने देंगे। प्रतिज्ञा जीवन्त विकास का अनिवार्य अंग है किन्तु वह तभी तक है, जब उसे पूरी तरह निभाया जाय। प्रतिज्ञा लेकर तनिक–सी प्रतिकूलता आने पर उसे तोड़ देना यह प्रवृत्ति घुवाराजी की नहीं थी। प्रतिज्ञा को तोड़ देना जीवन के खोखलेपन को सूचित करता है। वे भरपूर जीवन थे उनकी नीति की आन लो और उस पर अड़े रहो। अर्थात् जो निश्चय किया उसे पूरा करो। राजनीति के क्षेत्र में इसी नीति को लेकर चले, अनेक बार सफलता हासिल न होने पर भी निराश नहीं हुए। क्षेत्रवासियों के हर असंभव कार्य को संभव बनाने वाले कर्मठ, साहसी व्यक्ति रहे हैं घुवाराजी। तभी वह कम्युनिष्ट पार्टी से भी विधानसभा में विजयी हुए और विधायक बने। उन्हें केबिनेट मंत्री का दर्जा मिला। हथकरघा विभाग को मध्य प्रदेश शासन में ऊँचाइयों पर पहुँचाया। एक जैन श्रावक के द्वारा राजनीति की काली कोठरी में बेदाग रहना अप्रतिम उदाहरण है घुवाराजी। उनके अद्‌भुत साहस की हम प्रशंसा करते हैं।

जैन तीर्थ क्षेत्रों के विकास में श्री कपूरचन्द्रजी साहब का बहुत बड़ा योगदान रहा। द्रोणगिरि क्षेत्र के अध्यक्ष रहे, वहाँ मुझे लेकर गये, वहाँ आपके अभिनन्दन ग्रन्थ की भूमिका बनाई, वह प्रकाशित हुआ। द्रोणगिरि का विशेष विकास तो करा ही है साथ में अनेक मुनिराजों, विद्वानों को वहाँ चातुर्मास कराकर और रुकवाकर जिनधर्म की महती प्रभावना की। उनकी जैन तत्वविद्या की अभिरुचि और स्वाध्याय की प्रवृत्ति के फलस्वरूप हमने उन्हें अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि परिषद का सदस्य बनाया तथा शास्त्रि–परिषद् पुरस्कार से पुरस्कृत भी किया।

सामान्यतः देखा जाता है कि मानव सिद्धि से पहिले प्रसिद्धि की कामना करता है किन्तु स्वनाम धन्य श्री घुवाराजी की यह प्रवृत्ति नहीं थी वे तो **''कार्य साधयेत वाहेदं पातयेत वा।''** कार्य की सिद्धि करें चाहे शरीर ही नष्ट हो जाये। तभी वह कार्य सफलता के साथ पूर्ण करते रहे। इसी कारण सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड उन्हें 'शेरे बुन्देलखण्ड' के नाम से पुकारता था। उनका साहस, राजनीति के मंचों और सामाजिक मंचों पर देखा जाता था। अपनी बात बड़ी निडरता से रखते थे, चाहे कितने भी विरोधी हो जायें वे कभी डरे नहीं। इसी का परिणाम है कि उन्हें आचार्यों, मुनियों, आर्यिका माताओं ने भी सम्मानित कराया। गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के विशेष कृपा पात्र रहे हैं। विद्वानों के भी अति स्नेही रहे हैं। मैंने स्वयं उनके स्नेह को प्राप्त किया। अनेकों बार मैं उनके घर पर गया, वे मेरे घर आये। इससे अधिक आत्मीयता क्या हो सकती! आत्मीय घुवाराजी को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि–परिषद् का श्रद्धांजलि बुलेटिन प्रकाशित कराकर सम्पूर्ण संस्था की ओर से श्रद्धांजलि समर्पण।

मंगल आशीर्वाद

श्री पवन कुमार जी, सुनील कुमार जी, अनिल कुमार जी घुवारा के आदरणीय पिता श्री पूर्व विधायक एवं द्रोणागिरि सिद्ध क्षेत्र कमेटी के वर्तमान अध्यक्ष धर्मानुरागी श्रीमान सेठ श्री कपूर चन्द जी घुवारा के निधन से देश, समाज और परिवार की अपूरणीय क्षति हुई है। उनके वियोग से परिवार में शोक और पीड़ा होना स्वाभाविक है फिर भी ऐसी अनहोनी को कोई टाल नहीं सकता है। श्री घुवारा जी बहुत ही धार्मिक और सामाजिक कार्यकर्ता थे। वे हमारे परम भक्त थे राजनीति में रहते हुए भी उन्होंने धर्म और गुरु भक्ति को अपने जीवन का एक अंग माना है। उनकी धार्मिक, सामाजिक सेवाओं को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता है। उनके पीछे उनका पूरा हरा–भरा परिवार है। दिवंगत आत्मा को संसार के बंधन से छुटकारा पूर्वक शीघ्र ही चिरशान्ति एवं शाश्वत मोक्ष सुख की प्राप्ति हो एवं आप सभी परिवार जनों को यह पीड़ा सहन करने की शक्ति प्राप्त हो मैं ऐसी मंगल भावना पूर्वक शुभाशीर्वाद प्रदान करता हूँ।

प्रज्ञाश्रमण सारस्वताचार्य देवनन्दि गुरुदेव
णमोकार तीर्थ ट्रस्ट परिवार और भक्त परिवार

मंगल आशीर्वाद

हमारे समाज में कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो अपने चेहरे से अपने नाम से कम अपितु अपने स्वभाव से, अपने व्यक्तित्व से, अपने व्यवहार से अधिक जाने जाते हैं। जिनके अंदर ये गुण होते हैं उस व्यक्ति के चेहरे को किसी की पहचाने की जरूरत नहीं होती है। जैसे सूर्य जब उदित होता है तो उस सूर्य को कोई नहीं जानता मगर जब उस सूर्य की किरणे चारों ओर से प्रकट होती हैं तो सभी उसको पहचान जाते हैं। कुछ इसी तरह का एक व्यक्तित्व था जिसको बचपन से पचपन के लोग जानते थे। जिससे गांव, नगर, जिला, प्रदेश ही नहीं सम्पूर्ण भारत देश गौरवान्वित था ऐसी ही बहुमुखी प्रतिभा के धनी हमारे समाज के गौरव समाजरत्न कपूरचंद्रजी घुवारा थे, जिन्होंने समाज के लिए धर्म के लिये सराहनीय कार्य किये राजनीति में भी अपने नाम का लोहा मनवाया। ऐसे व्यक्तित्व के धनी श्री कपूरचंद्र जी के लिए मेरा मंगल आशीर्वाद।

श्रमण मुनिश्री विरंजनसागर जी मुनिराज
सिद्धक्षेत्र, द्रोणगिरि

श्री कपूरचंद्र घुवारा का जीवन परिचय

जन्म स्थान	–	घुवारा, जिला–छतरपुर (म.प्र.)
वर्तमान निवास	–	टीकमगढ़ (म.प्र.)
जन्म	–	14 अगस्त 1943
माता	–	स्व. श्रीमती खेमाबाईजी
पिता	–	स्व. चौधरी सवाई सिंघई प्यारेलालजी
धर्मपत्नी	–	श्रीमती भागवती जैन
परिणय दिनांक	–	06 मई 1962,पाटन, जिला–छतरपुर (म.प्र.)
पुत्र	–	1) पवन–प्रियंका घुवारा पौत्र : अभिप्रिंस घुवारा (इंजीनियर), अभिषेक घुवारा 2) सुनील–शालिनी घुवारा पौत्र : शुभम् घुवारा (डेटा साइंटिस्ट), देवाशीष घुवारा (इंजीनियर) 3) अनिल–ममता घुवारा पौत्री एवं पौत्र : अंजली एवं अनु घुवारा
पुत्री	–	1) श्रीमती अंगूरी–प्रो. अजित जैन, रहली, सागर (म.प्र.) 2) श्रीमती रेखा–प्रो. महेन्द्र सिंघई (बरायठा), भोपाल (म.प्र.) 3) श्रीमती वंदना–आशीष शाह, दमोह (म.प्र.)
भाई	–	स्व. कोमलचन्द्र–शांतिबाई जैन (भतीजा : श्री निर्मल जैन) श्री हुकुमचन्द्र मधु–मुन्नीबाई जैन (भतीजा : डॉ. राजेन्द्र जैन, एड. जिनेन्द्र जैन)
शिक्षा	–	9वीं एवं धार्मिक शिक्षा–छहढाला, नाममाला, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, मोक्षशास्त्र
रुचि	–	जिनेन्द्र दर्शन, शुद्ध भोजन, रात्रि भोजन त्याग एवं समाज व जनता की सेवा।
अतिरिक्त ज्ञान	–	तर्क शक्ति, व्यवहारिक ज्ञान, हाजिर जवाबी, मनमोहक भाषण कला।
कार्य	–	राजनैतिक व सामाजिक कार्य, शेष समय में खेती व ज्वेलरी शॉप
राजनीति में प्रवेश	–	सन् 1962 चीनी हमले के समय राष्ट्रीय सुरक्षा कोष हेतु चंदा कर भेजा एवं भा.क.पार्टी की सदस्यता ग्रहण की।
राजनैतिक पद	–	1964 में निर्विरोध पंच, जनपद सदस्य, 1980 में 10,000 से अधिक मतों से सभी दलों की जमानत जप्त करा कर सी.पी.आई. से विधायक बनें । 2006 में बीजेपी से विधायक एवं हस्तशिल्प विकासनिगम के अध्यक्ष रहे।

देश की प्रमुख संस्थाओं की सदस्यता – अखिल भारतीय तीर्थ क्षेत्र कमेटी मुम्बई कार्यकारिणी, दिगम्बर जैन धर्म संरक्षणी महासभा लखनऊ कार्यकारिणी सदस्य, महातीर्थ ट्रस्टी, विश्व शांति परिषद् नई दिल्ली के राष्ट्रीय समिति सदस्य, भगवान महावीर जन्म जयंती समारोह म.प्र. के उपाध्यक्ष, जिला सलाहकार समिति एवं बीस सूत्रीय कमेटी, सन् 1980 से म.प्र. किसान सभा के अभी तक अध्यक्ष रहे। म. प्र. राज्य सी.पी.आई. कार्यकारिणी के सदस्य रहे हैं। पूर्व विधायक मण्डल के कार्यकारिणी सदस्य, गणेश प्रसाद वर्णी स्नातक महाविद्यालय के सन् 1984 से अध्यक्ष, सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि देवनन्दी औषधालय के अध्यक्ष, राजपुरा जिला दमोह वर्णी छात्रवृत्ति फंड के अध्यक्ष, विद्यासागर विद्यानिधि फंड के उपाध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि–परिषद्, अखिल भारतीय विद्वत् परिषद, सिद्धक्षेत्र अहारजी, पपौराजी, नवागढ़, नैनागिर, पजनारी, सिरौन जी, ललितपुर, ग्वालियर, नरवर जिला शिवपुरी आदि पचासों अन्य संस्थाओं के सदस्य, संरक्षक सदस्य या अन्य किसी न किसी स्तर पर कार्य कर संस्थाओं को सहयोग किया।

पंच कल्याणक एवं कार्यक्रम विशेषज्ञ – किसी भी कार्यक्रम पंचकल्याणक या अन्य महोत्सव कराने का आपको 45 वर्ष का अनुभव हो गया था। इस कारण देशभर में विभिन्न जगह से बुलाया जाता था। अभी तक सागर भाग्योदय में आचार्य विद्यासागर एवं आचार्य देवनन्दी के सान्निध्य में हुए पंच कल्याणक में महामंत्री एवं प्रधान, राजपुरा दमोह में अध्यक्ष, द्रोणगिर, आहारजी, घुवारा में अध्यक्ष रहकर एवं पूरे देश में सौ से अधिक कार्यक्रमों को सम्पन्न कर चुके थे।

दान लेने की कला – पूरे देश भर में आप जहाँ भी जाते थे उक्त संस्था को अपनी कला के माध्यम से लाखों का दान सहज में ही दिला देते थे।

विदाई नहीं लेना – आप जहाँ भी जाते थे विदाई स्वरूप कोई भी धन राशि नहीं लेते थे। इस कारण भी आप सभी जगह बुलाये जाते थे।

जगह–जगह सम्मान – आपको कोलकत्ता, मुम्बई, दिल्ली, बड़ागाँव खेकड़ा, कुन्थुगिरि, सोलापुर, कुन्थलगिरि, अकलूज, उस्मानाबाद, सभी महाराष्ट्र, हैदराबाद, आंध्रप्रदेश, सदलगा, कर्नाटक, गुप्तगिरि, गनौर, पानीपत, भोपाल, रीवा, सतना, सागर, पन्ना,ललितपुर, झांसी आदि सैकड़ों स्थानों पर सम्मानित किया गया।

विदेश यात्रायें– विश्वशांति सम्मेलन सन् 2000 में ग्रीक (एथेस), रोम, इटली, फ्रांस, अबुधाबी, वहरीन, दुबई, नेपाल आदि देशों की यात्रायें की।

श्री घुवाराजी को विभिन्न स्थानों से अभी तक प्राप्त सम्मान / उपाधियाँ

दिनांक	स्थान	प्रदान की गई उपाधि	उपाधि प्रदानकर्ता
12.11.2001	रीठीजिला दमोह	समाजभूषण	सकल दिगम्बर जैन समाज रीठी, जिला दमोह
22.12.2001	बड़ामलहरा	जैन रत्न	सकल दिगम्बर जैन समाज, बड़ामलहरा
2002	घुवारा	शेरे बुंदेलखंड गुरु भक्त शिरोमणि	सकल दिगम्बर जैन समाज आचार्य श्री 108 आचार्य देवनंदीजी महाराज
06.11.2007	गुरसराय झांसी	समाजरत्न	सकल दिगम्बर जैन समाज, गुरसराय झांसी
01.01.2007	शाहगढ़ जिला–सागर	गरीबों के मसीहा	गोपाल भार्गव (मुख्य अतिथि) श्रीमती कमला यादव जनपद अध्यक्ष–विकासखंड शाहगढ़
	बम्हौरी जिला–छतरपुर	विकास पुरुष	अभय कुमार फट्टा अध्यक्ष–जनपद पंचायत बकस्वाहा
08.09.2007	टीकमगढ़	बुंदेलीरत्न	दलहन तिलहन व व्यापारी संघ, टीकमगढ़ (म.प्र.) राजा पटेरिया, पूर्व मंत्री, म.प्र. शासन
21.11.2007	घुवारा	लौहपुरुष	समस्त चंदेल समाज, घुवारा क्षेत्र एवं द्वारकासिंह चंदेल एडवोकेट
	हटा, टीकमगढ़	दीनबन्धु	मधुर जन कवि कैलाश मडबैया, भोपाल दुर्गेश दीक्षित
2007	कुजवन उदगाँव महाराष्ट्र	राष्ट्र गौरव	आर.के.जैन, मुम्बई
09.01.2007	घुवारा	कर्मवीर	अधिकारी कर्मचारी, जिला स्तरीय सम्मेलन जिला–छतरपुर
	ज.पं. बड़ामल्हरा	दलितों एवं मजदूरों के मसीहा	संगीता शर्मा अध्यक्ष–जनपद पंचायत
02.09.2007	बकस्वाहा	ज्ञानश्री विश्वशांति के सजग प्रहरी	सकल दिगम्बर जैन समाज, बकस्वाहा कार्यक्रम अध्यक्ष–श्रीमती शीला दीक्षित, मुख्यमंत्री
	झांसी	बुंदलखंड केशरी	आयोजन समिति झांसी
24.05.2008	घुवारा	समाजरत्न	सकल दिगम्बर जैन समाज बारौ, छतरपुर
24.05.2008	अलंकरण समारोह घुवारा	समाजरत्न	जैन समिति म.प्र. डालचंद्र (पूर्व सांसद), दमोह, पन्ना

बुंदेलखंड के गांधी घुवाराजी

ब्र. विनोद जैन, सर्वदर्शनाचार्य, छतरपुर

सुधीजनों से अनुराग—जैन समाज का शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जो घुवारा जी को नहीं जानता हो। 1990 के आसपास मेरा प्रवास गिरार गिरी जी मैं था मैं वहां पर ग्रीष्म काल कर रहा था किसी से ज्ञात हुआ की घुवारा जी बरायठा आए हुए हैं जब उन्हें यह मालूम पड़ा कि भैया जी गिरार गिरी में विराजमान हैं तब वह गिरार गिरी क्षेत्र के दर्शन करने के लिए आए और मुझ से भी मुलाकात की। सामान्य चर्चाओं के बाद उन्होंने मुझसे कहा कि आप जिस पद पर हैं अर्थात् ब्रह्मचारी हैं तो इस पद की गरिमा रखते हुए जीवन को सार्थक करो, समाज को स्वाध्याय के प्रति प्रेरित करो और नव युवाओं में स्वाध्याय के प्रति रुझान पैदा करो, हमेशा एक बात ध्यान रखो कि छोटे पद पर रहकर बड़े कार्य करना अपने आप में महत्त्वपूर्ण है ।

जब मैं द्रोणगिरी के आश्रम में था तब कोई भी साधु—संत यदि आश्रम में आते थे तो घुवारा जी अवश्य दर्शन के लिए आते थे। गुणी—जनों के प्रति उनकी श्रद्धा अद्भुत थी, साधु सेवा के लिए समर्पित थे, **आडंबर रहित** उनका जीवन बड़ा ही सादा था । सादा वस्त्र पहनना वह उचित मानते थे धोती, बंडी, कुर्ता बस इतना ही पर्याप्त था उनके लिए। प्रातः जल्दी से उठना द्रोणागिरी क्षेत्र में जो भी कार्य हो उन कार्यों में संलग्न हो जाना और जब तक वह कार्य पूर्ण ना हो जाए तब तक कार्यकर्ताओं के साथ स्वयं लगे रहना उस कार्य को करने की प्रेरणा करना यह उनका जीवन था। कई बार आश्रम में उनके साथ मेरा भोजन हुआ साधारण भोजन करते थे हमेशा कुछ सामग्री भी अपने पास रखते थे जिससे यदि कहीं जाना पड़े तो भोजन की वजह से परेशान ना हों, घर का ही भोजन और शुद्ध भोजन पसंद था गरिष्ठ भोजन का वह परहेज करते थे।

सहज उपलब्धता—एक बार की बात है जबलपुर में ब्रह्मचारी प्रदीप भैया जी ने कोई एक आयोजन किया था। एकाएक रात को ऐसा विचार बना कि घुवारा जी को बुलाना चाहिए। भैया जी ने उन्हें फोन लगाया और उनसे कहा कि सुबह प्रोग्राम है क्या आप आ सकते हैं? वार्ता के दौरान उन्होंने कहा समय तो कम है लेकिन मैं प्रयास करूंगा अगर मेरी उपस्थिति से समाज को लाभ होता है तो मैं अवश्य आऊंगा। इस तरह वार्ता के पश्चात घुवारा जी स्वयं ही बस के द्वारा प्रातः जबलपुर आ गए कोई वाहन की उपलब्धता उनके लिए नहीं कराई गई, रास्ता में सरलता से परेशानियों का सामना करते हुए वह जबलपुर पहुंच गए यह भी उनकी सहज उपलब्धता थी । बुंदेलखंड में कहीं भी प्रोग्राम हो कोई भी आयोजन हो वे सहज रूप से वहां पहुंच जाते। यदि समाज के लिए कुछ धन संग्रह की आवश्यकता हो तो माइक पर खड़े होकर निर्भीक भाव से लोगों को प्रेरित करते थे और थोड़ी ही देर में सहज रूप से क्षेत्रों के लिए धन संग्रह हो जाता था उनके जीवन का लक्ष्य समाज सेवा था।

सेवा ही जीवन है। उनका लक्ष्य था, परिवार और धन के प्रति उदासीनता थी इसलिए निरंतर ही समाज के कार्यों में ही अपना समय व्यतीत करते थे। बुंदेलखंड के क्षेत्रों के विकास में कहीं भी आयोजन हो आप पहुंच जाते थे और बिना किसी लाग लपेट के अपनी बात को एक ऐसे लहजे से प्रस्तुत करते थे जिससे लोग उनके अभिप्राय को समझ सकें निरंतर उन्होंने समाज की सेवा की इसीलिए उन्हें समाज ने विधायक के साथ–साथ मंत्री पद पर रहने का भी अवसर दिया। चुनाव जीतकर उन्होंने यह स्थापित किया था कि इस सेवा से समाज में एक बड़ा स्थान बनाया जा सकता है और विकास के जो कार्य हैं वह किए जा सकते हैं। धन संग्रह नहीं, जन संग्रह में रुचि थी। सामान्य लोगों को जोड़ना और उनसे समाज हित के कार्य करवाना यह उनमें मैंने भली बात देखी।

चलना ही उनका जीवन–जब भी मैंने उनके बारे में सुना तो ज्ञात हुआ घुवारा जी घर पर नहीं हैं, कहां गए हैं तो मालूम हुआ हस्तिनापुर गए हैं अथवा द्रोणगिर गए हैं अथवा अन्य क्षेत्र पर गए हैं। वाह क्या जीवन था कोई पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हो अथवा सिद्धचक्र विधान हो अथवा कोई संगोष्ठी और सेमिनार हो वे निश्चित रूप से वहां पहुंच जाते थे। ऐसा कभी भी ज्ञात ना हुआ कि जीवन के किसी अन्य कार्यों में हूँ, व्यस्त हूँ, व्यापार में लगे हों और धार्मिक कार्यक्रम में उपस्थित ना हुए हो समाज का कोई भी कार्यक्रम क्यों ना हो वहां उन्हें अवश्य उपस्थित होना होता था। चलना ही उनका जीवन था आज यहां तो कल वहां। शरीर की सुविधाओं को ना देखते हुए भी वह निरंतर सक्रिय बने ही रहते थे। धन की कमी उनके पास थी नहीं यदि वे चाहते तो बहुत से कार्य घर बैठे ही कर सकते थे लेकिन नहीं स्थान पर पहुंच कर ही स्थान की गरिमा बढ़ाते थे और कार्य को पूर्ण करवाते थे।

श्री कपूरचंद्र घुवारा जी की, अद्भुत अतुल्य निशानी थी ।
हुए लीन जो चिर निद्रा में, उनकी अलग कहानी थी ।।
बुंदेलखंड के शेरे बुन्देली, सरल सहज जीवंत हृदय की ।
अनुपम अलग निशानी थी, उनकी अलग कहानी थी ।।
रहे विधायक सात्विक जीवन, प्रज्ञा प्रखर तो सुहानी थी ।
कभी किसी से हार ना मानी थी, उनकी अलग कहानी थी ।।
क्षेत्र विकास अंत डाकुओं का, लड़े हमेशा पर ड़रे कभी ना ।
यही बात सबने तो जानी थी, उनकी अलग कहानी थी ।।

डॉ. निर्मल शास्त्री

अनुकरणीय व्यक्तित्व : घुवाराजी

डॉ. शीतलचन्द जैन, जयपुर
पूर्व प्राचार्य, श्री दिग. जैन आ.सं.कॉलेज, जयपुर

समाज में ऐसे व्यक्ति विरले ही होते हैं जो अपने कार्यों के माध्यम से अनुकरणीय बन जाते हैं। आदरणीय कपूरचन्द्रजी घुवारा, उन विरले व्यक्तियों में ही हैं जिन्होंने अपने कार्यों से समाज को उपकृत किया है। आपने जहां एक ओर देश की सम्पूर्ण जैन समाज को मार्गदर्शन दिया है वहीं दूसरी ओर विधानसभा में कुशल नेतृत्व द्वारा प्रदेश को प्रगति के ऊँचे आयाम दिये हैं। आपने सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरी का विकास करके इस क्षेत्र की कायापलट कर दी जिससे इस क्षेत्र ने लघु सम्मेदशिखर के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। एक ऐसा समय था जब लोग द्रोणगिर जाने में डाकुओं से भयभीत होते थे परन्तु आपके जुझारु व्यक्तित्व ने उनसे संघर्ष करके दर्शनार्थियों को निर्भय बना दिया जो जैन समाज के लिये इस क्षेत्र के विकास में अविस्मरणीय योगदान है। आपने घुवारा में महाविद्यालय की स्थापना करके शिक्षा के क्षेत्र में महनीय योगदान दिया है। घुवाराजी की चर्या से भी मैं बहुत अधिक प्रभावित था। आप राजनेता होते हुए भी अपनी चर्या में शिथिलता कभी नहीं लाये। मैंने आपके साथ अनेक बार भोजन किया है तब मैंने देखा अपने फल इत्यादि वे स्वयं ही बनाया करते थे। अधिवेशन आदि में तो वे स्वयं ही अपनी चर्या के अनुकूल शुद्ध भोजन की व्यवस्था करते थे।

मैंने एक बार पूछा कि सामाजिक समारोहों में जब भी आप पधारते हैं तो आप फल इत्यादि साथ में क्यों लाते हैं, इस पर उनका उत्तर था कि मैं जैसी शुद्धता चाहता हूँ उस प्रकार की शुद्धता समारोह में संभव नहीं है। अतः मैं स्वयं अपनी व्यवस्था साथ में करके लाता हूँ। इसी प्रकार वे शुद्ध जल भी अपने साथ में रखा करते थे। ऐसी चर्या को देखकर मैंने कहा कि आप राजनेता हैं तो विधान सभा के सत्र के मध्य आप चर्या का पालन कैसे करते होंगे तो उन्होंने कहा धर्मपूर्वक राजनीति का पालन किया जाये तो वह राजनीति ज्यादा सफल होती है क्योंकि राजनीति और धर्म में किसी प्रकार का विरोध नहीं है।

सामाजिक संगठन के लिये उनके विचार थे कि यदि आगे के युवा–युवतियों को संस्कार देना है तो समाज का संगठन बहुत आवश्यक है, यही कारण है गोलापूर्व महासभा के लिये उनका निर्देशन / मार्गदर्शन बहुत ही महत्त्वपूर्ण हुआ करता था। आप इतने विनम्र और सरल थे कि जब भी कोई व्यक्ति आपसे मिलता था तो यह अनुभव नहीं करता था कि मैं विधायक / मंत्री से मिल रहा हूँ अपितु अपने समाज के व्यक्ति से मिल रहा हूँ और मिलने वाले से उनका व्यवहार परिवार जैसा हुआ करता था।

मैंने कई अवसरों पर देखा कि उनके हृदय में गरीब–अमीर का कोई भेद नहीं था। सन् 1997 में जब श्रमण संस्कृति संख्यान, सांगानेर का प्रारम्भ होना था तो मैंने आपसे चर्चा की थी कि छात्रों का प्रथम चयन शिविर सिद्धक्षेत्र द्रोणगिर में ही रखने का विचार है तो आपने कहा कि हमारा यह सौभाग्य होगा कि छात्रों का एवं अभिभावकों का आतिथ्य सत्कार करने का अवसर प्राप्त होगा। तब मैंने कहा कि इसमें अभिभावक और छात्र मिलकर करीब 300 व्यक्तियों की उपस्थिति का अनुमान है जिसका व्यय भार संस्थान ही वहन करेगा तब आपने कहा कि इस शिविर का व्यय भार तो हम ही वहन करेंगे तभी हमारे द्वारा आतिथ्य सत्कार कहलायेगा। आपने बड़े उत्साह और कर्मठता से इस कार्य को देखा और सफलता पूर्वक सम्पन्न कराके गौरवान्वित अनुभव किया। ऐसे अनुकरणीय व्यक्तित्व अपने कार्यों से इतिहास में अमर हो जाते हैं। अतः घुवाराजी के कार्यों को समाज हमेशा स्मरण में रखेगी और उनके कार्यों से शिक्षा लेती रहेगी, ऐसी हमारी भावना है।

सिद्धांतवादी व्यक्तित्व के धनी श्री कपूरचंद घुवारा

डॉ. महेंद्र सिंघई
प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग
उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल

आज श्री कपूरचंद घुवारा हमारे बीच नहीं रहे लेकिन उनके सिद्धांत एवं आदर्श हम सभी के बीच हमेशा चिरस्थाई रहेंगे। मैं आज बड़े ही गर्व के साथ कह सकता हूँ कि उन्होंने अपना जीवन अपने सिद्धांतों के बल पर हमेशा जिया है, विपरीत परिस्थितियों में भी उन्होंने कभी भी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। ऐसा स्वभाव विरले व्यक्तित्व में ही होता है। आज मैं कुछ बातें उनकी, जो मुझे खास लगीं, आपके साथ शेयर कर रहा हूँ। निश्चित रूप से इनसे हम सभी को प्रेरणा मिलेगी और हम अपने जीवन को भी एक आदर्श मार्ग पर ले जा सकेंगे। 2006 में जब उन्होंने पार्टी बदलकर बड़ामलहरा विधानसभा क्षेत्र से विधायक का उप चुनाव लड़ा तो पार्टी बदलते समय वह बड़े ही कशमकश स्थिति में थे। हम सभी लोगों का उनके ऊपर दबाव था कि अभी तक आप जिस पार्टी में रहे हैं उसमें रहकर आप अपने विधानसभा क्षेत्र का सही तरीके से विकास नहीं कर पाएंगे एवं आप अपने कार्यकर्ताओं का, जो हमेशा आपके लिए समर्पित रहे हैं, उनकी भी कोई सहायता नहीं कर पाएंगे।

हम चाहते हैं कि आप अपने सिद्धांतों के अनुसार पार्टी को बदलकर चुनाव लड़ें। उन्होंने पार्टी को बदला लेकिन कभी भी अपने सिद्धांतों से वह विपरीत दिशा में नहीं गए। सत्तारूढ़ पार्टी में रहते हुए भी उन्होंने गलत नीतियों का खुले मंच पर विरोध भी किया। उन्होंने अपना पूरा जीवन समाज एवं क्षेत्र के विकास में लगा दिया। 18 – 18 घंटे उन्होंने कार्य किया। उनके मन में एक ही बात रहती थी कि क्षेत्र का विकास कैसे किया जाए। जब मेरा स्थानांतरण भोपाल हुआ तो अनेक बार मुझे उनके साथ बड़े–बड़े अधिकारियों एवं मंत्रियों के साथ मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। वल्लभ भवन हो, सतपुड़ा भवन हो, विंध्याचल भवन हो या अन्य कोई शासकीय कार्यालय हो, वह कई बार मुझे अपने साथ ले गए। उनके हाथ में कार्यों की एक लिस्ट होती कि हमें आज किन–किन अधिकारियों से क्षेत्र की समस्याओं पर चर्चा करनी है।

एक घटना में आपके सामने जिक्र कर रहा हूँ, वल्लभ भवन में, मैं उनके साथ मुख्यमंत्री सचिवालय में बैठा था, उनके हाथ में अपने क्षेत्र की समस्याओं की लंबी चौड़ी लिस्ट थी और उन्होंने वो लिस्ट मुख्यमंत्री के सचिव को दी, मुख्यमंत्री के सचिव ने बहुत ही सहज भाव से घुवारा जी से पूछा कि, जब भी आप मुझसे मिलने आते हैं, केवल अपने क्षेत्र के विकास एवं वहां की समस्याओं के बारे में मुझसे चर्चा करते हैं, कभी भी आप अपनी व्यक्तिगत समस्याओं को लेकर मेरे पास नहीं आए ना ही कोई आपने अपने रिश्तेदारों या परिचितों के काम के लिए कहा, उस समय घुवारा जी ने कहा कि सर, विधानसभा क्षेत्र ही मेरा मंदिर है उसकी पूजा करना मेरा धर्म है। मेरा एक ही लक्ष्य है कि बुंदेलखंड क्षेत्र में मेरा विधानसभा

क्षेत्र अति पिछड़े इलाकों में आता है, इसलिए मेरा यह दायित्व कि मैं अपने क्षेत्र के विकास के बारे में चिंतन करूं। सचिव महोदय ने कहा की घुवारा जी आप धन्य हैं, अगर विधायकों की यही सोच रही तो निश्चित रूप से स्वर्णिम म.प्र. का निर्माण होगा।

यहां पर इस बात का उल्लेख करना मुझे इसलिए जरूरी लगा की ऐसी बातों से हम भी प्रेरणा लें और समाज, देश, प्रदेश के विकास में सहभागी बने। राजनीति के साथ–साथ उन्होंने हमेशा पारिवारिक, धार्मिक और सामाजिक दायित्वों का भी भली–भांति निर्वहन किया। परिवार में जब भी वह बैठते थे, छोटे बच्चों से उतनी ही गंभीरता से वह बात करते थे जितनी बड़ों से करते हैं। सभी के सुख–दुःख में हमेशा साथ रहते थे। हर कार्यक्रम में उनकी उपस्थिति रहती थी। सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक कार्यक्रमों में संलग्न रहने के बावजूद कभी भी उनकी दैनिक दिनचर्या प्रभावित नहीं होती थी। वक्त पर उठना, भोजन एवं धार्मिक क्रियाओं को करना, यह उनकी दिनचर्या में हमेशा शामिल होता था। सबसे बड़ी उनकी जो विशेषता ने मुझे प्रभावित किया वह उनका स्वयं का आत्मविश्वास और स्वयं का मजबूत आत्म बल रहा है। कभी भी वह समस्याओं से घबराए नहीं। उनके मन में कभी भी भय और डर नहीं रहा। कई मौकों पर वह मुझसे सलाह भी लेते थे और मेरे द्वारा दी गई सलाह का वो पालन भी करते थे। यहां पर एक बात का जरूर उल्लेख करना चाहता हूं की मेरी सासू मां श्रीमती भागवती देवी ने जिस तन–मन–धन से संपूर्ण जीवन में उनकी सेवा की वह अकल्पनीय है। पग– पग पर उन्होंने उनका साथ दिया। कभी भी पारिवारिक समस्याओं में घुवारा जी को संलग्न नहीं होने दिया। पूरे पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन उन्होंने पूरे मनोयोग से किया। अंत तक वह उनकी सेवा पूर्ण तन–मन–धन से करती रहीं। यद्यपि भोपाल में उनको सरकारी आवास आवंटित था लेकिन अधिकांश समय उनका रुकना मेरे घर पर ही होता था। मेरी धर्मपत्नी श्रीमती रेखा एवं मेरे दोनों बच्चे इंजी. रोही और इंजी. नयन को हमेशा उनका स्नेह मिलता रहा, जब भी वह भोपाल आते थे तो हमारे बच्चों के साथ पर्याप्त समय व्यतीत करते थे। उनके विचारों को सुनते थे। उनके अनुभवों को सुनते थे। कई मन की जिज्ञासाओं को वह हमारे बच्चों के सामने रखते थे और उनके द्वारा दिए गए उत्तरों का वह समर्थन भी करते थे।

आज हमारे बीच ऐसे महान व्यक्तित्व के धनी श्री घुवारा जी नहीं रहे। लेकिन मैं ऐसा मानता हूं की उनके द्वारा दिए गए आदर्श आज भी प्रासंगिक हैं और यदि हम सभी मिलकर उनके आदर्शों को थोड़ा भी अपना सके तो निश्चित रूप से उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

शताधिक संघर्षो में सफल घुवारा जी को अंतिम प्रणाम

सुरेश जैन (आई.ए.एस.)
30, निशात कॉलोनी, भोपाल, म.प्र. 462 003

1. देश की स्वतंत्रता के दो वर्ष पूर्व 1943 में जन्में घुवारा जी 21 अप्रैल, 2021 को अपनी 78 वर्ष की आयु में हम सबसे विदा लेकर चले गए। उन्होंने अपने जीवनकाल में राजनैतिक, सामाजिक और पारिवारिक क्षेत्रों में चतुर्मुखी सफलता प्राप्त की। अपने क्षेत्र के दूर से दूर स्थित ग्राम के छोटे से छोटे व्यक्ति के सुख–दुःख में स्वेच्छापूर्वक अपनी सहभागिता प्रदान की। द्रोणागिरि तीर्थ को नई ऊँचाई प्रदान की।
2. छतरपुर जिले के छोटे से नगर घुवारा के निवासी कपूरचन्द्र जी ने अपने सोने–चाँदी के व्यापार के साथ–साथ राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश किया। उन्होंने भले ही उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं की, वर्णी जी की संस्थाओं में अध्ययन नहीं किया किन्तु अपने घुवारा नगर में गणेश प्रसाद वर्णी महाविद्यालय का सफलतापूर्वक संस्थापन और संचालन किया। वे घुवारा से टीकमगढ़ जाकर अवश्य बस गए किन्तु उनका मन घुवारा को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हो सका। उन्होंने घुवारा को अपने नाम के साथ जोड़ लिया। वे घुवारा जी के नाम से प्रसिद्ध हो गए।
3. बीसवीं शताब्दी के अंतिम तीन दशकों और इक्कीसवीं शताब्दी के प्रथम दो दशकों में उन्होंने विशेषतः छतरपुर और टीकमगढ़ जिलों के दूरस्थ एवं पहुँच विहीन क्षेत्रों में अनेकों बार स्वयं पहुँचकर जन–जन की भरपूर सेवा की। मृत्यु के अंतिम दिनों में भी वे उत्साहपूर्वक द्रोणागिरि के कार्यक्रमों में उत्साह पूर्वक सम्मिलित होते रहें। इन पाँचों दशाब्दियों में वे राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक आकाश में सितारे की भांति सर्वत्र चमकते रहे। बीसवीं शताब्दी के अंत तक अपनी द्विचक्रवाहिनी और इक्कीसवीं शताब्दि में जीप से छोटे से छोटे ग्राम में जाकर अनुसूचित जाति, जनजाति और पिछड़ी जाति के सदस्यों की सेवा करते रहे किन्तु उन्होंने किसी के घर जाकर पानी भी नहीं पिया। भोजन नहीं किया। सुरक्षा गार्ड को अपने घर में सुलाते रहे और उसे अपनी पत्नि, बहुओं और बेटियों के हाथ का भोजन कराते रहे। उन्होंने अपने जीवन में पूरी ईमानदारी और चारित्रिक निष्ठा के सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत किए। जेलों में रहते हुए स्वपाकी बने रहे।
4. विधानसभा में उनके शब्द बाणों से सरकार अनेक अवसरों पर विचलित होती रही और उन्हें मंत्री परिषद में स्थान ग्रहण करने के लिए आमंत्रित करती रही किन्तु वे सदैव अपने सिद्धांतों के कारण तत्कालीन मुख्यमंत्री जी का आमंत्रण और अपने मित्रों की सलाह ठुकराते रहे। विधानसभा के अन्य सभी सदस्यों के साथ सरकार ने उन्हें सस्ती दरों पर घर आबंटित किया। उन्होंने अत्यधिक संकोच करते–करते घर ले लिया किन्तु भोपाल उन्हें आकर्षित नहीं कर पाया। उन्होंने अपने परिवार के

किसी भी सदस्य को अपने उत्कर्ष के काल में राजनैतिक लाभ नहीं लेने दिया। भोपाल में बसने नहीं दिया।

5. आपने साहस, परिश्रम और निर्भयता के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए। गाय और बकरी के साथ बैठकर भगवान महावीर के शेर की शक्तियों और समन्वय के सद्‌गुणों को साकार और सार्थक किया। महावीर के दीन–हीन शिष्यों के समक्ष महावीरत्व के अनेक ठोस उदाहरण प्रस्तुत किये। दबंगों द्वारा जब हरदास और पुनौआ चढ़ार की नाक काट ली गई तो घुवारा जी ने उन्हें रूस भेजकर उन दोनों की नाक जुड़वाई।

6. घुवारा जी अपने विधानसभा क्षेत्र में चिकित्सालय स्थापित कराने के लिए सात वर्षों तक बिना चप्पल के नंगे पैर घूमते–घूमते सरकार से संघर्ष करते रहे। अच्छा हुआ कि मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय श्री शिवराज सिंह जी चुनाव प्रचार करते हुए द्रोणागिरि तीर्थ क्षेत्र पर पधारे। रात्रि में विश्राम किया। उन्होंने निकट से घुवारा जी के अवदान को जाना और परखा। उनसे ध्यानपूर्वक क्षेत्र की समस्याऐ सुनी और घुवारा, किशनगढ़, बड़ामलहरा और बकस्वाहा में चिकित्सालय स्थापित करने की घोषणा कर घुवारा जी को जूते पहिनने के लिए प्रेरित किया। घुवारा जी ने घुवारा नगर में चिकित्सालय बन जाने पर खुशी पूर्वक जूते पहन लिए।

7. श्री कपूरचन्द्र जी ने देश के सुप्रसिद्ध संतों को विशेषतः द्रोणागिरि तथा सामान्यतः पूरे बुन्देलखण्ड के तीर्थ क्षेत्रों पर आमंत्रित किया। सफलतापूर्वक उनके चातुर्मास कराऐ। देश के कोने–कोने में आयोजित उनके चातुर्मास में स्वयं पहुँचकर उनकी सेवा सुश्रुषा की। घुवारा जी ने द्रोणागिरि तीर्थ ही नहीं अपितु पूरे बुन्देलखण्ड के नैनागिरि जैसे प्राचीनतम तीर्थों को नई ऊर्जा प्रदान की। हिमालयीन ऊँचाई दी। यह चिंताजनक है कि बुन्देलखण्ड में अतिथि सत्कार की यह परम्परा अब घटती–सी जा रही है और जीवन के शाश्वत मानवीय मूल्यों को विखण्डित करती जा रही है।

8. हमारे समधी घुवारा जी और समधिन श्रीमती भगवती बाई की सहजता, सरलता और कर्मठता अत्यधिक सराहनीय और अनुकरणीय है। उनकी आतिथ्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति श्लाघनीय और प्रशंसनीय है। वे अपने घर पर हमें और हमारे मित्रों को आग्रहपूर्वक आमंत्रित कर बुन्देली व्यंजन स्वयं परोसकर खिलाते रहे और पुनः पधारने के लिए प्रेरित करते रहे। हमारे संकेत और अल्प सूचना पर वे हमारे सभी पारिवारिक और सामाजिक कार्यों में पधारते रहे।

9. भगवान से प्रार्थना है कि श्री घुवारा जी की आत्मा को शांतिलाभ हो। सद्‌गति प्राप्त हो। वे अपनी कपूर मिश्रित स्मृतियों से अपने आत्मीयजनों के श्वास–प्रश्वास को स्वस्थ एवं सुवासित बनाए रखें। उनके बृहद् परिवार के सभी सदस्यों – उनकी पत्नि श्रीमती भागवती बाई, उनकी बेटी रेखा और उनकी दोनों बहिनें तथा उनके तीनों पुत्र – पवन जी, सुनील जी और अनिल जी से अपेक्षा है कि वे श्रद्धेय घुवारा जी के चरण चिन्हों पर चलते हुए अपने प्रदेश, देश और तीर्थों की सेवा करते रहें। स्वस्थ और प्रसन्न रहते हुए सदैव घुवारा जी के परोपकारी पथ पर आगे बढ़ते रहें।

श्री कूपरचंदजी जैन 'घुवारा'

– **न्यायमूर्ति विमला जैन,** भोपाल

श्री कपूरचन्द्र जी घुवारा हमारे समधी साहब थे। उनके निधन से हम सभी बहुत दुःखी हैं। कोरोना काल से उत्पन्न अत्यधिक कष्टपूर्ण परिस्थितियों में हम सभी ने समाज के श्रेष्ठी, समाज के हितचिंतक, कर्मयोगी, सुप्रसिद्ध शीर्ष पुरुष श्री कपूरचन्द्र जी घुवारा को श्रद्धांजलि दी है। यह सचमुच दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है। ऐसा लगता है समाज पर विपत्तियों का पहाड़ टूट रहा है। कहते हैं उस रास्ते पर मत चलो जो पहले से बना है। वहाँ चलो जहाँ कोई नहीं चला। ऐसा ही श्री घुवारा जी ने किया। स्वयं रास्ता बनाया जिस पर आपने एक नई शुरूआत की ओर बहुत कुछ सफलता भी अर्जित की। आप कुशल राजनीतिज्ञ एवं ओजस्वी वक्ता थे। अपने विचार बहुत दृढ़ता से रखते। सामने वाले को सोचने पर मजबूर अवश्य करते। आपने धर्म के नियमों का पालन सरकारी नियमों से ऊँचा समझा। आप स्वाभिमानी तो थे ही यह गुण आवश्यक भी है। आप इस बात पर विश्वास रखते थे कि जीने के लिए व्यक्ति में थोड़ा–सा गुरूर जरूरी है। ज्यादा झुक के मिलों तो दुनिया पीठ को पायदान बना लेती है।

श्री घुवारा जी न तो अंधविश्वासी थे न ही भाग्यवादी। आपने पल–पल संघर्ष और पग–पग सफलता पाई। मुसीबतें सभी पर आती हैं। कोई निखर जाता है तो कोई विखर जाता है। आप मुसीबतों के बाद निखर कर सामने आए। आपने नफा–नुकसान में हमेशा समता रखी। समाज के प्रत्येक वर्ग की सहायता में आपका अमूल्य योगदान रहा। मैंने टीकमगढ़ में जिला जज की पदस्थापना के दौरान उनके कार्यों को निकटता से देखा। आपने जो समाज, परिवार एवं परिजनों को दिया वह अतुलनीय है। आपने रिश्तेदारों को हमेशा अहमियत दी क्योंकि सुन्दरता से बढ़कर चरित्र है। प्रेम से बढ़कर त्याग है। दौलत से बढ़कर मानवता है परन्तु सुन्दर रिश्तों से बढ़कर इस दुनिया में कुछ भी नहीं। समाज आपका ऋणी रहेगा। समर्पित जीवन आदर्शों के लिए नई पीढ़ी को आप प्रेरणास्रोत रहेंगे। आपके पुत्र एवं पुत्रियाँ आपके द्वारा दिए गये सद्कार्यो को आगे बढ़ाने में रुचि ले रहे हैं। यह प्रशंसनीय है।

आपको शत्–शत् नमन करते हुए श्रद्धा–सुमन अर्पित करती हूँ।

श्रद्धा–सुमन

–**जे. के. जैन,** आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त)
पूर्व कमिश्नर, सागर संभाग (म.प्र.)

स्व. श्री कपूर चन्द घुवारा जी, पूर्व विधायक, अध्यक्ष द्रोणगिरि ट्रस्ट, बुन्देलखण्ड क्षेत्र के एक महत्वपूर्ण स्तम्भ थे। उनका बहुमुखी व्यक्तित्व ऐसा रहा कि हर क्षेत्र में उन्होंने अपना लोहा मनवाया। **'शेरे–बुन्देलखण्ड'** के नाम को सार्थक करते हुए लाभ– हानि का विचार किये बिना हमेशा सही बात के लिये अड़े रहे। उन्होंने कभी अपने मूल्यों से समझौता नहीं किया तथा राजनीति में विधायक व मंत्री दर्जा प्राप्त उच्च पदासीन रहकर भी एक बेदाग छवि बनाये रखी।अपनी इस ईमानदार व दृढ़ छवि के कारण **'लौह पुरुष'** कहे जाने लगे। राजनीति के साथ ही धर्म के क्षेत्र में अग्रणी रहे। सम्पूर्ण देश में विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थाओं के पदाधिकारी तो रहे ही, साथ में पंचकल्याणकों में विशेष रूप से आमंत्रित रहकर सक्रियता से दायित्व सम्पन्न किये। धार्मिक कार्यों हेतु दान प्राप्ति के लिये प्रसिद्ध रहे व प्रचुर दान दिलवाया। जैन आचार्यों के अनन्य समर्पित भक्त होने के कारण **'गुरुभक्त शिरोमणि'** की उपाधि से सुशोभित हुए। कृषकों, श्रमिकों व सामान्य जन के हितार्थ कार्यों में बढ़–चढ़कर भागीदारी निभाते हुए 'गरीबों के मसीहा' व **'दीनबन्धु'** कहलाए।

उनके जाने से जैन समाज ने एक पितृ पुरुष को खोया है। साथ ही स्थानीय क्षेत्रवासियों, कृषकों, श्रमिकों ने अपने बीच के एक पारिवारिक सदस्य को खोया है जो सदैव उनके सुख– दुःख का भागीदार रहा। ऐसे राजनीति में सन्त पुरूष, धर्मप्राण, समाजसेवी, परोपकारी, भव्य जीवात्मा को विनम्र अश्रुपूरित श्रद्धांजलि, उनकी स्मृति को श्रद्धापूर्वक नमन।

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन शास्त्रिपरिषद् की कार्यकारिणी समिति की बैठक डॉ. श्रेयांस कुमार जैन–बड़ौत की अध्यक्षता में दिनांक 31 मई 2021 को **जूम एप** पर संपन्न हुई जिसमें उपाध्यक्ष–डॉ. वृषभप्रसाद जैन, महामंत्री–ब्रह्मचारी जय कुमार निशांत, संयुक्त मंत्री–पंडित विनोद कुमार जैन रजवास एवं डॉ कमलेश कुमार जैन–जयपुर, कोषाध्यक्ष पंडित पं सुखमालचन्द्र जैन–सहारनपुर, प्रचार मंत्री डॉ. अमित कुमार जैन आकाश–वाराणसी, कार्यकारिणी सदस्य डॉ. कमल कुमार जैन पुणे, डॉ. सुनील कुमार जैन संचय ललितपुर, डॉ. आशीष जैन शास्त्री सागर, पं जयंत कुमार जैन सीकर, डॉ. धर्मेंद्र कुमार जैन–दिल्ली, पंडित राजकुमार शास्त्री–सागर, पं. कमल कुमार जैन कमलांकुर–भोपाल, पंडित चंद्र प्रकाश जैन चंदर–ग्वालियर, एवं विशेष आमंत्रित डॉ. अनुपम जी जैन–इंदौर आदि उपस्थित हुए। जिसमें अनेक प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए।

श्रद्धा–सुमन

–**डॉ. कुलदीप जैन,** न्यायाधीश
डी–4, न्यायाधीश निवास
सिटी सेन्टर, ग्वालियर (म.प्र.)

स्वर्गीय कपूरचंदजी घुवारा पूर्व विधायक, पूर्व मंत्री मध्यप्रदेश में बुंदेलखण्ड को राष्ट्रीय स्तर की ख्याति और प्रतिष्ठा का पर्याय बनाने वाले जागरूक समाजसेवी और धर्मनिष्ठ एवं राजनैतिक व्यक्ति थे, उनके जीवन पर और उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर शास्त्रि–परिषद् द्वारा बुलेटिन के प्रकाशन का निर्णय लिया गया है, इसके लिये वह साधुवाद के पात्र हैं। मैं इस महामानव श्री घुवारा जी को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए अपनी बात प्रारंभ करता हूँ। आदरणीय श्री कपूरचन्द घुवारा जी भारत के जैन धर्मावलम्बी संस्थाओं के संरक्षक और मार्गदर्शक होकर, श्री घुवारा जी धर्म शास्त्रीय, कर्मनिष्ठा, अद्भुत अनुभव एवं कल्याणकारी दृष्टि से सम्पन्न होकर उनकी सोच व्यापक थी एवं उनके द्वारा सिद्ध क्षेत्र द्रोणागिरी सहित अनेक तीर्थ क्षेत्रों के जीर्णोद्धार एवं सरंक्षण का कार्य किया। साथ ही एक सामाजिक व्यक्तित्व होकर समाज के अंतिम छोर पर ठहरे हुए व्यक्तियों की सहायता एवं उनके जीवन उत्थान किस तरह हो ऐसा लगातार प्रयास किया।

एक राजनेता के रूप में आदरणीय श्री घुवाराजी, जहाँ तक मुझे जानकारी है वर्ष 1980 से उनका जो राजनैतिक कॅरियर प्रारंभ हुआ वह उनके अवसान वर्ष 2021 तक और उससे कुछ समय पूर्व जबकि वह अस्वस्थ नहीं थे, उन्होंने लगातार जिन–जिन पदों को धारण किया उनके लिये जो कर्त्तव्य थे, उनका उचित तरीके से निर्वाह करते हुए एक सफल राजनेता का कार्यकाल उनका रहा है। एक धार्मिक व्यक्ति के रूप में आदरणीय घुवाराजी एक संस्कारवान व्यक्ति होकर उन्होंने एक जैन श्रावक की जो–जो महत्त्वपूर्ण योग्यताएं और कार्य पद्धति होती हैं वह अपने जीवन में धारण करते हुए अनेक साधु–संतों की चर्या और उनके प्रवास में पूर्ण सहयोग किया।

आदरणीय घुवारा जी जैन समाज को एकीकरण के सूत्र में बांधने के लिये कृतसंकल्प थे और उन्होंने अपने पूरे जीवन में इस हेतु लगातार प्रयास किया। आदरणीय घुवाराजी विपरीत परिस्थितियों में भी गंभीर संबल एवं धैर्य रखते थे और उन्होंने सामाजिक समरसता एवं सेवा भावना से प्रत्येक स्तर पर चाहे सामाजिक हो, चाहे राजनैतिक हो, चाहे धार्मिक हो, कार्य करते हुए अपनी यशकीर्ति एवं लोकप्रियता को देश विदेश में पहुंचाया है।

मेरा आदरणीय घुवाराजी से परिचय वर्ष 2009 में बुंदेलखण्ड यात्रा के दौरान सिद्ध क्षेत्र द्रोणागिरी पर आदरणीय मंत्री जी श्री भागचन्दजी के माध्यम से हुआ था और उसके बाद लगातार उनका सान्निध्य और सहयोग मुझे मिलता रहा, उनका इतना विशाल व्यक्तित्व और कृतित्व रहा है, जिसे शब्दों में बांधा जाना बहुत मुश्किल है और इस समय पर मेरी यही कामना है कि आदरणीय घुवाराजी द्वारा अपने जीवन में जो–जो सत्कार्य किये हैं, उनकी परणति स्वरूप उन्हें अंतिम सत्य मोक्ष प्राप्त हो। शास्त्रि–परिषद् को इस बुलेटिन के प्रकाशन के लिये मेरी ओर से शुभकामनाओं सहित।

पुण्यशाली–जैनकुलीन, राजनैतिक पुरोधा, सबके दिलों में राज करने वाले, धर्म–गुरु–समाजसेवी श्री कपूरचंदजी घुवारा (संस्करणात्मक सादर श्रद्धासुमन समर्पित)

प्रस्तुति–प्रतिष्ठाचार्य पं. पवनकुमार जैन दीवान, मुरैना

जब तुम आये जगत में, जगत हंसा तुम रोय।
अब ऐसी करनी कर चलो, जासे हंसी न होय।।

इन पंक्तियों का चिन्तन/मंथन/अनुगमन प्रत्येक प्रबुद्ध/प्रज्ञ मनुष्य को अवश्य करना चाहिये। कवि स्पष्ट कहता है कि जब तुमने इस संसार में आकर अखियां खोली/जन्म लिया तब तुम तो रो रहे थे और परिजन/पुरजन/आत्मीय/इष्टमित्रगण/शुभचिन्तकगण हंस रहे थे। अतः हे ज्ञानी! इस जगत् से जाने के पहले कुछ ऐसे सत्कृत्य करके जायें, जिससे जगत्जन तुम्हारी हँसी न उड़ावे अथवा ये ही नहीं कहें कि चलो, अच्छा हुआ धरती का कुछ बोझ हल्का हो गया। पुनः कवि कहता है–

जब तक राज नहीं खुल पाये, तुम अपना आवास सजा लो।
जब तक आश नहीं थक पाये, तुम अपना विश्वास जमा लो।।
किसे पता, कब कफन तुम्हारी मिट्टी को आकर ढंक जाये।
जब तक श्वांस नहीं छिन पाये, तुम अपना इतिहास बना लो।।

बात 20 जनवरी सन् 2002 की है। मैं मुरैना से 1997 में सांगानेर जाकर पुनः मुरैना वापिस आ चुका था, घुवारा से श्री कपूरचंदजी (नेताजी) का फोन आया कि दीवान जी घुवारा में सिद्धचक्र मंडल विधान आपके निर्देशन/विधानाचार्यत्व में करवाने हेतु समाज की ओर से निवेदन कर रहा हूँ, सो स्वीकृति प्रदान करें, चूँकि इस समय तक सन् 1981 से लेकर लगभग 21 वर्ष का समय विधि विधान के माध्यम से समाज के बीच दे चुका था। तदनुसार अपना सौभाग्य एवं कर्तव्य मानकर स्वीकृति दी। पुनः 3–4 दिनउपरान्त फोन आया कि दीवानजी अब यह विधान पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के रूप में परिवर्तित हो रहा है क्या आप मुख्य प्रतिष्ठाचार्य की भूमिका निभा पायेंगे, यदि हाँ तो सर्वोत्तम है यदि कदाचित ना, तो वृद्ध प्रतिष्ठाचार्य पं. श्री बाबूलालजी पठावाले (टीकमगढ़) एवं सहप्रतिष्ठाचार्य आप रहेंगे। कृपया स्वीकृति प्रदान करें, मैंने दोनों दृष्टि से अपना सौभाग्य मानते हुये तत्काल स्वीकृति प्रदान कर दी। प्रथम तो कि पं. जी के साथ प्रथम अवसर मिलेगा। दूसरा पंचकल्याणक का और एक अनुभव जुड़ेगा। बस मैं स्वीकृति मुताबिक कार्यक्रम शुरु होने के 1 दिवस पूर्व ही घुवारा पहुँच गया। यथा योग्य परिचय/तैयारियां प्राप्त हो गयीं। नियत तिथि शुभ बेला में ध्वजारोहणादि मांगलिक क्रियायें सम्पन्न हुईं। आदरणीय पं. जी की विशेषता थी कि वे बहुत ही सरल हृदय, निष्कपट, भद्रपरिणामी, श्रेष्ठ संयमी व व्रती वात्सल्य के भंडार थे। केवल माइक/मंच की प्रस्तुति नहीं थी। यह पंचकल्याणक 28 जनवरी से प्रारंभ होकर 4 फरवरी तक प्रायोजित

था। दिनांक 30 जनवरी को मध्यान्ह लगभग 3:30 बजे मैं मंच पर पहुँचा तो देखा कि पंडितजी बड़े चिन्तातुर थे कि संध्या/रात्रि में गर्भ कल्याणक का पूर्वरूप है और गर्भगृह बनाने की कोई समुचित व्यवस्था नहीं है फिर भी पंडितजी ने एक सब्बल मांग लिया था और गड्डा खोदने लगे। बोले दीवानजी, थोड़ा सहयोग करो। 3–4 बल्लियाँ मंगवा दो ताकि गर्भ गृह बन जाये और अपन अपना कार्य कर सकें। मुझे खेद/ आश्चर्य दोनों हुये मैंने कहा कि पं. जी थोड़ा ठहरों मैं समिति के पास जाता हूँ और व्यवस्थायें करवाता हूँ। मैं तत्काल प्रतिष्ठा समिति के कार्यालय में पहुँचा उस समय महोत्सव समिति के मेलाध्यक्ष श्री कपूरचंदजी स्वयं, श्री बाबूलाल जी पनवारी एवं अन्य पदाधिकारीगण चर्चारत थे। मेरे पहुँचते ही यथायोग्य अभिवादनकर बैठने को कहा मैंने निर्भिकता–शालीनता के साथ कहा कि नेताजी आप जैसों के अध्यक्ष पद पर रहते हुये एक वय–ज्ञान वृद्ध प्रतिष्ठाचार्य अपने कर्तव्य पालन के लिये स्वयं गड्डा खोदे यह कहाँ तक उचित है। पूरी बात स्पष्ट हुई तत्काल सभी लोग प्रतिष्ठा मंडप में आये। पंडितजी से क्षमायाचना की व्यवस्थायें बनवायीं और मुझे धन्यवाद दिया। फिर तो सम्पूर्ण महोत्सव पंडितजी के निर्देशानुसार एवं मेरे कहे अनुसार सानंद सम्पन्न हुआ। गजरथ फेरी हुई सर्वजनहिताय त्रिशलामाता अस्पताल भी प्रारंभ हुआ था।

पुनः अनेकों मुलाकातें हुई– उस पंचकल्याणक से उस क्षेत्रीय समाज से प्रगाढ़ परिचय हुआ और एक नहीं अनेक अवसर मुझे प्राप्त हुए।

भेलसी पंचकल्याणक–गजरथ महोत्सव में नेताजी और हम– पुनः सौभाग्य मिला 24 अप्रैल 2008 से 1 मई 2008 तक टीकमगढ़ जिला अंतर्गत भेलसी में श्रमण श्री विभवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में पं. श्री सनतकुमारजी–विनोदकुमारजी रजवांस एवं मेरे आचार्यत्व में तथा माननीय नेताजी के मेलाअध्यक्ष के रूप में यह महोत्सव भी सानंद सम्पन्न हुआ। इस प्रतिष्ठा में नेताजी ने समाज संगठन पर परस्पर वात्सल्य वृद्धि पर विशेष बल देते हुये अर्थ पक्ष को सुदृढ़ करने के लिये 21000–51000 हजार रुपये की राशि में सिंघई/सवाई सिंघई रूप सामाजिक उपाधि सम्मान प्रदान करने का सम्यक् प्रयास किया था।

बैंगलोर (कर्नाटक) शास्त्रि परिषद अधिवेशन (26 मई से 5 जून 2006) तत्कालीन उपाध्याय पदालंकृत श्री ज्ञानसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में अ.भा.दिग. जैन शास्त्रि परिषद का शिक्षण शिविर एवं अधिवेशन सम्पन्न हुआ। उसी समय आपने शास्त्रि परिषद की सदस्यता भी ग्रहण की। जब आपने अधिवेशन सभा में अपने विचार गुरुभक्ति एवं समाज उत्थान में रखे तब लगा कि आपकी विचार धारा क्या है।

और भी जुड़े/प्रसंग–जहाँ देखें नेताजी के ढंग– श्री पंचकल्याणक प्रतिष्ठा–बड़ागाँव घसान, फरवरी 2013)प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जय निशांत)

घुवारा–श्री कल्पद्रूम मंडल विधान 29 नवम्बर से 10 दिसम्बर 2014 मैं स्वयं

घुवारा–श्री जैनेश्वरी दीक्षा महोत्सव 5 से 8 मार्च 2017 मैं स्वयं

भगवाँ–श्री कल्पद्रूम मंडल महोत्सव 7 से 17 नवम्बर 2017 मैं स्वयं

उपरोक्त अनेक अवसरों पर नेताजी से वात्सल्यमयी भेंट हुई और वे कोई न कोई नयी बात सामाजिक सुधार/उत्थान के संबंध में अवश्य रखते थे।

जीवनशैली– सादा जीवन उच्च विचार, लुचई को डिब्बा रखें संभार। सूती सफेद धोती कुर्ता, एक बैग और एक झोला, एक अंग वस्त्र, छोटी काली–सफेद दाड़ी– ये लगभग उनकी बाह्य वेशभूषा थी जिसे सादा जीवन के रूप में देखते हैं, किन्तु विचार तो उच्च ही थे क्योंकि धर्म–धर्मायतन–गुरुसेवा के साथ समाजसेवा, गरीबों का भला, उनके अंतरंग की सद्भावनायें थीं, इसीलिये वे जन–जन के मसीहा के रूप में भी प्रसिद्ध थे। सभी के सुख–दुःख में सहभागिता उनके बेमिसाल व्यक्तित्व का श्रेष्ठ तोहफा था। उनकी भाव भंगिमा थी कि–

मुस्करा के जिनको गम को पीना आ गया।
यह हकीकत जानो जहाँ में, उनको जीना आ गया।।

लुचई को डिब्बा रखें संभार – चूंकि नेताजी जैन कुल में जन्म लेकर धर्म, समाज, संस्कृति के आदर्श थे। वह केवल कथनी रूप से नहीं करनी के रूप में अर्थात् प्रयोग के साथ थे। अतः उन्हें बाहर होटलों का खाना, अभक्ष्य त्याग, रात्रि भोजन व बिना छाना पानी त्याग यह कुलाचार/जैनाचार उनके जीवन की विशेषता थी। अतः वे घर का बना शुद्ध भोजन बुन्देली भाषा में लुचई को डिब्बा एवं कुछ सूखा नाश्ता –खुरमी आदि साथ रखते थे। साधु संतों/समाज के बीच पहुँचने पर उनके आचरणानुसार शुद्ध भोजन की व्यवस्था हो जाती थी। धार्मिक प्रसंगों पर साधु–संतों के एवं तीर्थ वंदना के हेतु उनकी जीवन संगिनी स्वनाम धन्य श्रीमती भागवती भी साथ रहती थीं, तब तो एक पंथ दो काज हो ही जाते थे।

नगर का नाम ही उनकी पहिचान बन गयी थी – कतिपय लोग ही ऐसे होते हैं कि जिनकी सेवा–समर्पण, व्यक्तित्व–कृतित्व, उनके नगर के नाम से उनकी पहिचान बन जाती है। यूँ तो राजनीति के माध्यम से प्रदेश स्तर पर तथा समाज उत्थान–सुधार एवं गुरु सेवा बतौर सम्पूर्ण बुंदेलखंड में उनकी पहिचान 'घुवारा जी' के नाम पर थी और वे जिससे मिलते निश्छलता से मिलते थे–जीवन में पारदर्शिता उनका अपना विशेष गुण था–मनीषीगण कहते हैं–

रास्ता चलना चाहिए स्वच्छ चाहे देर हो।
बात बड़ों की मानना चाहिए चाहे भले ही क्रूर हो।।
मुँह देखी प्रीति सच में प्रीति नहीं होती।
स्पष्ट कही गयी बात कभी अनीति नहीं होती।।

ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी पुण्यवंत समाज सुधारक गुरु, धर्म सेवी श्री कपूरचंदजी घुवारा को हमें असहाय–सा छोड़कर दिवंगत हो गये। ऐसे जमीनी सतह से उन्नति के शिखर तक पहुँचने वाले महान भव्यात्मा के निधन से बहुत बड़ी क्षति हुई है।

यद्यपि नेताजी भौतिक शरीर से यहाँ नहीं हैं तथापि कीर्तिकाया से सदैव हमारे बीच बने रहेंगे। मैं सपरिवार सादर श्रद्धा सुमन समर्पित करता हूँ।

कपूरचंद्रजी घुवारा श्रद्धांजलि आलेख

एक जननायक की निर्भीक, बेबाक मुखर आवाज हुई मौन

–डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

(संपादक मंडल सदस्य 'बुलेटिन')

ऐसे बहुत से लोग होते हैं जो इस दुनिया से जाने के बाद अपने पीछे अपना प्रभावी इतिहास छोड़ जाते हैं और उनकी यादें हमेशा दिलो–दिमाग में घर किए होती हैं। दिवंगत कुशल राजनेता, प्रभावी समाजसेवी, जननायक आदरणीय श्री कपूरचंद जी घुवारा ऐसे ही व्यक्ति थे। उनका जैसा नाम था वैसे ही कपूर की भांति अपने अनेक अनुकरणीय, प्रभावी कार्यों से चारों तरफ खुशियों की महक फैलाई।

जब देश पराधीनता की जंजीरों में जकड़ा हुआ था तब, बुंदेलखंड सामंती आतंक तथा प्रशासन के चंगुल में फंसकर अपना जीवन यापन करने पर विवश था ऐसे समय में स्वाधीनता के 4 वर्ष पूर्व मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले के घुवारा में 14 अगस्त 1943 को सवाई सिंघई प्यारेलाल जैन जी–,श्रीमती खेमाबाई जैन के यहाँ आदरणीय कपूरचंद जी का जन्म हुआ। कालांतर में अपने ही गांव के नाम से 'घुवारा जी' सुविख्यात हुए।

गरीबों, दीन दुखियों के मसीहा – आदरणीय घुवारा जी ने बुन्देलखण्ड से सामंतवाद, दस्यु समस्या, भ्रष्टाचार को मिटाने में संपूर्ण जीवन संघर्ष किया। उनके द्वारा किये गये संघर्षों को जनता द्वारा बुन्देलखण्ड के गांधी जन–जन के नेता, गरीबों, दीन दुखियों के मसीहा आदि अनेक उपाधियों से अलंकृत किया गया। घुवारा जी जैसा संघर्षशील नेता बुन्देलखण्ड में होना असम्भव –सा लगता है।

जैन समाज का शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जो घुवारा जी को नहीं जानता हो । विनम्रता उनका स्वभाव था। उन्होंने कभी न अपनी राजनैतिक पहुँच का अभिमान किया, ना ही विधायकी का। दंभ और अहंकार उन्हें छू नही गया था। वे बड़ामलहरा के लोकप्रिय विधायक रहे, सरलता और सहजता से वे सब से मिलते थे। आदरणीय कपूरचंद घुवाराजी बुंदेलखंड की राजनीति में धवल नक्षत्र थे, वे अपने इंकलाबी इरादों के लिए जाने जाते थे। घुवारा जी ने ललितपुर में रेल रोको आंदोलन किया था। सिंगरौली ललितपुर रेल मार्ग के वे नींव के पत्थर थे।

मुखर, प्रभावी राजनेता– उन्होंने सन् 1962 में चीनी हमले के समय राष्ट्रीय सुरक्षा कोष हेतु चंदा कर भेजा एवं भा.क. पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर ली। 1964 में निर्विरोध पंच, जनपद सदस्य बने । घुवाराजी 1980 में 39 वर्ष की आयु में विधायक निर्वाचित हो गए थे। 2005 वे पुनः विधायक व मध्यप्रदेश सरकार में दर्जा प्राप्त केबिनेट मंत्री बने। आपने अपने जीवनकाल में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से लेकर कांग्रेस और भाजपा तक का सफर तय किया। वे अपनी अनूठी कार्यशैली के लिए जाने जाते थे।

जैन धर्म के कुशल जानकर विद्वान और आचरण में जैन धर्म को समाहित कर स्वयं घर का भोजन करने वाले, बाहर का सम्पूर्ण त्याग करके भी राजनैतिक जीवन में सब जगह उपस्थित होकर

अपनी बात ओजस्विता के साथ रखने वाले नेता , जिनकी अकेले की उपस्थिति ही मध्यप्रदेश की विधानसभा को हिलाकर रख देती थी यह सब विशेषताएं घुवारा जी को खास बनाती हैं। वह शुचिता और ईमानदारी से राजनीति करने वाले जमीन से जुड़े जननेता थे, घंमड तो उनसे कोसों दूर रहा। उनके राजनैतिक जीवन की अनेक संघर्षमयी घटनाऐ हैं, कईबार जेल यात्राएं, डाकुओं द्वारा प्राणघातक हमला आदि घटनाओं ने उन्हें विचलित नहीं किया बल्कि वे आगे ही बढ़ते गए। डाकुओं को भी घुवारा जी की जीवटता, तेज तर्रार मुखर नेतृत्व के आगे झुकना पड़ा।

उन्होंने बुंदेलखंड की राजनीति में जहाँ अपनी एक अलग पहचान बनाई वहीं समाज में राष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक अलग छवि रखते थे।

विदेशों में भी छोड़ी अमिट छाप – देश ही नहीं विदेश जाकर उन्होंने जैनधर्म एवं भारतीय संस्कृति का ढंका बजाया। उन्होंने ग्रीस, रोम, बेटकन, फॉन्स, आबूधाबी, कुबैत, बहरीन, नेपाल आदि की सफल विदेश यात्रा की साथ में आपकी धर्मपत्नी श्रीमती भागवती जी भी रहीं। विदेश यात्रा के दौरान वहां का कोई भोजन नहीं लिया, स्वयं भोजन बनाते थे। विदेश में भी धोती–कुर्ता पहनकर यात्रा की, जिससे आपने अपनी एक अलग छवि बनायी। रसिया की यात्रा भी वगैर जूता, चप्पल के,छने पानी और स्वयं के बने शुद्ध भोजन के साथ पूरी की यह नियम उनका विधायक बनने पर भी चलता रहा, चरण पादुका तो खुद मुख्यमंत्री शिवराज सिंह जी ने भेंट की थीं।

सामाजिक सरोकारों से गहरा नाता – राजनीति में सक्रिय रहते हुए उन्होंने समाज, धर्म और शिक्षा के प्रसार और उन्नति के लिए अपने को समर्पित कर दिया। सिद्धक्षेत्र द्रोणागिरी के विकास में वे सदैव समर्पित रहे। शिक्षा के लिये घुवारा में स्नातकोत्तर महाविद्यालय खोलने के लिए अपना तन,मन और धन समर्पित कर क्षेत्र के युवाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के अवसर उपलब्ध कराए। जैन धर्म के नियम का उन्होंने जिंदगी भर पालन किया। धार्मिक,सामाजिक और राजनैतिक सभी क्षेत्रों में उनकी कार्यक्षमता हर व्यक्ति के लिए प्रेरणा थी। ऐसा बहुत कम देखने को मिलता है जो सभी क्षेत्रों में फिट हो।

जैनधर्म के प्रति अटूट आस्था – राजनीति में होते हुए सदैव शुद्ध भोजन का ध्यान रखा, घर का भोजन वह साथ रखते थे। यहाँ तक कि कई बार स्वयं ही भोजन बनाया लेकिन अपने दृढ़ नियम, जैनधर्म के प्रति अटूट श्रद्धा से कभी समझौता नहीं किया। अपने नियम के प्रति इतने दृढ़ संकल्प होना ,यह सब घुवारा जी ही कर सकते थे वरना आज के राजनैतिक परिदृश्य को देखा जाय तो नेताओं से निराशा ही मिलती है परंतु घुवारा जी ने अपने चरित्र और चेहरा से जो धवल छवि का निर्माण किया वह बहुत कम देखने मिलती है। विद्वत्ता के क्षेत्र में भी वह पीछे नहीं थे, जैनधर्म के सिद्धांतों पर वे दक्षता, मजबूती के साथ विद्वानों, मुनिराजों की सभाओं में अपनी बात रखते थे । सामाजिक विसंगतियों पर वह निडर, निष्पक्ष होकर मुखरता से बोलते थे इसलिए उन्हें सभी गंभीरता से लेते थे।

जनता की मुखर आवाज – आपने लोगों को अन्याय, जुल्म, अत्याचार, अनीति, भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज बुलंद करना सिखाया। आप सदैव जनता की मुखर आवाज बने रहे । विगत 5 दशकों से बुंदेलखंड के आम जनमानस के हृदय सम्राट के रूप में स्थापित जनप्रिय नेता थे आदरणीय कपूरचंद जी घुवारा । वे राजनीति के संत थे। समाज के कोहनूर थे। अनमोल धरोहर थे। वे अपने इंकलाबी इरादों के लिए जाने जाते थे। जनता की आवाज मुखरता से उठाते थे। वे एक जननायक के रूप में जाने जाते थे। जिला मुख्यालय पर आए दिन प्रदर्शन, आंदोलन के माध्यम से जनता की आवाज को हमेशा बुलंद करते रहे। वे अपनी अनूठी राजनैतिक शैली के लिए जाने जाते थे। घुवारा जी की सभा का लोगों को इंतजार रहता था। उन्हें सुनने लोग उमड़ पड़ते थे। चाहे वह राजनैतिक सभा हो या धार्मिक सभा घुवारा जी का नाम सुनते ही उन्हें सुनने बड़ी संख्या में लोग जुट जाया करते थे। वे लोगों के बीच विश्वसनीय राजनेता माने जाते थे। **''कोऊ का के''** का स्लोगन उनके भाषण की पहचान बन चुका था।

घुवारा जी हमेशा कहते थे–

जीना है तो लड़ना सीखो।
सही बात पर अड़ना सीखो।।

उनके यह स्लोगन भाषण में तो रहते ही थे, गाँव–गाँव दीवालों पर भी लिखे जाते रहे।

मेरे मार्गदर्शक – आदरणीय घुवारा जी से अनेक बार मेरा संपर्क रहा। आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज की प्रेरणा से आयोजित श्रुत संवर्धन शिविरों के समापन समाराहों में सदैव आये। द्रोणगिरि में आयोजित समापन समारोह में तो वे मुख्य भूमिका में भी रहे। जब उनसे शिविरों के समापन को द्रोणगिरि क्षेत्र के लिए उनसे स्वीकृति मांगी, सहजता से बहुत ही सुव्यवस्थित व्यवस्था के साथ स्वीकृति दी और प्रत्येक आयोजन में वे खुद मौजूद रहे। जब वह विधायक थे उस समय भोपाल में परम पूज्य सराकोद्धारक आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज के सान्निध्य में शिविरों के समापन में भी वह पहुँचे जबकि उनकी राजनैतिक व्यस्तताएं थीं। उनकी यही खास बात सबको प्रेरित करती और उन्हें खास बनाती थी कि वे प्रत्येक छोटे–बड़े आयोजनों में सहजता से पहुँच जाया करते थे और अपनी धाराप्रवाह बेवाक, प्रभावी, मुखर, ओजस्वी, तेजस्वी वाणी से सबको अपनी ओर खींच लेते थे। समाज के अनेक विवाद घुवारा जी के पहुँचते ही चुटकियों में समाप्त हो जाते थे। अनेकबार उनसे चर्चा–परिचर्चा मार्गदर्शन प्राप्त करने का मुझे सौभाग्य मिला। मेरे प्रति उनका विशेष स्नेह रहता था। किसी भी आयोजन के लिए उनको आमंत्रण दिया वे पहुँचे जरूर।

अपूरणीय क्षति – उनका 79 वर्ष की आयु में देह परिवर्तन हो गया। घुवारा जी का जाना न केवल जैन समाज की अपूरणीय क्षति है बल्कि स्वच्छ राजनीति के लिए भी अपूरणीय क्षति है। उनके जाने से जो रिक्तता बुंदेलखंड की राजनीति में, समाज में हुई है उसकी भरपाई सम्भव प्रतीत नहीं होती। शून्य को भरा नहीं जा सकता।

रईस फरोग ने लिखा है–

लोग अच्छे हैं बहुत, दिल में उतर जाते हैं ।
इक बुराई है तो बस ये है कि मर जाते हैं ।।

परिवार भी चल रहा उनके पदचिन्हों पर– घुवारा जी ने जिन संस्कारों को जीवन में जिया वही उन्होंने अपने पुत्रों श्री पवन घुवारा जी, श्री सुनील घुवाराजी, श्री अनिल घुवाराजी को भी प्रदान किए। घुवारा जी की सफलता के पीछे उनकी धर्मपत्नी आदरणीया भागवती जी का पूरा–पूरा योगदान है। संघर्ष के दिनों में उन्होंने जिस मजबूती से घुवारा जी का साथ दिया उसी की वजह है कि घुवारा जी अपने राजनैतिक जीवन के शिखर तक पहुँचे। पवन घुवारा जी, सुनील घुवाराजी को राजनीतिक विरासत सौंपकर उन्होंने हमें अच्छे समाजसेवी, राजनीतिज्ञ व्यक्तित्व दिये हैं।जिनके ऊपर उनकी विरासत को सम्हालने का दायित्व है। सारा समाज इस दुःख की घड़ी में उनके साथ खड़ा है। घुवारा जी के निधन के बाद भाईसाब सुनील घुवारा जी से अनेकबार संपर्क में रहे, वे पूज्य पिता जी स्मृति में बहुत कुछ कार्यों को करने की ओर उद्धत हैं।

स्मृति ग्रंथ का हो प्रकाशन – ऑनलाइन श्रद्धांजलि सभा में जब विद्वानों ने घुवारा जी के स्मृति ग्रंथ के बारे में सुझाव दिए तो भाईसाब सुनील घुवारा जी ने भी अपना सहयोग देने की बात कही। मेरा भी सुझाव है कि आदरणीय कपूरचंद जी घुवारा के विराट व्यक्तित्व पर एक स्मृतिग्रंथ जल्द प्रकाशित हो जिससे उनके कार्यों को उसमें सहेजा जा सके, उनकी स्मृतियों को इसमें संग्रहित किया जा सके तथा वह ग्रंथ अनेक लोगों को प्रेरणास्रोत बने। दिवंगत विभूति के कार्यों को स्मरणीय बनाने के लिए स्मृति ग्रंथ प्रकाशित करना ही चाहिए।

आदरणीय घुवारा जी भले ही देह से यहाँ उपस्थित न हों लेकिन आप हमेशा जनमानस की सांसों में सदैव विराजमान रहेंगे। आप हमारी स्मृतियों में सदैव जीवन्त रहेंगे। आपने समाज, जनता को जो दिया वह अद्भुत, अकल्पनीय है। वे मेरी स्मृति पटल पर सदैव जीवंत रहेंगे।

अनंत, अशेष स्मृतियों को याद करते हुए उनके चरणों में अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि!

एक सूरज था कि तारों के घराने से उठा।
आँख हैरान है क्या शख्स जमाने से उठा।।

जन–जन के हृदय में सदैव जीवन्त रहेंगे
श्री कपूरचन्द्रजी घुवारा

डॉ. पंकज कुमार जैन
भोपाल (म.प्र.)

कुछ महान आत्माएँ अपने व्यवहार और लोकापकारी कार्यों से समय की शिला पर कुछ ऐसा लेख लिख जाते हैं कि उनके दिवंगत हो जाने पर भी समय स्वयं उनकी यथोगाथा का गान करता रहता है और ऐसी दिव्यात्माएँ अपने यशरूपी शरीर से सदैव जीवन्त बनी रहती हैं। ऐसी ही दिव्यात्माओं में स्वर्गीय श्री कपूरचन्द्रजी घुवारा का भी प्रमुख स्थान है । वे अपनी यशःकाय से जन–जन के मानस में चिरकाल तक जीवन्त रहेंगे।

आदरणीय श्री कपूरचन्द्रजी जैन बुन्देलखण्ड की वीरप्रसूता वसुन्धरा के एक ऐसे सच्चे सूपत थे जिन्होंने अपनी मातृभूमि घुवारा के साथ–साथ समग्र बुन्देलखण्ड को वैश्विक पटल पर एक अलग ही पहचान दी है। जब हम उनके परोपकारी जीवन पर दृष्टि डालते हैं तो एक ओर तो हमें उनकी राजनैतिक उपलब्धियां नजर आती हैं और दूसरी ओर हमें उनके व्यक्तित्व के आंतरिक पक्ष के रूप में उनका संघर्ष, साहस एवं उनके संस्कार दृष्टिगोचर होते हैं।

आपकी राजनैतिक उपलब्धियों में आपका मध्यप्रदेश विधानसभा में दो बार विधायक के रूप में निर्वाचित होना एवं मध्यप्रदेश हस्तशिल्प निगम के अध्यक्ष के रूप में केबिनेट मंत्री का स्तर प्राप्त करना आदि उल्लेखनीय है, लेकिन इन राजनैतिक उपलब्धियों के पीछे कभी भी आपके मन में सत्ता की भूख या पद लोलुपता नहीं रही है। आपने सदैव दबे–कुचले, कमजोर और वंचित वर्ग के लिये संघर्ष किया है उनकी आवाज बनकर जब आप विधानसभा में आत्मविश्वास से भरकर निर्भयतापूर्वक ओजस्वी वाणी में अपनी बात रखते थे तब पक्ष–विपक्ष सभी स्वतः प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाते थे। इसका कारण यह था कि सभी जानते थे कि आप कभी निजी स्वार्थ के लिये कोई कार्य नहीं करते थे एवं अन्याय और भ्रष्टाचार आपको कभी छू भी नहीं पाये थे। आपने यदि भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी के बाद कांग्रेस एवं भारतीय जनता पार्टी जैसे विभिन्न राजनैतिक दलों के उम्मीदवार के रूप में यदि चुनाव लड़े हैं तो कहीं भी इसमें राजनैतिक अवसरवादिता नहीं थी। आपको तो केवल अपने क्षेत्र बुंदेलखंड के विकास की चिंता थी। यही कारण था कि आपको बुंदेलखंड और विशेष रूप से बड़ामलहरा विधानसभा क्षेत्रवासियों के हृदय में विशेष स्थान मिला हुआ था। सभी क्षेत्रवासी आपको अपने संरक्षक का सम्मान देते हैं।

आपके राजनैतिक जीवन का एक उज्ज्वल पक्ष यह भी था कि आपने राजनीति में रहते हुए भी अपने धार्मिक संस्कारों का सदैव गौरव के साथ निर्वाह किया। भ्रष्ट राजनेताओं से परे सदैव घर का बना शुद्ध सात्विक भोजन करते थे। पानी छानकर पीते थे। नित्य देव–शास्त्र–गुरु की आराधना करना एवं धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं के उन्नयन के लिये निरन्तर प्रयत्नशील रहना भी आपकी असाधारण

विशेषता थी। श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि (सेंधपा), छतरपुर एवं श्री गणेश प्रसाद वर्णी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, घुवारा जैसी अनेक धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं एवं तीर्थों के संरक्षण और विकास में आपका अविस्मरणीय अवदान है। आपके निधन से एक ऐसा रिक्त स्थान निर्मित हुआ है कि जिसे कभी भी कोई पूर्ण नहीं कर सकता है। दूसरों के लिये जीवन जीने के आपके दृढ़ संकल्प को आपके सुपुत्र श्री पवन घुवारा एवं श्री सुनील घुवारा भी आपके पदचिन्हों पर चलकर जनसेवा के माध्यम से पूर्ण कर रहे हैं। अपने सरल निरभिमानी व्यक्तित्व और उच्च आदर्शों के कारण स्व. कपूरचन्द्रजी घुवारा सदैव हमारी स्मृति में जीवन्त रहेंगे। इसी पुनीत भावना के साथ मैं उन्हें अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ।

बनोनिया वंश वट वृक्ष

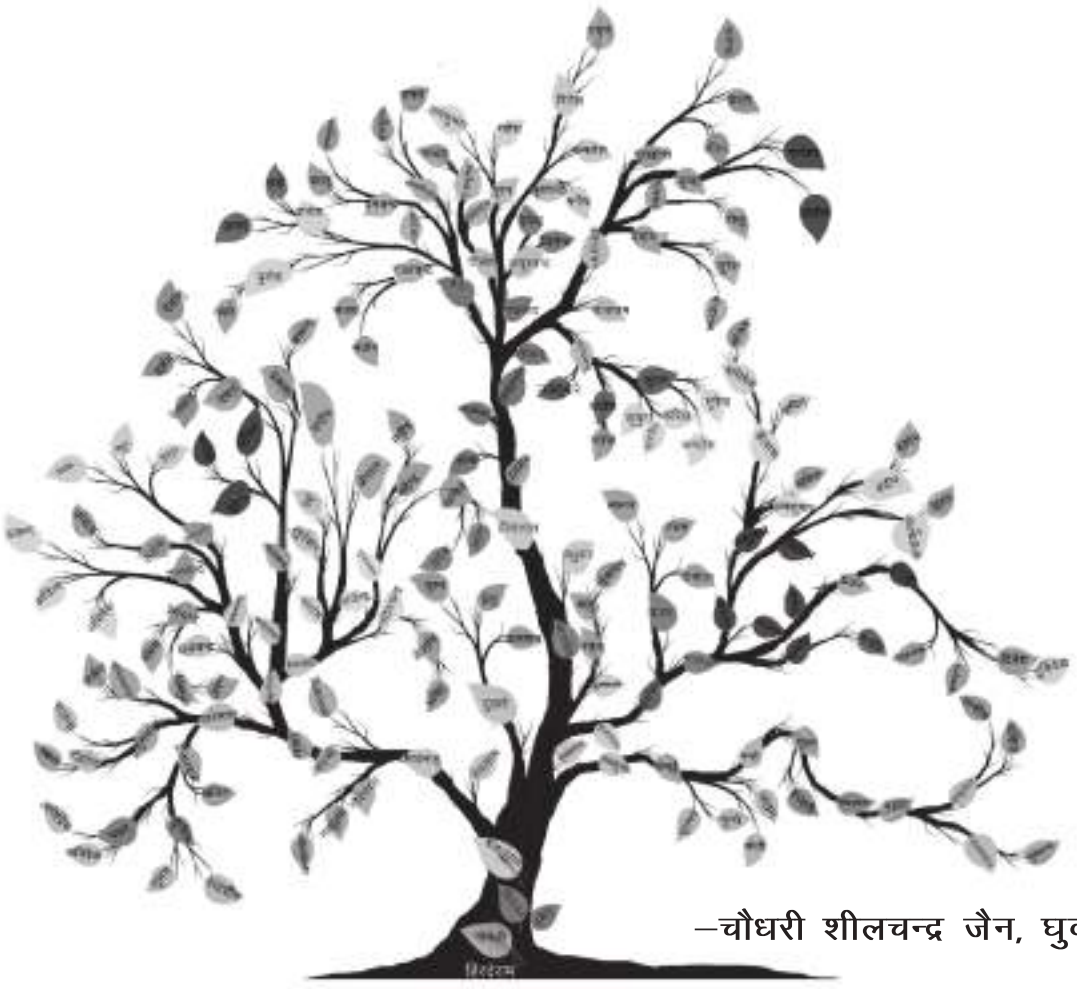

—चौधरी शीलचन्द्र जैन, घुवारा

श्री घुवारा जी के पूर्वजों द्वारा स्थापित श्री पार्श्वनाथ स्वामी
बाजार मंदिर, घुवारा

त्रिकाल चौबीसी जिनालय में मूलनायक के रूप में विराजमान
त्रिमूर्ति में श्री अरहनाथ भगवान की प्रतिमा सन् 2016 में आचार्य विशुद्धसागरजी महाराज के सान्निध्य एवं पं. सनतकुमार, विनोद कुमार जैन प्रतिष्ठाचार्य और घुवाराजी की अध्यक्षता में उनके परिवार द्वारा प्रतिष्ठित

सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि पर्वत पर मंदिर क्र. 16 श्री घुवाराजी के पूर्वजों द्वारा निर्मित

आचार्य कुन्थुसागरजी से आशीर्वाद

मुनिश्री तरुणसागरजी महाराज को नमन करते
श्री घुवारा जी

बी.जे.पी. के संगठन महामंत्री मा. अरविन्द जी मैनन
एवं संभागीय संगठनमंत्री मा. शैलेन्द्रजी बरूआ के साथ
मा. घुवाराजी

पं. गुलाबचन्द्र पुष्प अभिनन्दन ग्रन्थ
विमोचन समारोह

शास्त्रि-परिषद् अधिवेशन में विचार व्यक्त करते हुए
श्री घुवाराजी

शास्त्रि-परिषद् विद्वत् प्रशिक्षण में सम्मान

शास्त्रि–परिषद् पुरस्कार सन् 2011

गुलालबाड़ी मुम्बई समाज द्वारा सम्मान

पुरस्कृत विद्वान सन् 2011

आचार्य ज्ञानसागरजी महाराज से विमर्श

श्री जमनालाल हपावत और श्री घुवारा जी

तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय,
मुरादाबाद में श्री घुवारा जी

दृढ़ इच्छा के धनी, दूर दृष्टा

– भागचन्द जैन 'पीली दुकान'
मंत्री–श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि प्रबंधकारिणी कमेटी

स्व. श्री कपूरचन्द्रजी 'घुवारा' पूर्व विधायक, अध्यक्ष श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि ट्रस्ट से मेरा निकट संपर्क वर्ष 1992 से हुआ। वर्ष 1992 में आचार्य श्री विरागसागरजी महाराज का चातुर्मास चल रहा था तब किसी राजनैतिक प्रसंग से श्री घुवाराजी का द्रोणगिरि आना हुआ। रविवारीय प्रवचन था चौबीसी जिनालय में आचार्यश्री के प्रवचन होते थे चौबीसी का हाल बहुत गूंजता था अनेक उपाय कर लिये थे किन्तु गूंज नहीं मिट रही थी। प्रसंगवश घुवाराजी का बोलना हुआ। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में हाल के गूंजने को रखा एवं उन्होंने कहा कि बाहर पाण्डाल बनाओ वहां प्रवचन कराओ। मैं मंच का संचालन करता था। मैंने कहा घुवाराजी बाहर पाण्डाल बनाने में आप सहयोग करो फिर क्या था पाण्डाल की चर्चा बढ़ गई। आचार्यश्री ने कहा पाण्डाल की जवाबदेही घुवाराजी को सौंपो।

संयोगवश घुवाराजी ने उसी प्रवचन सभा में पाण्डाल की योजना 1100/– रुपया प्रति टीन की दातार की योजना रखी। अनेक लोगों ने तुरन्त अपनी घोषणाएं भी कर दीं। घुवाराजी बोले चार लोग कमेटी के मेरे साथ चलो। दूसरे दिन ये गाँव टीन सेड के सदस्य, बनाने का क्रम शुरु हुआ। तत्काल टीन एवं पाइप का आर्डर खूबचन्द कानपुर वालों को दे दिया गया। इधर सदस्यों के बनाने की गति तीव्र हुई वहां पाण्डाल का काम भी तीव्र हो गया। इस प्रकार तीसरे सप्ताह का रविवारीय प्रवचन चौबीसी के बाहर टीन पाण्डाल में हुआ। चातुर्मास बाद घुवाराजी के नेतृत्व में स्वागताध्यक्ष के पद पर रहते हुए कल्पद्रुम विधान हुआ जो ऐतिहासिक था। उसी विधान में मुनि श्री विरागसागरजी महाराज को आचार्य पद से विभूषित किया गया। यह भी घुवाराजी की कल्पना थी। द्रोणगिरि में आचार्य श्री विरागसागरजी महाराज का द्रोणगिरि में आचार्य पदारोहण इतिहास के स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया।

चातुर्मास बाद वार्षिक मेला पर श्री घुवाराजी को द्रोणगिरि प्रबंधसमिति के अध्यक्ष पद पर निर्वाचित किया गया। वर्ष 1992 से उनकी अंतिम सांस तक मेरा उनसे निकट संबंध रहा। उन्तीस वर्षों में मैंने उनके अद्‌भुत व्यक्तित्व को देखा। श्री घुवाराजी दृढ़ इच्छा शक्ति के धनी थे जिस कार्य को हाथ में लेते थे उसमें कितनी भी मुश्किल आवे किन्तु उसे पूर्ण करके ही छोड़ते थे। उनकी अद्‌भुत दूरदृष्टि थी।

वर्ष 1998 का प्रसंग है, मैं एवं घुवाराजी पर्वत पर वन्दना कर रहे थे। अचानक मुझसे जंगल की ओर चलने को कहा। वहीं पर मंदिरों की पुताई हेतु एक बाल्टी में चूना रखा था। पर्वत पर माली था उससे उस बाल्टी को साथ लेकर चलने को कहा। जंगल के ऊबड़–खाबड़ रास्ता से चलते हुए पर्वत के पहाड़ से नीचे उतरने का प्रयास किया। दो तीन जगह से चलने के उपरान्त उन्होंने माली से कहा कि जहाँ से हम लोग चल रहे हैं। वहाँ पर चूना छिड़कते जाओ पर्वत से नीचे तक जिस स्थान में बड़े वृक्ष नहीं थे उस जमीन पर चूना डलवाते गये रास्ता कहीं नहीं था पत्थर थे या झाड़ी वाले वृक्ष थे। कुछ स्थान पर मात्र बड़े वृक्ष थे। इस प्रकार उन्होंने लगभग मुझे 4 घंटे पर्वत के जंगल में भ्रमण कराया एवं उसके बाद बोले की

कल ही मजदूर बुलाकर जिस स्थान पर चूना डाला है उस स्थान को साफ कराओ। इसे रास्ता बनाना है। उन्होंने कहा कि पर्वत पर निर्माण सामग्री को अभी सीढ़ी मार्ग से ले जाने से विकास नहीं हो पाता है। साथ आने वाला कल ऐसा आयेगा की जो वृद्ध सीढ़ी से चढ़ने में सक्षम नहीं होंगे वे पर्वत की वन्दना से वंचित रह जायेंगे।

इस प्रकार पर्वत का मार्ग बन गया। कालान्तर में उन्होंने अपने विधायक काल में मुख्यमंत्री जी को द्रोणगिरि बुलाकर उसी ऊबड़–खाबड़ मार्ग से चार पहिया वाहन से पर्वत पर ले गये एवं उस रोड के लिए एक करोड़ की राशि स्वीकृत कराई। इस प्रकार उनकी दूरदृष्टि के अनेक प्रसंग मैंने उनके देखे हैं।

उन्तीस वर्षों में मेरा उनके साथ चोली–दामन का संबंध रहा। उनके अध्यक्ष एवं मेरे मंत्री रहते हुए हमारे उनके बीच में कभी भी न मन भेद हुआ न मत भेद हुआ। वे कार्यकर्ता की बहुत कद्र करते थे।

उनके देह परिवर्तन से समाज के साथ द्रोणगिरि को बहुत क्षति हुई है। उन्होंने अपनी अंतिम सांस तक द्रोणगिरि की सेवा की है। द्रोणगिरि के विकास में उनका बहुत बड़ा योगदान है जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है। उनकी आत्म शान्ति हेतु मैं प्रभु चरणों में यही निवेदन करता हूँ कि उनको सद्गति प्राप्त हो एवं परम्परा से परमपद को प्राप्त करें।

परम आदरणी श्री कपूरचंद्रजी घुवारा का देवलोक गमन सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज के लिये एक ऐसी क्षति, एक ऐसी रिक्तता है जिसे कोई भी पूर्ण नहीं कर सकता। किसी एक ही व्यक्ति में राजनैतिक, सामाजिक एवं पारिवारिक नेतृत्व की विराट क्षमता होना बहुत ही विरली उपलब्धि है ।

स्वयं कार्यसमिति के अध्यक्ष पद पर रहते हुए उन्होंने द्रोणगिरि तीर्थ की तो जीवन पर्यन्त अपनी सेवाएं दी ही हैं, किन्तु अनेकों अन्य तीर्थों के पदाधिकारी भी तीर्थ संचालन, संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिये उनसे नियमित परामर्श लेते रहते थे। श्री 1008 दिगम्बर जैन शांतिनाथ सिद्धक्षेत्र अहारजी के प्रति उनका विशेष लगाव था एवं तीर्थ पर होने वाली समस्त गतिविधियों में उनका सहयोग, मार्गदर्शन हमें प्राप्त होता रहता था। वे तीर्थ के संरक्षक के रूप में एक आधार स्तम्भ से कम नहीं थे।

तीर्थ पर आयोजित समस्त वृहद आयोजनों में उनकी महती भूमिका होती थी। विशेष रूप से पंचकल्याणक प्रतिष्ठाओं को निर्विघ्न एवं न्यूनतम व्यय के साथ सम्पन्न करना मानो उनकी विशेषता थी।

आदरणीय घुवाराजी के साथ बिताये अनेक वर्षों में अनुभव के तौर पर बहुत सी बातें हमने सीखी हैं, जो व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में हमेशा हमारा मार्गदर्शन करती रहेंगी। हम श्रद्धेय घुवाराजी के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए श्री शांतिनाथ भगवान से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को सद्गति प्राप्त हो एवं वे शीघ्र अपना मोक्ष मार्ग प्रशस्त करें।

महेन्द्र जैन बड़ागाँव — अध्यक्ष

राजकुमार पठा — महामंत्री

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र अहारजी

एवं समस्त प्रबंधकारिणी एवं ट्रस्ट समिति अहारजी

शेर–ए–बुन्देलखण्ड,समाजगौरव, प्रेरणापुरुष श्री घुवाराजी

शेर–ए–बुन्देलखण्ड, समाजगौरव, प्रेरणा पुरुष श्री कपूरचन्द्रजी जैन 'घुवारा' एक ऐसा नाम है जिसका स्मरण होते ही मस्तिष्क में बहुत से संस्मरण, अनेक स्मृतियां किसी चलचित्र की तरह सजीव हो उठते हैं। सन् 1975 में सम्मानीय घुवाराजी से प्रथम संपर्क स्थापित हुआ। उसे पहली मुलाकात या कहूँ नजदीकी मुलाकात के बाद जुड़ाव भी बढ़ता गया। यद्यपि किसी भी राजनैतिक विचारधारा में कोई सक्रिय भूमिका नहीं थी फिर भी घुवाराजी के साथ कम्युनिष्ट पार्टी के कई क्रांतिकारी आंदोलनों में हिस्सा भी लिया और 1978 में बस किराया वृद्धि आंदोलन में एक बार चार दिन की जेल यात्रा भी हुई। तब से लेकर उनके रहने तक यह साथ यथावत बना ही रहा। तीर्थ यात्राएं एवं पर्यटन दोनों ही घुवाराजी के साथ खूब हुईं और इतनी आनंदपूर्वक हुईं कि सदा के लिये स्मृतिकोश में संचित हो गईं। गिरनारजी के साथ पूरे गुजरात का भ्रमण हो, गोम्मटेश्वर बाहुबली भगवान के मस्तकाभिषेक का बहुप्रतीक्षित आयोजन हो, बद्रीनाथ सहित संपूर्ण उत्तरांचल की यात्रा हो या सिक्किम, नागालैण्ड, आसाम, मेघालय की अद्‌भुत यात्रा हो सभी के सैकड़ों–हजारों संस्मरण हैं जिन्हें स्मरण करते ही चेहरे पर एक मुस्कुराहट प्रकट हो जाती है।

उनके साथ यात्राएं करने का अनुभव जिनका भी रहा हो वो इस बात को प्रमाणित कर सकते हैं कि उनके साथ बिताये हर दिन में बहुत कुछ सीखने को मिलता था। सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज के लिये तो घुवाराजी एक महान विभूति थे ही, किन्तु गोलापूर्व जैन समाज के लिये वे किसी कोहिनूर हीरे की तरह थे जिसकी चमक पूरी समाज का मार्गदर्शन करती थी। उनके साथ रहते हुये मैंने गरीब, शोषित और अन्याय से त्रस्त लोगों के प्रति उनकी संवेदनशीलता और परोपकार भावना कई बार महसूस की। सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, पारिवारिक हर क्षेत्र में उनका अनूठा व्यक्तित्व उन्हें सर्वसाधारण या खासोआम का चहेता बना ही देता था। उनके जैसा निर्भीक वक्ता और स्पष्टवादी होना सबके बस की बात नहीं।

हिमालय की तरह आत्मविश्वास के साथ अपने कार्य में शत्–प्रतिशत भरोसा रखना और 'कोऊ का के' की परवाह ना करना ही वो विशेष गुण थे जो उन्हें घुवाराजी बनाते थे। सामाजिक सेवा एवं देव–शास्त्र–गुरु के प्रति कर्तव्य बोध के साथ समर्पित होना मैंने उन्हीं से सीखा। उचित एवं जनकल्याणकारी मन्तव्य के साथ अपने सेवा क्षेत्र में पूरे विश्वास के साथ आगे बढ़ते जाना उनसे ही सीखा है। घुवाराजी का परलोक गमन संपूर्ण जैन समाज के लिये ऐसी क्षति है जो कभी पूरी नहीं की जा सकेगी।

हम सब जानते हैं कि जीवन–मृत्यु कर्म के आधीन है इसीलिये उस पर किसी का भी अधिकार नहीं है परन्तु घुवाराजी की तरह जीवन जीकर जाने वाले मृत्यु पश्चात् भी अमर हो जाते हैं।

मैं अपने पूरे परिवार, श्री सिद्धक्षेत्र अहारजी एवं थोक वस्त्र व्यवसायी संघ की ओर से उनके चरणों में विनयपूर्वक श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ और आशा करता हूँ कि उनके सिखाये गुण सदैव हमारा मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे।

राजकुमार जैन पठा
महामंत्री–श्री सिद्धक्षेत्र अहारजी, टीकमगढ़ (म.प्र.)

काजल की कोठरी में रहकर बेदाग रहे राजनीति के शेर दिल संत और महंत कपूरचंद्रजी घुवारा

– राजेन्द्र जैन 'महावीर'
217, सोलंकी कॉलोनी, सनावद

जिनकी हुंकार से राजनीति के सिंहासन डांवाडोल हो गए हों, जिनकी बुलंदी से चंबल के डाकू भी नतमस्तक हुए हों, जिनकी जनकल्याण की भावना से जन–जन में विश्वास का संचार हुआ हो, जिन्होंने जैन कुल में जन्म लेकर जैन आचरण पद्धति को अपनाकर जैनत्व की प्रभावना में चहुँ ओर अभिवृद्धि की हो, जो राजनीति की काली कोठरी में रहकर बेदाग रहे हों, जो राजनीति के संत कहे जाते हों, ऐसा व्यक्तित्व यदि कोई था तो वे स्वर्गीय कपूरचंद्रजी घुवारा थे ।

श्रावक श्रेष्ठी सवाई सिंघई श्री प्यारेलालजी–खेमाबाईजी के घर–आंगन में 14 अगस्त 1943 को जन्मे श्री कपूरचंद्रजी घुवारा ने मात्र कक्षा 9वीं तक लौकिक अध्ययन किया लेकिन जैन जीवन पद्धति और जैनत्व का न केवल अध्ययन किया बल्कि उसे आत्मसात भी किया ।

21 अप्रैल 2021 राम नवमी को वे इस नश्वर संसार को छोड़कर चले गए लेकिन उनके विचार उनकी जीवन पद्धति ने हम सब को कई संदेश दिए जो मैं आपको प्रेषित कर रहा हूँ, जिससे राजनीति में काम करने वाले समाजजनों को प्रेरणा मिल सके।

- जीवन चलने का नाम है, काम करते रहो सुबह–शाम, उनका जीवन बताता है कि कोई भी व्यक्ति काम करने से ही महान बनता है, इसलिए काम ही किसी की महानता का आधार है ।
- नैतिकता–शुचिता की आवश्यकता केवल धर्म में ही नहीं हर क्षेत्र में आवश्यक है। आपकी नैतिकता, कार्य करने की शुचिता ही आम जन–मानस में स्वीकार्यता को बढ़ाती है ।
- प्राणीमात्र के प्रति दया का भाव हो यह श्री घुवाराजी ने करके दिखाया। उन्होंने राजनीति केवल जैन समाज के लिए नहीं की उन्होंने राजनीति दलित–पीड़ित–शोषित–वंचित वर्ग के लिए की जिसके कारण वे सन् 1980 में उनके खिलाफ खड़े सभी उम्मीदवारों की जमानता जप्त कराकर विधायक बने। यह उनकी सोच का ही परिणाम था ।
- जब वे मध्यप्रदेश हस्त शिल्प विकास निगम के चेयरमेन (केबिनेट मंत्री का दर्जा प्राप्त) बने तो उन्होंने म. प्र .शासन से एम्बेसेडर या लक्झरी गाड़ी नहीं ली, उन्होंने 12–14 सीटर तूफान गाड़ी ली और उस पर लाल बत्ती लगवाई यह उनकी सोच थी की बड़े बनने पर भी ज्यादा से ज्यादा लोगों को साथ लेकर चलो।
- सुबह 8 बजे भोजन करके वे अपना काम प्रारंभ कर देते थे। एक बार वे इन्दौर पार्टी के राष्ट्रीय अधिवेशन में आए तो भोजन की शानदार व्यवस्था थी लेकिन घुवारा जी तो घर का बना शुद्धि पूर्वक भोजन करते थे, उनसे जब पूछा कि वे क्या खायेंगे तो उन्होंने कहा कि वे तो सिर्फ फल

खाएंगे वह भी अपने हाथ से बनाकर और सूर्यास्त पूर्व, यहां का तो पानी भी नहीं लेंगे। पानी साथ लेकर आएंगे, तब इस राजनीति के संत और महंत की खबर एक बड़े समाचार पत्र ने विशेष बाक्स में प्रकाशित की थी कि इतने बड़े अधिवेशन में घुवारा जी केवल घर का भोजन–पानी लेंगे, यहाँ का तो पानी भी नहीं पीयेंगे।

इस खबर ने पूर्व मुख्यमंत्री श्री मिश्रीलालजी गंगवाल की याद दिला दी थी जिनके दृढ़ निश्चय के कारण तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरु को कहना पड़ा था कि गंगवालजी रात में भोजन नहीं करेंगे तो हम भी उनके समय पर उनके मीनू के साथ सूर्यास्त पूर्व ही भोजन करेंगे।

ऐसे अनेक उदाहरण हैं राजनेताओं के। स्व.कपूरचंद्रजी घुवारा ने अपने जीवन में राजनीति के अनेक आदर्श स्थापित किए, उन्होंने कई वर्षों तक पैरों में जूते–चप्पल नहीं पहने क्योंकि वे अपने क्षेत्र में आमजनों की चिकित्सा के लिए एक अस्पताल चाहते थे। दृढ़ संकल्प के धनी श्री घुवाराजी पर प्राणघातक हमले भी हुए, हमेशा उनकी जान हथेली पर रही लेकिन 'जो होना है सो निश्चित है', 'जो है सो है' को आत्मसात कर चुके घुवारा जी को कौन डिगा सकता था । वे अनेक गुणों के समूह रहे, उनकी ताकत यह थी कि एक राज्यपाल को हटना पड़ा, उनका यह विश्वास था कि वे अपने दृढ निश्चय से जो चाहे वो कर सकते हैं, उन्होंने आमजन के लिए अनेक सुविधाएं उपलब्ध कराई वहीं सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि के अध्यक्ष के रूप में तीर्थ पर विकास के आयाम लिखें।

मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान से एक करोड़ रुपये लेकर सड़क निर्माण के साथ अनेक कार्य उनकी फेहरिस्त में सम्मिलित हैं। उनके गुणों को लिखने का एकमात्र उद्देश्य यह है कि आज भी यदि पवित्र मन से हम चाहें तो जैन समाज हर क्षेत्र में आगे हो सकता है ।

इन्हीं भावनाओं के साथ... राजनीति के शेर स्व. कपूरचंद्रजी घुवारा को उनके श्रेष्ठतम्, सर्व स्वीकार्य कार्य के लिए कोटिशः नमन !

''जो चल रहा है, उसी के पैर में छाला होगा ।
जो परिश्रम कर रहा है, उसी के घर उजाला होगा ।।''

मानव समाज के कोहिनूर थे कपूरचन्द्र घुवाराजी

डॉ. कमलेश जैन बसंत
तिजारा (अलवर) राजस्थान

जो लोग समय का नाग नथते हैं, वृन्दावन उनके पीछे चलता है।
गोवर्धन धारण करने वाले का, सारा जग अभिनन्दन करता है।।
केवल थोथी बातों को दोहराने से, कब वसुंधरा का रूप सँवरता है।
आदर्श आचरण,सेवा,कर्मठता लेकर, जब कपूरचंद घुवारा इतिहास को रचता है।।

जिन धर्म और समाज का एक विशाल वट वृक्ष जिसके संरक्षण में न जाने कितनी ही संस्थायें जीवंत और पुष्पित हुई हैं, राजनीति हो या समाज सेवा, तीर्थों का जीर्णोद्धार हो या साधुओं की बृहद् व्यवस्था किसी भी मायने में घुवारा जी की कोई सानी नहीं रही।

किसी ने लिखा है–

लीक–लीक गाड़ी चले, लीकहिं चले कपूत।
लीक छाँड़ि तीनों चले, शायर सिंह सपूत।।

घुवारा जी में यह तीनों गुण विद्यमान थे, वे कविह्रदय भी थे, उन्होंने प्रगतिशील लेखक संघ को बहुत ही ऊर्जा दी। सिंह की तरह निर्भीक वृत्ति बड़े से बड़े डांकुओं को भी आईना दिखाने वाले घुवारा जी जब 1980 में मध्यप्रदेश की विधानसभा में विधायक बनकर पहुँचे तब,जनता और गरीबों के हित में अकेले ही पूरे सदन में भारी पड़ते थे। अपने माता–पिता के कुल गौरव श्री कपूरचंद जी सच्चे अर्थों में दीनों के मसीहा थे। बुंदेलखंड के तीर्थों को एक वृहद रूप देने वाले जिनभक्त रहे हैं, सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि, अहारजी, गिरारजी, नैनागिर जी के लिए किए गए प्रयास आज स्वर्णिम कीर्तिमान स्थापित कर चुके हैं। बहुत कुछ लिखने को है, परन्तु निर्धारित पृष्ठ का ही प्रयोग कर रहा हूँ, इतने में ही बहुत कुछ समझने का उपक्रम करें। मुझे यह स्वीकार करने में गर्व होता है, कि आज राष्ट्रीय स्तर पर मेरा नाम है, तो उसमें श्री कपूरचंद घुवारा जी का बहुत बड़ा अवदान है.जो अविस्मरणीय है। वह सदैव मेरी स्मृति में आदरेय रहेंगे। उनको शत्–शत् नमन।

संघर्षो को परहित में, जिनने जीवन भर झेला।
घुवाराजी की गौरवगाथा का जीवन अलबेला।।
हक के लिए लड़ो निर्भय हो, यह जीवन तो समर रहेगा।
आप भले उड़ गए कपूर से, नाम हमेशा अमर रहेगा।।

आपकी भार्या आदरणीया चाची श्रीमती भागवती घुवारा ने यावज्जीवन आपको हर मोड़ पर कदम से कदम मिलाकर साथ दिया है। यह दाम्पत्य की अतीव और संदेशपरक मिशाल है। यथासमय में उनके सुपुत्र श्री पवन घुवारा, श्री सुनील घुवारा, श्री अनिल घुवारा ने समर्पण भाव से पितृभक्ति का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है। तीनों पुत्रवधुओं ने उनकी जो सेवा सुषुश्रा की है वह अनुकरणीय है, आपके

चिरंजीव पवनजी और सुनील जी आज राजनीति में बड़ा ओहदा बनाए हुए हैं, समाजसेवा में आपकी तरह दत्तचित्त हैं,निश्चित ही आपके शेष संकल्पों को पूर्ण करेंगे।

अंत में यही कि––

बड़े गौर से सुन रहा था जमाना।
तुम्हीं चल दिए दास्ताँ कहते–कहते।।
आप गए तो हो गया, जैसे युग का अंत।
न्यौछावर तुव चरण में, कविकुल कोटि 'वसंत'।।

ऐसे श्री कपूरचंद घुवाराजी

(1) शोषित, पीड़ित, बंधित मनुषों से, हमने सुनी जुवानी,
काम परे पे काम जो आवे, ऐसों तो इक प्राणी ।
जीना है तो लड़ना सीखो, मूल मंत्र यही वाणी,
अपना हित हर कोई करत है, जिया परहित वो प्राणी ।।

(2) मुड़ बोझा कर और टैक्स चरुक से, जनता को बड़ी हैरानी,
गुठली, वेर महुआ आंदोलन की, वृद्धों से सुनी कहानी।
डाकू वागियों से लड़ी लड़ाई, अपनी प्राणों की बाजी लगाई,
बुंदेली जन खों सुखमय कर गय, कहवत आये आंख में पानी।

(3) बुंदेली की सान, शेर, और लोह पुरुष कहलाया,
बुंदेलखण्ड का गौरव है वो, परहित जीवन जी गया सारा।
ऐसे 'कर्मवीर' को नमन हमारा, 'गरीबों का मसीहा' प्यारा,
बच्चा–बच्चा नाम जानता, श्री कपूरचंद्र जी 'घुवारा'।।

(4) श्रद्धा सुमन कर रहे हैं अर्पित, भारी मन अंसुअन धारा,
बिपत परे पे की खों पुकारें, तुम तो स्वर्ग सिधारा ।
अपनी यादें अभी नहीं लिखी है, लिखी कहीं ग्रामीणों द्वारा,
सुनत लिखत जे सालें **कड़जे** ऐसे श्री कपूरचंद्र जी 'घुवारा'।।

चौधरी अभिषेक जैन, भगवाँ

मेरे मार्गदर्शक

गीतकार–गायक : रूपेश जैन, टीकमगढ़

''बने जहाँ तक इस जीवन में औरों का उपकार करुं'' ''बने जहाँ तक इस जीवन में औरों का उपकार करुं'' इन पंक्तियों को अपने जीवन का आदर्श बनाकर पूरे जीवन निभाने वाले घुवाराजी को हर व्यक्ति ने अपने दृष्टिकोण से देखा और कुछ न कुछ ऐसा पा ही लिया कि वो उनका कायल हुये बिना रह नहीं सका।

संघर्ष में हर्ष के साथ जीवन पथ पर बढ़ते जाना, शोषित और असहायों के साथ और अन्याय के खिलाफ खड़े रहना, पीड़ित को न्याय दिलाने के लिये किसी भी हद तक डटे रहना, सत्य के साथ अडिग होकर खड़े रहना, सद्चरित्र कर्तव्यनिष्ठा और धर्मपरायणता के साथ अपना जीवन जीना, ऐसे कई और गुणों को किसी एक व्यक्तित्व में ढूंढे तो तलाश संभवतः घुवाराजी पर जाकर खत्म होगी।

मैं उन सौभाग्यशाली लोगों में से एक हूँ जिन्होंने जीवन का बहुत सारा समय घुवाराजी के साथ व्यतीत किया। यथार्थ में तो मेरा सम्पूर्ण जीवन ही घुवाराजी द्वारा उपकृत है। एक भजन गायक के रूप में मुझे जो भी पहचान, सम्मान एवं प्रेम हासिल हुआ है उसका मूलाधार श्रद्धेय घुवाराजी ही हैं। किसी की छुपी हुई प्रतिभा को पहचान लेना उनका ईश्वर प्रदत्त गुण था और उसे निखरने के अवसर दिलाना उनकी प्रवृत्ति थी।

मुझे याद है वर्ष 1994 में द्रोणगिरि तीर्थ में ही, घुवाराजी ने मुझे पहली बार गाते हुए सुना था उस दिन से लेकर मेरे एक व्यवसायिक कलाकार बनने तक की यात्रा में उन्होंने सैकड़ों बार मुझे अवसर दिलाने के यथा संभव प्रयास किये। परमपूज्य सारस्वताचार्य गुरुदेव श्री देवनंदीजी महाराज के दर्शन मेरे जीवन की वो सौभाग्यशाली घड़ी थी जिसके साथ ही मेरे कल्याण का मार्ग प्रशस्त हुआ था। 2002 में मुझे गुरुदेव के प्रथम दर्शन कराके घुवाराजी ने मुझे मानों गुरु चरणों में सौंप दिया था, और जिसे गुरु अपना लें उसके कल्याण में भला क्या संदेह हो सकता है।

वर्ष 2005 में अपनी शिक्षा एम.एस.सी. (माइक्रोबायोलॉजी) पूर्ण करने के बाद जब मैं एक बड़ी कंपनी में अपनी सेवाएं दे रहा था तब भी घुवाराजी के आदेशात्मक आग्रह के कारण में छुट्टी की एप्लीकेशन देकर उनके साथ श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला चला गया, जहां मुझे जगत् गुरु स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामी के समक्ष परिचय एवं प्रस्तुति देने का अवसर मिला और महामस्तकाभिषेक 2006 में प्रस्तुति के लिये आमंत्रण मिला। महामस्तकाभिषेक में सर्वश्रेष्ठ कलाकार के रूप में स्वर्ण पदक एवं सम्माननिधि मिलना मेरे जीवन की विशेष उपलब्धियों में से एक है।

भारत वर्ष के महान श्रमण संघों में ले जाकर मेरा परिचय कराने वाले घुवाराजी के कारण ही मैं साधु–संतों की विशेष कृपा एवं आशीर्वाद का पात्र बना।

रूपेश जहां भी जाओ उस आयोजन एवं उस मंच के अनुसार तत्काल अपने शब्द रचा करो और नई–नई रचनायें सुनाया करों, ये बात कहकर हमेशा मुझे परिस्थिति अनुसार गीत रचने के लिये प्रेरित करने वाले घुवाराजी के कारण ही आज संपूर्ण देश में मेरे गीतों को इतना स्नेह मिलता है । मैं जिन आयोजनों में उनके साथ होता था और मुझे सुनकर जब गुरुजन, श्रावक श्रोतागण मुझे आशीर्वाद एवं प्रोत्साहन देते थे, तब उनकी तालियों की गड़गड़ाहट और प्रशंसा के शब्द मुझसे ज्यादा घुवाराजी को आल्हादित करते थे।

रक्त संबंध के अनुसार तो उनके तीन पुत्र, तीन पुत्रियां हैं किन्तु मुझे उन्होंने कभी भी अपने पुत्र से कम नहीं समझा, उनकी धर्मपत्नी जिन्हें हम सब प्रेम से मॉमजी कहते हैं उनका वात्सल्य भी मेरे लिये अकथनीय है। लगभग दस वर्षों पूर्व तक मेरे जीवन में हुई समस्त यात्राओं में से 75 प्रतिशत यात्रायें घुवाराजी के साथ ही हुई । कभी अकेले तो कभी सपरिवार तीर्थ यात्रायें, पर्यटन, भ्रमण किसी भी रूप में उनके साथ देश के कोने–कोने में जाने का सौभाग्य मुझे मिलता रहा। अपने शुद्ध भोजन एवं जल का नियम वो प्रतिकूलतम परिस्थिति में भी किसी से कोई अपेक्षा रखे बिना सहजता से निभाते थे।

एक वक्ता के रूप में घुवाराजी जब मंच पर खड़े होते थे तो किसी बड़े से बड़े व्यक्ति या हस्ति की उपस्थिति से भी उनकी बेबाकी में रंच मात्र भी फर्क नहीं पड़ता था। अपनी बात पूरी निर्भीकता और स्पष्ट रूप से कहने का ढंग उन्हें सबसे अलहदा बनाता था।

महान व्यक्तियों के जीवन में उपलब्धियां यूँ ही नहीं आती हैं कई बार विरोध और विषमताओं की आंधियों का सामना करते हुए हर रुकावट को धता–बताकर वे अपनी मंजिल तक पहुंचे हैं।

लगभग सभी राष्ट्रीय धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं में श्रद्धेय घुवाराजी का सहयोग एवं योगदान रहा है। श्री सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि के अध्यक्ष रहते हुए उन्होंने तीर्थ की जो सेवा की है, वो प्रत्यक्ष हम सबके समक्ष है।

घुवाराजी के जीवन की उपलब्धियों को इस छोटे से लेख में समेटना असंभव कार्य है। अंततः यही कहूँगा कि मेरे जीवन में उनका बहुत बड़ा उपकार है जिसके लिये मैं यावज्जीवन उनका ऋणी रहूंगा। उनका निःस्वार्थ प्रेम और वात्सल्य मेरे स्मृति कोश में सदैव अंकित रहेगा और जीवन में मिलने वाली समस्त उपलब्धियां आभार रूपी अर्घ्य बनकर उन्हें समर्पित रहेगी।

मैं सपरिवार उनके चरणों में अपनी हृदयपूर्ण श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ एवं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें सद्गति प्रदान कर उनका मुक्तिमार्ग प्रशस्त करें।

श्रद्धेय श्री घुवाराजी युगों–युगों तक जीवन्त रहें

–सुरेश जैन 'मारौरा'
44–भाग्यश्री कॉलोनी, विजयनगर, इन्दौर

राजनेता श्री कपूरचन्दजी घुवारा के अवसान पर, उनके सम्मान में अ.भा. शास्त्रि–परिषद् ने बुलेटिन प्रकाशित करने का संकल्प लिया, वह प्रशंसनीय है, अभिनंदनीय है। श्री घुवारा जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे, वह राजनेता होकर भी विद्वान थे, श्रावक श्रेष्ठी थे, गरीबों के मसीहा थे, समाजसेवी थे। विद्वत्जनों का समाज पर उपकार अमूल्य होता है, उनके अवदान का मूल्यांकन असंभव है, घुवाराजी ने जैनत्व के संस्कार का बीजारोपण भी किया है, जो दीर्घकाल तक फलदायी रहेगा। आपके क्रियाकलाप एवं सहजता सरलता को देखकर पूज्यश्री गणेशप्रसादजी वर्णी की पावन मूर्ति का साक्षात् दर्शन हो जाता है। घुवाराजी सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज के साथ–साथ देश के गौरवशाली व्यक्तित्व थे। हम सब पर उनका प्यार स्नेह, अपार वात्सल्य और आशीर्वाद रहता था। समस्या छोटी हो या बड़ी मिनटों में समाधान ढूंढ लेते थे। उनका वात्सल्य कठिन से कठिन परिस्थितियों से जूझने की ऊर्जा हमें देता था, कुछ दिनों से अस्वस्थ रहते हुए भी तन से, मन से, धन से प्रत्येक कार्य में सम्मिलित होते थे, अनुमोदना करते थे।

14 अगस्त 1943 को सवाई सिंघई प्यारेलालजी के घर माँ खेमाबाई जी की कोख से छोटे से ग्राम घुवारा में आपका जन्म हुआ, जो घुवारा श्री कपूरचन्दजी का उपनाम बन गया। 1962 से गृहस्थाश्रम में प्रवेशकर धर्मपत्नि श्रीमती भागवती देवी के साथ राजनीति में प्रवेश किया और 60 वर्षों तक विभिन्न प्रकार के रचनात्मक आंदोलनों के साथ–साथ विकास कार्य करते हुए विकास के मसीहा कहलाने लगे, देश की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के उच्चतम पदों पर रहकर समाज, ग्राम, जिला, प्रान्त और भारत देश का नाम ऊँचाइयों तक पहुँचाया, तीर्थ क्षेत्रों के विकास में जीर्णोद्धार में अग्रणीय भूमिका निभाई, आप साहसी और कर्मठ कार्यकर्ता थे, मध्यमवर्गीय परिवार के सुदामा थे, राजनीति और विदेश यात्रा के समय भी अपने आहार की शुद्धता रखना, तीर्थ क्षेत्रों को दान राशि संकलित कराना यह एक कला थी, दूरदृष्टि पक्का इरादा करके घर से निकलते थे, अंतिम मंजिल तक पहुँचकर ही विश्राम करते थे।

मेरा परिचय घुवाराजी से स्व. श्री नरेन्द्र विद्यार्थी जी ने 27.01.1979 को छतरपुर में कराया। मैं इस दिन कृषि विभाग में अपनी उपस्थिति (सर्विस) हेतु गया था, मेरा सौभाग्य था कि शासकीय सेवा में आने के पहले दिन से मेरा परिचय हो गया। उसके बाद श्रवणबेलगोला के भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक 1981, 1993, 2006 में महीनों साथ रहकर विशिष्ठ सहयोग मिला तब से अनेक बार आपके मार्गदर्शन का लाभ मिला। आप हर समाधान के पर्याय थे, आपको सैकड़ों सम्मान पत्र एवं उपाधियों से विभूषित किया। आप मुनिभक्त एवं सफल सेनापति थे, देश के शताधिक आचार्य, आर्यिका, मुनि महाराजों का आशीर्वाद प्राप्त था, उन्हीं के आशीर्वाद से आपने इतनी लम्बी यात्रा तय की है सभी को साथ लेकर चलने की आपकी क्षमता को सभी जानते थे। आप स्वयं एवं आपका पूरा परिवार धार्मिक है।

यह आपको पैतृक विरासत मिली आपने जैन संस्कृति संरक्षण संवर्धन के लिये देश में एक अलख जगा रखी थी।

बोलता घुवारा नाम से आपका 400 पृष्ठीय अभिनंदन ग्रंथ देव–आस्था जन कल्याण समिति पुस्तकालय टीकमगढ़ ने वर्ष 2016 में प्रकाशित कराया जिसमें देश के प्रमुख आचार्य, आर्यिका मुनिराजों ने अपना आशीर्वाद एवं विद्वान् श्रावक, श्रेष्ठियों ने शुभकामनाएँ दीं। घुवाराजी की यशकीर्ति, प्रतिष्ठा को युगों–युगों तक जीवन्त रखा जावेगा।

मैं अपनी ओर से मरौरा परिवार की ओर से ऐसे महामानव के प्रति अपनी विनयांजलि प्रस्तुत करता हूँ।

यही प्रार्थना वीर से अनुनय से कर जोड़।
हरी भरी दिखती रहे धरती चारों ओर ।।

समाज हित के साथ–साथ आत्महित के प्रति सचेष्ट घुवारा जी का व्यक्तित्व अविस्मरणीय है, राज्य सरकार में मंत्री समकक्ष पद पर रहते हुए भी, उनका शोध–भोजन व्यवस्था गाड़ी में साथ–साथ रहती थी। उनमें संयम, त्याग की भावना प्रबल थी।। विनम्र श्रद्धांजलि।।

अजित शास्त्री
अलवर

जनता के पक्ष में हुंकार भर कर न्याय दिलाने वाले, जन–जन के दिलों पर राज करने वाले, सबके चहेते, समाज गौरव, राष्ट्र गौरव, गरीबों के सहारे, जैन समाज के दुलारे, हमारे अपने आज हम से विदा हो गए। निरक्षरों की भाषा, गरीबों के मसीहा, जितने भी नाम मिले, आज सब बेनाम हो गए।

उनके काम, उनके नाम को सदैव आलोकित करते रहेंगे। वह तन से दूर हुए हैं, मन से कभी दूर नहीं हो सकते। उनकी स्मृति सदैव हमारा कर्तव्य पथ आलोकित करेगी।

मा. चन्द्रभान एवं समस्त बारव परिवार
घुवारा

प्रबंधकीय व्यवस्था के सफल संचालक आदरणीय घुवाराजी

– पं. रमेशचन्द्र शास्त्री (भोंयरा)
घुवारा, जिला–छतरपुर (म.प्र.)

सम्माननीय श्री कपूरचन्द्रजी घुवारा के व्यक्तित्व–कृर्तत्व पर यदि हम दृष्टि डालें तो एक लघु बालक के चंद्रमा पकड़ने की इच्छा शक्ति के समान होगा, उनका व्यक्तित्व जहां सामाजिक असमानता को समानता में परिवर्तित करना है वही उनकी साहसिक शैली एवं कार्य के प्रति निष्ठा का प्रतीक समझ में आता है इसलिये लोग उनसे प्रभावित होकर उनके कदम पर कदम मिलाकर चलने को उत्साहित रहते थे।

प्रबंध का सुचारु संचालन किस प्रकार किसी कार्य की योजना बनाना योजना को कार्य में परिणित करने के लिये संगठन, निर्देशन, प्रबंधन अर्थ की व्यवस्था, उद्देश्य की पूर्ति में संघर्ष, सहनशीलता और साहस से करते थे।

सन् 1992 में द्रोणगिरि प्रबंध समिति के अध्यक्ष का पद ग्रहण करके आचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज का पावन वर्षायोग का सफल संचालन करके धार्मिक चेतना जगाई।

परमपूज्य आचार्य शिरोमणि श्री 108 विद्यासागरजी महाराज का परम आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि से अनेकबार प्रतिनिधि मण्डल के साथ आचार्यश्री को द्रोणगिरि आगमन के लिये आशीर्वाद प्राप्त किया।

सन् 1998 में अखिल भारतीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी प्रधान कार्यालय मुम्बई के सम्माननीय अध्यक्ष स्व. श्री रमेशजी साहू और महामंत्री श्री एस.के.जैन (आई.ए.एस.) के समक्ष श्री भागचन्द्रजी (पीली दुकान) ने प्रस्ताव दिया कि भारतवर्ष के तीर्थक्षेत्रों में प्रशिक्षित पुजारी–प्रबंधक और प्रतिष्ठाचार्यों का अभाव है इसके लिये एक ऐसी संस्था का चयन किया जाये जो कि समाज में विधि–विधान आगमानुसार सम्पादित कर सकें साथ ही क्षेत्रों की व्यवस्था के लिये व्यवस्थित प्रबंधक उपलब्ध हो सकें। घुवाराजी ने इस प्रस्ताव की उपयोगिता को समझकर प्रबंध एवं ट्रस्ट कमेटी से अनुमोदना करवाकर इस कार्य को विशेष रूप से प्राथमिकता दी और तीर्थक्षेत्र कमेटी मुम्बई से प्रबंधन प्रशिक्षण संस्थान द्रोणगिरि में खोला जाये, प्रस्ताव पारित करवा करके इस संस्था के उद्देश्य एवं सम्पूर्ण व्यवस्था की जिम्मेदारी लेकर समाज के गरीब, असहाय, बेरोजगार युवकों को प्रशिक्षण देकर उन्हें रोजगार प्रदान करने का दृढ़ संकल्प लिया और सन् 1999 में पं. श्री ज्ञानचन्द्रजी व्याकरणाचार्य को प्राचार्य पद का दायित्व देकर करीब 40 युवकों को विभिन्न तीर्थक्षेत्रों में सेवाएं देकर रोजगारमुखी बनाया।

प्रबंधन क्या है? एक व्यवस्था का प्रबंध कैसे, कब, किन विधियों से अल्प समय में और कम व्यय में पूर्ण किया जा सके ये घुवाराजी की शैली चातुर्य कला साहस और अडिग परिश्रम का प्रतीक समझा जाता है। जो व्यक्ति उनके साथ रहे हैं या उनकी विचारधाराओं का जिन्होंने अनुशरण किया वह एक सफल जीवनशैली जी रहे हैं।

प्रबंधन प्रशिक्षण संस्थान में विद्यार्थियों को विभिन्न समय एवं सत्रों में शिक्षण कार्य कराते हुए उन्हें बताया कि अपने परिवार में किस तरह जीवन को जीना, शिक्षा किस प्रकार से प्राप्त करना, अपना स्वास्थ्य कैसे अच्छा रखना, जैन संस्कृति में त्याग और संयम को किस प्रकार से पालन करना, विभिन्न विचारधाराओं के व्यक्तियों से कैसे सामंजस्य बनाना, खर्च कम करते हुए स्वच्छ जीवन उन्नत बनाना आदि शैक्षणिक कार्यों को विद्यार्थियों के लिये प्रदान किया। आज देखते हैं कि घुवाराजी द्वारा दी गई शिक्षा से अतिशय क्षेत्र पैठण (महाराष्ट्र) में पदस्थ विद्यार्थी श्री अरविन्द्रकुमारजी रामटोरिया मैनेजर का पद 20 वर्षों से सम्भाल कर क्षेत्र की सुचारू व्यवस्था सम्पादित कर रहे हैं। ऐसे करीब 300 विद्यार्थी विभिन्न प्रान्तों के तीर्थक्षेत्रों में, फर्मों एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों में अपनी सेवाएं देते हुए अपने परिवार का भरण–पोषण कर रहे हैं।

अंत में घुवाराजी के प्रबंधन संबंध में जितना लिखा जाय उतना कम है क्योंकि उनके कार्य करने की शैली एक बात की ही प्रसिद्धि की ओर इंगित करती है – **'जीना है तो लड़ना सीखो, सही बात पर अड़ना सीखो'** अगर इस बात को हम अपने जीवन में उतार लेंगे तो उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

प्रबंधन प्रशिक्षण संस्थान द्रोणगिरि में प्राचार्य पद का करीब 15 वर्षों से निर्वहन करते हुए करीब 500 छात्रों को ज्योतिष, वास्तु, हस्तरेखा, विधि–विधान, कम्प्यूटर अकाउण्ट एवं प्रबंधन का प्रशिक्षण प्रदान करके आपके शुभाशीर्वाद एवं मार्गदर्शन में उन्हें रोजगार प्रदान करवाया और उन्हें आप जैसा बनने का मार्गदर्शन दिया। समस्त संस्था के छात्र एवं कार्यकर्तागण आपको श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परिवार के सभी सदस्यों को सुखशांति की कामना करते हैं।

म. प्र. शासन के पूर्व मंत्री एवं मध्य प्रदेश की राजनीति के प्रभावी नेता, जैन समाज के मूल स्तम्भ, जन–जन के लोकप्रिय श्री दादा कपूरचंद्र जी घुवारा अब हमारे बीच नहीं रहे, जिनके चलने से धरती हिलती थी, जिनके पास हर समस्या का समाधान होता था, गरीबों और निम्न वर्ग के मसीहा कहे जाने वाले आदरणीय दादा आपकी कमी सदैव खलेगी। जो हमेशा अपने सिद्धांतों पर जीते थे एक बार उनके साथ तूफान में सफर करने का अवसर प्राप्त हुआ इस बीच उनसे कई मुद्दों पर चर्चा भी हुई।

दीपक जैन, अजनौर

घुवाराजी की जीवन ज्योति

प्रो. एस.के.जैन
प्राचार्य– श्री गणेशप्रसाद वर्णी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
घुवारा, जिला–छतरपुर (म.प्र.)

'घुवारा जी' नाम से प्रख्यात घुवारा की शान पूर्व विधायक एवं म.प्र. हस्तशिल्प विकास निगम के पूर्व अध्यक्ष व अनेक सामाजिक संस्थाओं एवं तीर्थ क्षेत्रों के पदाधिकारी, संरक्षक परम श्रद्धेय श्री कपूरचंद्रजी घुवारा के द्वारा लगाया गया बोधि वृक्ष जिसका अध्यक्ष पद भी अपने द्वारा सुशोभित रहा श्री गणेशप्रसाद वर्णी स्नातकोत्तर महाविद्यालय आज घुवारा नगर का गौरव कहा जाता है और चारों तरफ अपनी किरणें बिखेर रहा है।

परम श्रद्धेय घुवाराजी की निर्भीकता, सहजता, लगनता एवं उनकी दूरदर्शिता के कारण ही उन्हें शेर–ए–बुन्देलखण्ड, लौह पुरुष, बुन्देलखंड के गांधी आदि कई उपाधियों से अलंकृत किया गया। घुवारा नगर का विकास एवं घुवारा का गौरवशाली बोधिवृक्ष महाविद्यालय इसका एक जीता जागता उदाहरण है। 22 जुलाई 1984 में स्थापित इस महाविद्यालय की नींव घुवारा नगर में आयोजित पंचकल्याणक महोत्सव के माध्यम से डाली गयी। जिसके अध्यक्ष भी परम सम्माननीय घुवाराजी थे।

घुवाराजी की दूरदर्शिता एवं सूझबूझ से यह महाविद्यालय घुवारा तब स्थापित किया गया जब इसके आसपास 40 कि.मी. तक कोई महाविद्यालय नहीं था। सागर, टीकमगढ़, छतरपुर शहर मुख्यालयों को छोड़कर बंडा, शाहगढ़, बड़ामलहरा तथा बकस्वाहा तक में कोई महाविद्यालय नहीं था।

उस समय इस पिछड़े एवं गरीब क्षेत्र में महाविद्यालय न होने से अनेकों होनहार छात्र/छात्रायें उच्च शिक्षा से वंचित रह जाते थे। जब श्री घुवाराजी का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ तो उन्होंने इस क्षेत्र में घुवारा में महाविद्यालय खोलने का संकल्प लिया।

सन् 1984 में एक गजरथ महोत्सव आयोजित कर उसकी आय से इस महाविद्यालय को स्थापित किया गया। इसके उपरांत इसके विकास हेतु जन–जन से चाहे वह व्यवसायी हो, कर्मचारी हो, मजदूर हो, सब्जी बेचने वाला या अन्य कोई धनी मध्यम या उच्च वर्ग का व्यक्ति हो अपनी क्षमता अनुसार एक–एक रुपये की राशि से लाखों रुपये तक की दान राशि एकत्रित कर इस महाविद्यालय रूपी ज्ञान वृक्ष को उन्नत किया गया। इस तरह इस महाविद्यालय के विकास एवं संचालन में सभी वर्ग के व्यक्तियों ने तन–मन–धन से सहयोग दिया।

महाविद्यालय के प्रारंभिक काल में मात्र 35 छात्रों को प्रवेश देकर बी.ए. एवं बी.कॉम. की कक्षायें सुसंचालित की गयीं। आज बढ़कर इस महाविद्यालय में 700 छात्र/छात्रायें अध्ययनरत हैं तथा यह महाविद्यालय पर्याप्त भवन, लाइब्रेरी, खेलकूद मैदान, परीक्षा केन्द्र आदि सुविधाओं से परिपूर्ण है और आज यहां तीन विषयों में स्नातकोत्तर कक्षायें भी सुसंचालित की जा रही हैं तथा आज यह महाविद्यालय आर्थिक रूप से भी स्वावलंबी है।

महाविद्यालय की समिति श्री दिगम्बर जैन समिति जिसके अध्यक्ष पद पर परम आदरणीय घुवाराजी से सुशोभित रहा, ने समय–समय पर महाविद्यालय स्टॉफ को सम्मानित कर छात्र/छात्राओं को पारितोषित देकर तथा महाविद्यालय के विकास हेतु अनेक योजनायें कार्यान्वित कर इस वट वृक्ष को ऊँचाइयों तक पहुंचाया तथा अपने कार्यकाल में घुवारा नगर में भी विकास की गंगा बहायी।

आज इस महाविद्यालय का वह विकास पुंज एवं घुवारा नगर का गौरव हम सभी के बीच भले ही नहीं है लेकिन उनके द्वारा किये गये विकासात्मक कार्यों की स्मृतियां हमेशा उन्हें पास होने का अहसास दिलाती हैं तथा हमें अपने कर्तव्य बोध का पाठ पढ़ाती हैं।

वह जहां भी हों, ऐसे अमरदीप को समस्त महाविद्यालय परिवार हार्दिक भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है तथा उनके सुखमय जीवन की कामना करता है और उनके पारिवारिक जनों से इसी तरह के सहयोग की अपेक्षा करता है।

मंगल भावना के साथ....!

मेरे आदर्श, मेरे पिताजी...''लौहपुरुष''

पिता जी आप तो हर परिस्थिति में मुस्कुराते रहते थे, आपका वो अंदाज अब हम कहाँ से लायें ! मुझे याद है जब भी कभी मैं निराश होता था या मायूस होता था तो आप मुझे कहते थे कि अपनी सोच सकारात्मक रखो और संयम से काम लो सब ठीक हो जाएगा । अस्पताल में जब आप थे तब भी आपने यही कहा कि परिवार का, अपने लोगों की हिम्मत व हौसला बनाकर रखना ।

चारों तरफ आपके चाहने वाले बेहद दुःखी हैं, सब अपने को अनाथ सा महसूस कर रहे हैं, हमने देखा है लोगों के चाहे पारिवारिक मामले हों या राजनैतिक, आपसी मतभेद हों या कोई गोपनीय बात सब आपको सुनाकर स्वयं को हल्का महसूस करते थे और आप भी बड़ी से बड़ी बात को छोटा करके उनको सुकून दे देते थे ! बड़ों के प्रति सम्मान देने का तरीका, बच्चों के साथ एकदम घुलमिल जाना, युवाओं को और हीरो कह देना आज सबको याद आ रहा है। इतने बड़े राजनैतिक जीवन में कभी किसी का दिल से विरोधकर नुकसान नहीं पहुँचाया, राजनीति भी की तो दलों से ज्यादा दिलों की, आपने हमेशा जोड़ना और छोड़ना सिखाया – अच्छा जोड़ो और खराब छोड़ो !

आप कहा करते थे किसी की लाइन छोटी करने से अच्छा है अपनी लाइन बड़ी करके रखो ! आप कहा करते थे सबसे पहले गरीब, कमजोर और सर्वहारा वर्ग की मदद के लिए तैयार रहो ! आपने स्वयं को कभी जाति और धर्म के बंधन में नहीं बांधा, बड़े – बड़े ओहदे पर रहकर भी कभी किसी ने आपके चेहरे पर घमंड का एहसास नहीं किया, समाज के प्रत्येक वर्ग को आपकी कार्यशैली पर पूर्ण भरोसा रहता था ! किसान की मैड़ पर बैठकर उनके सुख – दुख में शामिल रहना, उनकी मुसीबत के समय जब आपका हाथ उनके कंधे पर होता था तो उन्हें बड़ी राहत मिलती थी। किस–किसकी कहें, बहुत बड़ा परिवार बनाकर गये हैं आप, सबका दुलार और आशीष मेरे साथ है !

बस पिताजी मुझमे भी इतनी हिम्मत देना कि मैं भी कभी भूल से भी किसी का दिल मेरे कारण न दुखे, ऐसा मैं तनिक भी कर पाया तभी आपके प्रति मेरी सच्ची श्रद्धाजंलि होगी !!

पवनघुवारा 'भूमिपुत्र'

पिताजी की सीख

– **सुनील घुवारा**

मनुष्य जैसे सपने देखता है, कल्पना करता है, महत्वाकांक्षा पालता है, उसी रूप में उसके व्यक्तित्व का विकास होता है। व्यक्तित्व तब बनता है, जब कोई निश्चित लक्ष्य हो। यही लक्ष्य सफलता का पहला कदम है।

लक्ष्य

- लक्ष्य निश्चित व साफ हो तथा लक्ष्य को पूरा करने के लिए दृढ़ निश्चय व लगन हो। मन में निराशा के भाव न हो। जिस व्यक्ति के मन में निराशा आ जाती है, वह अपने लक्ष्य में कामयाब नहीं हो सकता है।
- जो अनुकूलता और प्रतिकूलता में सम रहता है, उसके लिए लक्ष्य को प्राप्त करना आसान होता है।

समय

- इंसान तभी कामयाब हो सकता है, जब वह समय का महत्त्व समझे हर काम समय पर करने की आदत डाले।
- जो समय को नहीं पहचानता, वह अनेक उपलब्धियों से वंचित रह जाता है।
- जीवन को सफल बनाने के लिए तुरन्त काम करें और टाल मटोल की आदत छोड़ दें।
- समय को बेकार खोने वाले के पास अन्त में पश्चाताप के सिवाय कुछ शेष नहीं रहता।

विनम्रता

- छोटी–छोटी विनम्रता इंसान को आगे ले जाती है। जहां तक हो सके हर किसी से विनम्रता से पेश आयें, तभी आप दूसरों की नजरों में ऊँचा उठ सकेंगे।
- जिस व्यक्ति में जितनी विनम्रता होती है, वह उतनी ही अधिक ऊँचाई प्राप्त करता है।
- विनम्रता सारी खूबियों की बुनियाद है यह महानता को दर्शाती है और बड़प्पन की पहचान है।

वाणी

- वाणी के महत्त्व को समझें और सही समय पर सही शब्द सही लहजे में व्यक्त करना सीखें।
- वाणी पर नियंत्रण पाकर विश्व पर विजय पायी जा सकती है। सब कुछ देखो, सब जानों, पर सब मत कहो । यदि वाणी पर नियन्त्रण है तो धीरे–धीरे मन के क्रोध को जीता जा सकता है।
- व्यक्ति की शालीनता और अशालीनता की पहचान उसकी वाणी से होती है।
- अगर वाणी पर संयम नहीं रहा तो सदा मिलकर रहने वाले भी कट्टर शत्रु बन जाते हैं। हर शब्द सोच समझ कर बोलें।
- इस बात का ध्यान रखें कि वाणी ही विश्वास पैदा करती है और वही संदेह भी पैदा करती है।
- मौन रहना अच्छी बात है, पर यदि बोलना पड़े तो आवश्यक है कि कटु कर्कश और निरर्थक भाषा से बचा जाए। संघर्ष करने वाले लोग मुश्किल समय में ही शिखर पर पहुँचते हैं।

राजनेताओं द्वारा घुवाराजी को श्रद्धांजलि

पूर्व विधायक और हथकरघा विकास निगम म.प्र. के पूर्व अध्यक्ष श्री कपूरचंद जैन घुवारा का निधन दुःखद है। ईश्वर उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान दें एवं परिजनों को दुःख की इस घड़ी में साहस दें। सादर श्रद्धांजलि।

कैलाश विजयवर्गीय
महासचिव–भाजपा

बुन्देलखण्ड के लौह पुरुष के नाम से विख्यात पूर्व विधायक, भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री कपूरचंद्र घुवाराजी का निधन अपूरणीय क्षति है। परिवारजनों के प्रति शोक–सम्वेदना। सादर श्रद्धांजलि।

वी.डी.शर्मा, प्रदेश अध्यक्ष–भाजपा एवं
खजुराहो लोकसभा सांसद

आदरणीय श्री कपूरचंदजी घुवारा का निधन दुःखद है। वे हमेशा दूसरों की भलाई के लिए लड़ते रहे। राजनीति एवं समाज ने एक कर्मठ, ईमानदार व्यक्तित्व खो दिया। उनके कार्य उन्हें सदैव जीवंत रखेंगे। उनसे अनेक बार मुलाकात हुई, चर्चा–परिचर्चा हुई। भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

प्रदीप जैन 'आदित्य'
पूर्व केन्द्रीय मंत्री–भारत सरकार

पूर्व विधायक और हस्तकरघा विकास निगम म.प्र. के पूर्व अध्यक्ष श्री कपूरचंद घुवारा का निधन दुःखद व अपूरणीय क्षति है। परमात्मा उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान दें एवं परिजनों को इस दुःख की घड़ी में साहस दें। ओम शांति

पारस जैन, पूर्व मंत्री
एम.एल.ए., उज्जैन (म.प्र.)

भाजपा के पूर्व विधायक एवं म.प्र. हस्तकरघा विकास निगम के पूर्व अध्यक्ष श्री कपूरचंदजी जैन घुवारा के निधन का दुःखद समाचार मिला। ईश्वर दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दें। ऊँ शांति।

सुरेन्द्र पटवा, पूर्व पर्यटन मंत्री, म.प्र. सरकार
विधायक–भोजपुर (म.प्र.)

शेरे–ए–बुन्देलखण्ड, संघर्षशील, पूर्व विधायक एवं पूर्व दर्जा प्राप्त केबिनेट मंत्री एवं मेरे मार्गदर्शक आदरणीय श्री कपूरचंदजी घुवारा का देह परिवर्तन का समाचार सुनकर अत्यन्त दुःख हुआ। उनके साथ मैंने अनेक राजनैतिक एवं सामाजिक मंचों को तो साझा किया है, मेरा उनसे पारिवारिक रिश्ता था। वे अपनी अनूठी कार्यशैली, बेबाक स्पष्ट वाणी के लिए जाने जाते थे। गरीब, किसानों के लिए वे मसीहा थे। जीवनभर संघर्ष करते हुए जनता की सेवा के लिए संलग्न रहे। समाज के वे कुशल संरक्षक थे। उनका जाना मेरी व्यक्तिगत क्षति है। उनके कार्य सदैव जनमानस में उन्हें जीवंत बनाये रखेंगे। भावपूर्ण श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

राजेश राजी पत्रकार, बकस्वाहा पूर्व पीसीसी कांग्रेस
उपमंत्री–दिग. जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिर एवं द्रोणगिर

शोक संदेश

सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में अपनी राजनैतिक एवं सामाजिक प्रतिष्ठा रखने वाले, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के सदस्य एवं श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र, द्रोणगिरि के अध्यक्ष श्री कपूरचन्द जी जैन घुवारा का निधन समाज की अपूरणीय क्षति है। उन्होंने भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी से भाजपा तक का सफर किया और दो बार विधायक चुने गए। उन्हें कैबिनेट मंत्री का दर्जा देकर हस्तशिल्प निगम का अध्यक्ष बनाया गया। वे विद्वानों के प्रति आदर भाव रखते थे। बुन्देलखण्ड के सैकड़ों लोगों को उच्च पद दिलाने एवं आगे बढ़ाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।वे सामाजिक पंच की भूमिका में थे। द्रोणगिरि क्षेत्र के विकास में उनका विशेष योगदान है। मतभिन्नता के वावजूद वे मिलनसार सभी के प्रति बने रहे। वे सदा याद आते रहेंगे। हार्दिक श्रद्धांजलि।

डॉ.सुरेन्द्र कुमार जैन भारती, बुरहानपुर
महामन्त्री– विद्वत् परिषद्

श्री अ.भा. दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के सक्रिय सदस्य बुन्देलखण्ड के लौह – पुरूष नाम से विख्यात श्री कपूरचन्द्र जी घुवारा राजनैतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में प्रख्यात रहे हैं, पूरे देश एवं विशेष रूप से बुन्देलखण्ड में राजनैतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में प्रख्यात रहे हैं। आप मध्यप्रदेश हस्त शिल्प निगम के अध्यक्ष एवं दो बार विधायक भी रहे हैं। श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि, अध्यक्ष आदरणीय श्री कपूरचंद्र जी घुवारा के 21 अप्रैल 2021 को निधन होने से देश और समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। ऐसे जुझारु नेतृत्व को भावभीनी श्रद्धांजलि। नमन ।

डॉ . भागचंद्र जैन 'भास्कर', डॉ . महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज'
श्री अ.भा. दि . जैन विद्वत्परिषद्

काल सिंह ने मृग चेतन को घेरा भव वन में।
नहीं बचाबन हारा कोई यूं समझो मन में।।

आज एक ऐसे महान व्यक्तित्व के धनी, जैन समाज की आन–बान–शान समाज रत्न, सिद्ध क्षेत्र द्रोणागिरी के अध्यक्ष परम आदरणीय श्री कपूर चंद जी घुवारा पूर्व मंत्री, पूर्व विधायक एवं सामाजिक कई संस्थाओं के अध्यक्ष के बारे में स्वर्गीय लिखते हुए कलम चलाना मुश्किल हो रहा है। कैसे लिखूं कि आज वह समाज की निधि अब हमारे बीच में नहीं रही लेकिन आयु कर्म प्रबल है सो वह अपना ग्रास बना ही लेता है लेकिन उनके जीवन की आदर्शता हमेशा उनके पद चिन्हों पर चलने का संदेश देगी।

अतिशय क्षेत्र बंधा दी में विराजमान गुरु माँ विज्ञानमति माताजी को जब मैंने उनके जाने का संदेश सुनाया तो माताजी ने गुरु भक्ति के बाद कहा की मुरली भाई मैंने घुवारा जी जैसा आदर्शवादी नेता नहीं देखा जैसे कोयले की खदान में बिना दाग लगे कोई निकला हो लेकिन घुवारा जी के बारे में जो मैंने सुना है की वह राजनीति में रहकर जैन धर्म का पालन करने के लिए हमेशा अपने टिफिन का भोजन करते थे और छना पानी पीते थे एवं बगैर जूता चप्पल के नंगे पैर चलते थे और जहां मुनिराज एवं आर्यिका का संघ विराजमान हों वहां जाकर उनकी वंदना करते थे। वह बुंदेलखंड के लिए शेरे दिल थे इसीलिए लोग उन्हें लोह पुरुष भी कहते थे उनकी आत्मा निश्चित ही समोशरण में विराजमान होने लायक है। मेरा विश्वास है आपके जाने से जितनी भी क्षेत्र कमेटियां हैं उनका एक सलाहकार एवं संरक्षण करने वाला चला गया। उस रिक्त स्थान की पूर्ति होना असंभव है।

मैं अजितनाथ भगवान (बंधा जी वाले बाबा) से प्रार्थना करता हूँ, गुरुदेव विद्यासागर जी महामुनिराज एवं आर्यिका विज्ञानमति माताजी से प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत आत्मा को सद्गति मिले एवं शोकाकुल परिवार को दुख सहने की शक्ति प्रदान हो, इस भावना के साथ प्रबंध कार्यकारिणी कमेटी ट्रस्ट कमेटी एवं रजत मंदिर निर्माण कमेटी बंधा जी की ओर से आदरणीय दादा जी के चरणों में विनम्र श्रद्धांजलि श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ ।

चौधरी मुरली मनोहर जैन
अध्यक्ष–अतिशय क्षेत्र बंधा जी

श्री कपूरचंद्र जी जैन घुवाराजी के देव गति गमन होने पर भारी मन से भाव पूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं एवं ईश्वर उन्हें अपने चरणों मै जगह दे ऐसी प्रार्थना करते हैं।

विनय सुनबाहा
महामंत्री–अतिशय क्षेत्र पपौराजी

मुखर आवाज हुई शान्त

जनता के पक्ष में हुंकार भर कर न्याय दिलाने वाले, जन–जन के दिलों पर राज करने वाले, सबके चहेते, समाज गौरव, राष्ट्र गौरव, गरीबों के सहारे, जैन धर्म के दुलारे, हमारे अपने दादा श्री कपूरचंद्रजी घुवारा आज हम से विदा हो गए, निरक्षरों की भाषा, गरीबों के मसीहा, जितने भी नाम मिले आज सब बेनाम हो गए। उनके काम उनके नाम को सदैव आलोकित करते रहेंगे। वह तन से दूर हुए हैं मन से कभी दूर नहीं हो सकते, उनकी स्मृति सदैव हमारा कर्तव्य पथ आलोकित करेगी। परिवार जनों को असीम दुःख सहने की शक्ति प्राप्त हो। इसी भावना के साथ.नवागढ़ परिवार का दादा को शत्–शत् नमन।

समस्त पदाधिकारीगण, अतिशय क्षेत्र नवागढ़

समाचार सुनकर ऐसे लगा जैसे दुनिया लुट गई हो। एक महान व्यक्तित्वशाली व्यक्ति,समाज शिरोमणि, महान तीर्थ भक्त, विकास पुरुष, गरीबों के मसीहा, बुन्देलखण्ड का शेर, द्रोणगिरि के प्राण ,श्री कपूरचंद घुवारा जी पूर्व विधायक, अध्यक्ष श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि ट्रस्ट के निधन से अत्यंत व्यथित हूँ। आज ऐसे लग रहा जैसे सब कुछ लुट गया हो। हे भगवन! इस दुःख को सहन करने की शक्ति दो। इस महान आत्मा को सद्गति प्राप्त हो।

कपिल मलैया, भागचंद जैन
(पीली दुकान), द्रोणगिरि तीर्थ

श्री कपूरचंद्र जैन घुवारा जी नही रहे। बुंदेलखंड की राजनीति में दशकों तक अपनी अलग पहचान रखने वाले श्री कपूरचंद जी जैन सच्चे जननायक थे। हमेशा जनता के सुखदुःख में साथ रहने वाले आप को सभी लोग घुवारा उप नाम से जानते थे। आप बुंदेलखंड के टीकमगढ़ छतरपुर दमोह जिलों में अत्यधिक लोकप्रिय थे। आप पिछली शिवराज सिंह सरकार में दर्जा प्राप्त केबिनेट मंत्री थे। आपकी राजनीतिक विरासत को आपके पुत्र श्री पवन जी भलीभांति सम्भाल रहे हैं। आपके जाने से समूचे बुंदेलखंड में जैन समाज की बहुत बड़ी राजनीतिक क्षति हुई है। आप ने पिछले 5 वर्षों से राजनीतिक संन्यास ले लिया था। आप को विनम्र श्रद्धांजलि, ईश्वर आप को सद्गति प्रदान करे।

पं. त्रिलोकचंद जैन, बड़ागाँव

इस हृदयविदारक समाचार से एक बार ऐसा खालीपन महसूस हो रहा है कि नेता हुए, हैं, होते रहेंगे लेकिन टीकमगढ़ के परंपरागत ऐसे नेता अब दुर्लभ हैं जिनका संघर्ष जनहित में ही चलता रहा हो। अब संघर्ष तो है लेकिन वह केवल स्व हित में ही, जनहित पर विचार करने वाले नेताओं की तो मानो आखिरी किस्त ही चुक गयी। भाई कपूर चंद्र घुवारा भी हमसे बिछुड गये।

"बीन बीन फुलवा लगाई बडी रास
उड गये फुलवा रह गयी बास।"

और उस बास की अब ढेर सारी स्मृतियाँ ही शेष हैं। क्या भूलूँ क्या याद करूँ? बस,उस भूमिपुत्र के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि। ओइम शान्ति–शान्ति–शान्ति ।

पं. गुणसागर सत्यार्थी
कुण्डेश्वर, टीकमगढ़

श्रीमान कपूरचंद्र घुवाराजी का निधन जैन समाज की ही नहीं ईमानदार राजनीति की भी अपूरणीय क्षति है। एक दशक से भी अधिक हुआ जब मुझे उनसे मिलने का सौभाग्य मिला था। गिरनार जी की समस्या का तात्कालिक समाधान निकलवा देने के लिए गुजरात के तत्कालीन राज्यपाल पं. नवल किशोर जी शर्मा के प्रति आभार प्रकट करने के लिए जैन संस्कृति रक्षा मंच ने जयपुर में एक अभिनंदन समारोह आयोजित किया था। रक्षा मंच के अध्यक्ष की हैसियत से मैंने आदरणीय घुवारा जी को भी इसमें आमंत्रित किया था। आमंत्रण का मान रख कर वे जयपुर पधारे। उस समारोह में उनने जो भाषण दिया वह आज भी लोगों के जहन में है। न केवल वे साधारण कपडों में साधु–संत की भांति नंगे पैर ही आए थे वरन अपना भोजन भी साथ ही लेकर आए थे। उनकी यह छवि आज भी जहन में है। वे जीवन पर्यंत जैन संस्कृति रक्षा मंच के मार्गदर्शक रहे। उनको सादर श्रद्धाञ्जलि तथा बारम्बार नमन।

मिलाप चंद जैन डंडिया, जयपुर
जैन संस्कृति रक्षा मंच

परम सम्मानीय, समाज रत्न, शेरे बुन्देलखण्ड, गरीबों के मसीहा, अन्याय और अत्याचार के खिलाफ लड़ने वाले, क्षेत्र में विकास की गंगा बहाने वाले, समाज, धर्म, तीर्थ क्षेत्रों और धर्मायतनों की रक्षा करने वाले पूर्व विधायक, पूर्व मंत्री सहित सैकड़ों पदों को सुशोभित कर पूरे जग में घुवारा का नाम अमर करके आज हम सबके बीच से आदरणीय कपूर चन्द्र जी घुवारा चले गए। यह समाचार सुनकर समूची बड़ा मंदिर कमेटी अत्यंत दुःखी है। यह सम्पूर्ण जैन समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। हम सभी श्री वीर प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति दें।

श्री दि. जैन बड़ा मंदिर समिति, घुवारा

घुवाराजी के नाम से विख्यात श्री कपूरचन्दजी घुवारा अविभाजित तत्कालीन म. प्र. में कम्युनिस्ट विधायक के रूप में चुने गए थे। कुछ समय पूर्व उन्हें केबिनेट मंत्री का दर्जा भी दिया गया था। जब सरकार के विरोध में विधानसभा में घुवारा जी के भाषण होते थे तब मुख्यमंत्री सहित पूरा सदन उनके भाषण को बड़े ध्यान से सुनते थे। आपने अन्य समाज के साथ–साथ जैन समाज के कल्याण के लिये बहुत काम किये सभी के दुःख–दर्द बड़े ध्यान से सुनते थे।

उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी कि राजनीति एवं समाजसेवा में रहते हुए उन्होंने रात्रि भोजन नही किया। मैंने उनके साथ कई यात्राएं की उनके बैग में हमेशा पानी छानने का लोटा, छन्ना जरूर रहता था। कई बार शुद्ध सात्विक भोजन न मिल पाने के कारण वे सिर्फ फलाहार ही करते थे। आचार्यश्री के प्रति उनका काफी समय अत्यंत निकट जुड़ाव रहा। डोंगरगांव पंचकल्याणक में काफी अस्वस्थ होने के बाद भी आचार्यश्री के आहार के बाद आगमन के समय घुवारा जी चरणस्पर्श का कोई अवसर नहीं छोड़ते थे। उस समय आचार्यश्री की मोहक मुस्कान एवं आशीर्वाद सभी को प्रभावित कर जाता था। आचार्य विरागसागरजी, आचार्य देवनन्दीजी, आचार्य विशुद्धसागरजी महाराज से भी काफी जुड़े हुए थे।

गोलापूरब जैन समाज भिलाई, दुर्ग

आदरणीय घुवारा जी का निधन सम्पूर्ण जैन समाज की अपूरणीय क्षति है। बुन्देलखण्ड का शेर कहलाने वाले घुवारा जी मृदु भाषी, सरल व्यक्तित्व के धनी, सादगीपूर्ण जीवन जीने वाले, नियमों के पक्के ,जीवट व्यक्ति थे। राजनीति में वे जल में कमलवत् रहे। बुन्देलखण्ड की समाज के उत्थान के लिए अहर्निश् तत्पर रहते थे। ऐसे महान व्यक्तित्व के प्रति मेरी विनम्र श्रद्धांजलि।

पं. जयन्त कुमार जैन, सीकर

कपूरचंद जी घुवारा पूर्व विधायक को भावभीनी श्रद्धांजलि

एम.एल. जैन, टीकमगढ़

तेजतर्रार स्पष्ट वक्ता, झूठ फरेब ना नेतागिरी का झटका, तन पर हरदम खादी की धोती और कुर्ता, बुंदेलखंड के शेर कहो या गांधी, गरीबों के मसीहा कहो या दीन दुखियों के सेवक, सामंती व्यवस्था भ्रष्टाचार डाकू उन्मूलन नेता, विकास पुरुष कहूं या जन–जन का नेता, ऐसे श्री कपूरचंद जी घुवारा को शत्–शत् नमन है मेरा।

14 अगस्त 1943 को सवाई सिंघई प्यारे लाल जी के यहां नया सूर्य खिला। माँ खेमा बाई की कोख से प्यारा लाल जन्मा, नाम रखा कपूरचंद। बजी बधाई अंगना में, ढोल बजाकर बुलौआ हुआ। कमर में करधनियाँ, पाँव में पैजनिया, ठुमक–ठुमक चलत है अंगना, छतारे सिंघई इनके बब्बा मुकुंदी लाल जी कक्का कोमल हुकम के छोटे भैया रामलाल–कमलापत–खूबचंद–स्वरूप चंद के चचेरे भैया, पवन–सुनील–अनिल–अंगूरी–रेखा–बंदना के पूज्य पिताजी, जन–जन के नेता घुवारा जी, कोमल और हुकुम भैया की उंगली पकड़ दौड़ने लगे। बचपन बीता घुवारा में स्कूल में पढ़न लगे, एक दिना दद्दा को डाकुओं ने पकड़ लिया। पूछा बहू जो का हो रहो दद्दा को जे कहां ले जा रहे, बहू ने हाथ पकड़ कोठा में पेड़ों बोली डाकू ने पकड़ लव है। देवी सिंह डाकू ने अपना सामान लेकर छोड़ दिया और मारने की धमकी दे दी। सारा सामान गाड़ी में भर टीकमगढ़ में आन बसे, डाकुओं सामंती गुंडों के खिलाफ चिंगारी सुलग गई, टीकमगढ़ में गोविंददास, सिंघई प्रेम पोद्दार, अभिनंदन बजाज, प्रेम चंद कारी लंगोटिया यार बने।

कक्षा 9 तक स्कूल में पढ़े और जैन धर्म का घर पर ही अध्ययन किया। सन् 62 में जब चीन ने हमला बोल दिया तब घर–घर जाकर देश को चंदा इकट्ठा किया और कम्युनिस्ट पार्टी से अपना नाता जोड़ लिया। प्यारेलाल पाटन वालों ने घर वर पसंद किया। 16.05.62 को भागवती का कपूरचन्द संग धूमधाम से विवाह किया। 25 वर्ष की आयु में महुआ निकासी आंदोलन के अगुआ बने। 33 वर्ष में चरु टैक्स माफ करने छतरपुर में विशाल आंदोलन किया। अपनी निष्ठा सेवा की भावना से 10000 लोगों की आवाज बने। कई बार पुलिस सामंतों और गुंडों के कोप भाजन बने।

9 अगस्त 77 को बेगार प्रथा की खिलाफत से हरदास और पुनिया चढ़ार की नाक सामंतों ने काट दी। घुवारा जी ने उनके खिलाफ आंदोलन छेड़ दिया और रूस में इलाज कराकर उनकी कटी नाक को जुड़वा दिया। बस 1980 में विधायक बन जन आंदोलन छेड़ दिया। बेगार प्रथा, सामंती गुंडागर्दी डाकुओं का सफाया कर क्षेत्र विकास के लिए 7 साल तक उपनये रहे। क्षेत्र में अस्पताल स्कूल बनने पर सा सम्मान जूता पहने। देश–विदेश की करी यात्रा सत्य, अहिंसा का संदेश दिया। सब मुनियों का आशीर्वाद लिया, श्रावकधर्म का निर्वाह किया। देश–विदेश की यात्रा में भी छान के पानी घर का पिया और अंथउ का नियम बरकरार रहा। रेल लाइन के लिए भी आंदोलन किया।

2006 में विधायक निधि से क्षेत्र में सड़क, सिंचाई, शिक्षा, स्वास्थ्य का खूब विकास किया। कम्युनिस्ट पार्टी से यात्रा प्रारंभ कर कांग्रेस, भा.जा.पा. में पूर्ण विश्राम किया। राजनीति में कैलाश चौधरी गोविंददास सिंघई, प्रेम पोद्दार, प्रेमचंद जैन, बुद्धि प्रकाश बैसाखिया ने हरदम साथ दिया ऐसे जन–जन के नेता घुवारा जी को शत्–शत् नमन, शत्–शत् नमन।

एम. एल. जैन (सेवानिवृत्त एसडीओ)
जल संसाधन विभाग टीकमगढ़

परम आदरणीय समाज रत्न श्री कपूरचंद्र घुवारा के निधन से समाज को अपूरणीय क्षति हुई है। वीर प्रभु से प्रार्थना है कि उन्हें अपने चरणों में स्थान दें। शोकाकुल परिवार को यह गहन दुःख सहने की शक्ति प्रदान करें। ओम शांति, ओम शांति, ओम शांति।

संतोष कुमार जैन घड़ी, सागर

आदरणीय श्री कपूरचंद्र जी घुवारा का निधन जैन समाज के लिए एक अपूरणीय क्षति है वह राजनीति के पर्यायवाची थे। वह जैन समाज के लोह पुरुष थे। मैं अपने संपूर्ण परिवार की ओर से उनके प्रति सविनय नमन करता हूँ एवं विनम्र श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ। ओम् शान्ति, शांति शांति।

डॉ हरीश चंद्र शास्त्री, मुरैना

विगत अनेक वर्षों से जनप्रतिनिधि के रूप में समाज एवं राष्ट्र की सेवा में संलग्न सात्विक, निर्भीक एवं निरभिमान व्यक्तित्व के धनी आदरणीय कपूरचन्द जैन घुवारा का निधन समाज एवं राष्ट्र की अपूरणीय क्षति है । आप दो बार विधायक रहे एवं मध्य प्रदेश सरकार में दर्जा प्राप्त कैबिनेट मंत्री के पद पर भी रहे। अनेक वर्षों तक सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि के अध्यक्ष पद पर रहे। अध्यक्ष पद पर रहते हुए क्षेत्र के विकास के लिए आपने अनेक कार्य किये । उनके प्रति मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि ।

डॉ0 अनिल कुमार जैन, प्राचार्य
श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय संगानेर, जयपुर

जैन होते हुये क्षत्रियों जैसा आत्मबल हो, डकैतों को जिला बदल कराने जैसे अद्भुत मानव सेवा के साथ विधानसभा में अकेले शेर जैसे दहाड़ने वाले जनजन के प्रिय, देश, समाज, धर्म की सतत् रक्षा के संकल्प पूर्वक सभी क्षेत्रों में प्रतिनिधित्व प्रदान कर घुवारा जी नाम से विख्यात बुंदेल केशरी का जाना हृदय विदारक है पर नियत के लेख के आगे हम सभी असमर्थ हो जाते हैं। उनके भले कार्यों से उन्हें सद्गति ही मिली होगी, हमारी उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजली।

पं. उदय शास्त्री, सागर

राजेश जी, अतुल भैया जी, निहाल चन्द्र जी, सुभाष जी सागर, परम आदरणीय श्रद्धेय श्री कपूर चंद्र जी जैन घुवारा (पूर्व कैबिनेट मंत्री म. प्र. शासन) पं. श्री अजित जी शास्त्री दिल्ली, पं. विनोद शास्त्री (नरवा), कोटा का स्वर्गवास होना दुखद है। भगवान सभी को शांति प्रदान करे।

पं धरणेन्द्र जैन शास्त्री धीरज वोराव
जिला चित्तौडगढ राज

प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी थे दादा कपूरचंद घुवाराजी

श्री कपूरचंद घुवाराजी बुंदेलखंड की माटी के वह सपूत थे जिन्होंने जैन– जैनत्तर समाज के लिए जमीन से जुड़कर ,संघर्षरत रहकर कार्य किया।

जब बुंदेलखंड में डाकुओं की समस्या थी और इतने अधिक साधन भी नहीं थे, ऐसी विषम परिस्थितियों में जैन समाज के लिए संघर्ष करना अति कठिन था लेकिन दादा निडर होने के साथ उनकी वक्तव्य शैली मैं वह जादू था की दो, पॉच सौ लोगों को इकट्ठा करना सामान्य बात थी। इसलिए वह मात्र 40 वर्ष की उम्र में ही विधायक बनकर क्षेत्र की सेवा का कार्य करने लगे। हमें दादा कपूरचंद जी घुवारा से श्रुत संवर्धन शिक्षण शिविरों के माध्यम से जुड़ने का अवसर मिला। वह अधिकतर हमारे शिविरों के मुख्य अतिथि रहते थे, लेकिन समय–समय पर हमें दादा के साथ संगोष्ठीओं, यात्राओं मैं जाने का अवसर

मिला। हमें उनके साथ रहकर उनकी कार्यशैली सीखने का अवसर मिला। उनके जीवन के अनुभव हमें प्राप्त होते रहे। मैंने उनके साथ रहकर धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक कार्य करना और प्रत्येक व्यक्तियों को अपनी कार्यशैली से संतुष्ट रखना उनके सात्विक जीवन शैली एवं निडर सिंह की तरह कार्य शैली को देखकर ही मैंने बहुत कुछ सीखा। एक ऐसा व्यक्तित्व जिसकी सोच समन्वयवादी हो ऐसे व्यक्तित्व के धनी दादा कपूरचंद घुवारा ही हो सकते हैं। आज हम उनके रिक्त स्थान की पूर्ति तो नहीं कर सकते, लेकिन हम यह जरूर कहते हैं की समाज के लिए ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो समाज का नेतृत्व निष्पक्ष, निडर और समन्वयवादी सोच रख कर करें।

हम दादा कपूर चंद जी घुवारा के लिए अपने शब्दों की श्रद्धांजलि समर्पित कर नमन करते हैं।

हमें आस नहीं भरोसा है
हमें आज नहीं कल पर है
ऐसा कोई नेतृत्व मिलेगा
जो शेरे बुंदेलखंड ही नहीं
शेर ए हिंदुस्तान कहलाएगा।

—**जर्नलिस्ट मनीष जैन** विद्यार्थी, शाहगढ़

आदरणीय श्री कपूरचन्द जी घुवारा को जैसा देखा—जाना

मेरा परिवार लार निवासी है, वर्तमान में टीकमगढ़ 60वर्ष पूर्व आ गया था। उस समय लार जैन परिवार और घुवारा के जैन समाज में खूब आना—जाना था। मेरे पिताजी सवाई चौधरी स्व. बाबू लाल के चाचा जी से बड़े ही आत्मीयता के संबंध रहे हैं। सौभाग्य से मेरे पहली नियुक्ति 1978 में हायर सेकंडरी स्कूल घुवारा में ही हुई। एक साल की अवधि में मुझे आदरणीय चाचा जी का पूरा सहयोग मिला। उस समय पूरा बुंदेलखंड डाकू समस्या से ग्रसित था ठाकुरों का आतंक था ऐसे में घुवारा जी ही एक मात्र व्यक्ति थे जिन्होंने जनता को भय से मुक्त कराया और पैदल ही गांवों में जाकर जन जागरण किया और वह जन—जन के प्रिय हो गये। राजनीति में सक्रिय रहते हुए उन्होंने समाज, धर्म और शिक्षा के प्रसार और उन्नति के लिए अपने को समर्पित कर दिया। सिद्धक्षेत्र द्रोणागिरी के विकास के लिए वह देश भर में गये और दान एकत्रित कर क्षेत्र को लघु सम्मेदशिखर का दर्जा दिलाया। शिक्षा के लिये घुवारा में स्नातकोत्तर महाविद्यालय खोलने के लिए अपना तन—मन और धन समर्पित कर क्षेत्र के नौजवानों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के अवसर उपलब्ध कराए। जैन धर्म के नियम का उन्होंने जिंदगी भर पालन किया। रसिया की यात्रा भी वगैर जूता, चप्पल के, छने पानी और स्वयं के बने शुद्ध भोजन के साथ पूरी की, यह नियम उनका विधायक बनने पर भी चलता रहा। चप्पल तो खुद शिवराज सिंह ने भेंट की थी। वह शुचिता और ईमानदारी से राजनीति करने वाले जमीन से जुड़े जननेता थे। घंमड तो उनसे कोसों दूर रहा।

ऐसे विलक्षण व्यक्ति का जाना परिवार, समाज के अपूर्णीय क्षति है। उनके पुत्र पवन जी और सुनील जी भी राजनीति में उनके बताये हुए रास्ते पर ईमानदारी से अलग–अलग राजनैतिक दल में अपनी महती भूमिका निभा रहे हैं। मैं अपनी ओर से पूरे परिवार और लार जैन समाज की ओर से भारत विकास परिषद, राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, पाठक मंच की ओर से आदरणीय चाचा जी के चरणों में विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

शील चन्द्र जैन
सेवानिवृत्त प्राचार्य

आदरणीय घुवारा जी ने राजनीति के क्षेत्र में जैनों का नाम बहुत ऊंचा किया है। एक बार आप श्री दिगंबर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर का अवलोकन करने पधारे थे, उस समय आपसे चर्चा करने का एवं मार्गदर्शन प्राप्त करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था। निश्चित ही जैन समाज ने एक ओजस्वी वक्ता, जैन राजनीति के पर्यायवाची और दूरदर्शी व्यक्तित्व को खो दिया है। आदरणीय घुवारा जी की आत्मा को शांति मिले।

डॉ. आनंद कुमार जैन
बी एच यू, वाराणसी

समाज शिरोमणि आदरणीय श्री कपूरचंद जी घुवारा के निधन का समाचार सुनकर मन अत्यंत दुःखी हुआ। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

पं. संतोष जैन
गुरुग्राम

अत्यंत दुखद समाचार सुन मन व्यथित है, श्रावक धर्म के प्रतिपालक, राजनैतिक क्षेत्र में बहुमुखी प्रतिभा के धनी, समाज उद्धारक, प्रेरक एवं प्रेरणास्रोत, जनप्रिय, लोकप्रिय, शेरे बुंदेलखंड, गुरु भक्त, जिन धर्म प्रभावक, समाजसेवी, विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी एवं सिद्ध क्षेत्र द्रोणागिरी के अध्यक्ष श्री कपूरचंद घुवारा जी पूर्व विधायक के निधन से मन व्यथित है। भगवान इस दुःख को सहन करने की शक्ति दे एवं इस महान आत्मा को सद्गति प्राप्त हो। ऊँ शांति.. ऊँ शांति।

पं. देवेश कुमार जैन

आदरणीय दादा श्री कपूरचंद जी घुवारा जैन समाज के एक मजबूत स्तंभ थे। घुवारा जी के आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर अत्यंत दुःख हुआ। हम सब इस असहनीय दुःख के समय घुवारा जी के परिवार के साथ हैं। भगवान से प्रार्थना है की इस दुःख को सहन करने की शक्ति सभी परिवार जनों को प्रदान करें।

भागचंद जैन, सतपारा
मंत्री–द्रोण प्रांतीय नवयुवक सेवा संघ, द्रोणगिरी

राजनीति के पर्याय आदरणीय दादा कपूरचंद्र घुवाराजी देव, शास्त्र, गुरु के प्रति समर्पित और क्षेत्र की जनता के लिए तैयार, गरीबों के मसीहा, ईमानदारी और सच्चाई के प्रेरक ऐसे घुवाराजी को सादर नमन। आपका जब भी हमारे बड़ामलहरा क्षेत्र में आंदोलन या भाषण होता था मैं जरूर सुनता था। बोलने की कला मैंने आपसे ही सीखी। ऐसे हमारे आदरणीय नेताजी को हार्दिक श्रद्धांजलि।

पंडित रजनीश शास्त्री (बनेठा) भगवा

सम्माननीय बाबूजी के निधन देहपरिवर्तन का समाचार अत्यंत ही दुखद है। वे समाजभूषण, समाजरत्न, बुंदेलखंड व सकल जैन समाज के गौरव थे। राजनैतिक क्षेत्र में भी मध्य प्रदेश शासन से कैबिनेट मंत्री के दर्जे से सम्मानित, विभिन्न जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटियों के संरक्षक व ट्रस्टी रहे। आपके सरल स्वभाव व मृदुभाषी से हम सब परिचित थे। समाज सेवा में आप का जवाब ही नहीं था। ऐसे व्यक्तित्व का पंचतत्व में विलीन होना निश्चित ही बुंदेलखंड व प्रदेश व देश की जैन समाज की अपूर्णीय क्षति है। इस दुःख की घड़ी में मैं और मेरा पूरा परिवार आपके दुःख में सहभागी है। ईश्वर से प्रार्थना है की ऐसे महान व्यक्तित्व को अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करें।

समस्त सराफ परिवार, सागर

आदरणीय पापा जी के निधन के समाचार से ह्रदय द्रवित एवं दुखी हो गया। उनके देवलोक गमन से सम्पूर्ण जैन समाज में शोक व्याप्त हो गया क्योंकि यह सम्पूर्ण जैन समाज के लिये अपूर्णीय क्षति है। हम अपने पूरे परिवार की ओर से श्री वीर प्रभु से विनती करते हैं कि पापा जी को अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करें एवं शोकाकुल परिवार को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

सुशील–रश्मि, शशाँक–मयंक जैन, भोपाल

बुंदेलखंड की शान। शेरे बुंदेलखंड। बुंदेलखंड का गांधी। लौह पुरुष। गरीबों के मसीहा। दो बार बड़ामलहरा विधानसभा का प्रतिनिधित्व करने वाले। मध्यप्रदेश हस्तशिल्प हथकरघा निगम के पूर्व अध्यक्ष कैबिनेट मंत्री दर्जा प्राप्त, श्री दिगंबर जैन सिद्ध क्षेत्र द्रोणागिरी के अध्यक्ष एवं गणेश प्रसाद वर्णी कॉलेज घुवारा के अध्यक्ष श्री कपूरचंद घुवारा जी अब हमारे बीच नहीं रहे। आपका हमारे एवं हमारे परिवार के साथ सदा स्नेह रहा है। आपका यूँ असमय चले जाना हम लोगों के लिए एक व्यक्तिगत क्षति भी है। आपके प्रति अश्रुपूरित श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए संपूर्ण परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूँ।

मनोज मस्तांई

नगर पंचायत पार्षद, घुवारा

नामुमकिन को मुमकिन करने बाला
था एक शेर बड़ा ही हिम्मत बाला
घुवारा जन्म लिया था, घुवारा नाम उन्हीं से था
वो हर घर के हर व्यक्ति कि अवाज उठाया करता था
वो एक शेर बब्बर शेर था, जो तूफान से भी टकराता था
हर मुश्किल का समाधान, जिसके आ जाने से हो जाता था
वो चला गया वीर हितेषी, अब वापिस न आएगा
लेकिन भइया घुवारा अब भी, घुवारा जी नाम से जाना जायेगा

घुवारा जी आपके चले जाने से घुवारा ही नही हर गांव का व्यक्ति हर समाज का व्यक्ति दुःखित है। आपकी अपूर्णीय क्षति समाज को हुई है ,आप हमारी समाज के नगर के गौरव थे। आपके प्रति मेरी सद्भावना है आप को सदगति की प्राप्ति हो ।

नरेंद्र जैन शास्त्री', मबई बाले घुवारा

आदरणीय कपूरचन्द्र घुवाराजी का वियोग जैन समाज की बहुत बड़ी क्षति है। आपके प्रयासों से बुन्देलखण्ड में गरीब किसानों की भलाई के अनेक कार्य हुए। आपने कई बार राजनीतिक जेल यात्रायें व विदेश यात्रायें की पर अपने जैनाचार को सदैव जीवंत रखा। समाज में समरसता बनाये रखने का सदैव प्रयास किया। घुवारा में गणेश प्रसाद वर्णी महाविद्यालय खुलवाया। द्रोणगिरि में अध्यक्ष रहते हुए क्षेत्र के विकास में निरन्तर सक्रिय रहे। सिद्धायतन पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में आपने महत्वपूर्ण योगदान किया। आप युवावय से ही सर्वहारा वर्ग के मसीहा के रूप में जाने गये। आप कुछ वर्षों से अस्वस्थ थे पर सजग थे। दिसम्बर माह में सिद्धायतन में ही आपसे अंतिम भेंट हुई।

इस वैराग्य प्रसंग पर हम हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

राजकुमार शास्त्री, डॉ. ममता जैन
एवं शाश्वत धाम परिवार, उदयपुर

शेरे बुंदेलखंड पूर्व कामरेड कपूरचंद्र जी घुवारा क्षेत्र का एक ऐसा सितारा अस्त हो गया है, जिसकी राजनीति के चर्चे किये जाते रहेंगे। खजुराहो–सिंगरौली रेल लाइन के जनक पूर्व मंत्री मध्यप्रदेश शासन की दहाड़ अब हमेशा के लिये शांत हो गई है। लंबे समय से बीमार चल रहे चाचाजी आदरणीय कपूरचंद जी घुवारा के निधन पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए उनके चरणों में नमन करते हैं!

श्रीपाल नायक एवं नायक परिवार
टीकमगढ़

श्रद्धेय श्री कपूरचन्द्रजी 'घुवाराजी' को भावांजलि

–सत्येन्द्र जैन, ककरवाहा
मानपुरी, भीलवाड़ा (राज.)

सवैया–छंद

सभी के प्रति उनके दिल में उल्लास है।
बुन्देली शेर जो निडर निर्भीक रहे,
जिनका समर्पण तो खासों में भी खास है।
श्री घुवाराजी के व्यक्तित्व पे अभिमान हमें,
सभी के दिलों को बना लिया अपना दास है।
उनकी प्रशंसा किन शब्दों करें आज,
ऐसे शब्द नहीं किसी कविता के पास है।

बुन्देली

भारत को अनमोल प्रांत, बुंदेलखण्ड कहलानों।
घुवाराजी खौं नईं जानौ, तो बुन्देलखंड का जानों।।
श्री घुवाराजी सो मानुष, मओ ने होने नईयां।
अस्पताल, बनवावै जिनन्ने, दईती त्याग पनैंयां।।
हते मसीहा सब गरीब के, बुन्देली के हीरा।
सबके दुःख में ठांड़े रत्ते, दूर करत्ते पीरा।।
जीवन भर संघर्ष करो, खुद सुख सें रै ना पाये।
सबके दुख दर्दों के लांनै, अपने ऊपर लाये।।
करी घोषणा सरकारौं ने, पर काम नहीं हो पाये।
अंगद जैसों पांव जमाकै, सबई काम करवाये।।
क्षेत्र द्रोणगिर बेयी बचाओ, सब बव्वा हमसे कत्ते।
उनके डर से भइया डाकूं, थर–थर–थर कांपत्ते।।
राजनीति में अच्छे अच्छन के, दये उखरबा खम्मा।
जो अपनो सौभाग्य हमारे, हते कपूरे मम्मा।।
युग–युग गौरव रहे आपका, जब तक धरा गगन है।
लौह पुरुष श्री घुवारा जी को, शत्–शत् वार नमन है।।

अक्षय अमृत विश्वशांति अनुष्ठान में 5 लाख से अधिक आहुतियां

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि–परिषद् के आव्हान पर डॉ. श्रेयांस कुमारजी बड़ौत की अध्यक्षता में 14.06.2021 अक्षय तृतीया की पावन तिथि में भारत एवं प्रवासी 1035 परिवारों द्वारा 'अक्षय अमृत विश्वशांति अनुष्ठान' में देव, शास्त्र, गुरु की साक्षी में सामूहिक रूप से शांति मंत्र की 5 लाख से अधिक आहूतियां देकर विश्वशांति की मंगल कामना की। अनुष्ठान का शुभारंभ मुनि श्री विरंजन सागर महाराज के श्रीमुख से शांति भक्ति के पाठ से हुआ। मंगलाष्टक, दिग्बन्धन, रक्षामंत्र, शांतिमंत्र, अमृत स्नान की प्रारंभिक मांगलिक क्रियाएं ब्र.जयकुमारजी निशांत के संचालन में परिषद के शताधिक विद्वानों द्वारा तथा क्रिया की पी.डी.एफ. से सैकड़ों परिवारों ने अपने गृह निवास में सम्पन्न की। अनुष्ठान का शुभारंभ मिथुन लग्न के लाभ एवं अमृत चौघड़िया में किया गया।

पूर्णकुंभ कलश स्थापना– प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के जीवन चरित्र का विशेष प्रसंग वैशाख शुक्ल तृतीया के दिन राजा श्रेयांस एवं सोम के द्वारा प्रथम आहार पंचाश्चर्य सम्पन्न किया गया जो 'अक्षय तृतीया' अनबूझ मुहूर्त के रूप में फलित हुआ। अक्षय तृतीया को अलग–अलग प्रान्तों में अक्ती, आखा तीज, अक्षय तीज, अक्षय व्रतादि अनुष्ठान समपन्न किए जाते हैं। जैन दर्शन में इसे विशेष शुभ दिन 'पूर्ण कुंभ कलश' (जिसमें हरिद्र, सिद्धार्था, पुंग, रजत स्वस्तिक, नवरत्न, रजत सिक्का आदि मंगल द्रव्यों से परिपूर्ण श्रीफल से शोभित कर स्थापित करके भगवान ऋषभदेव की आराधना की जाती है।)

'पूर्णकुंभ कलश' का हेतु अक्षय अखण्ड, पूर्णता सहित सुख, समृद्धि खुशहाली का है। इस दिन की गई संयम साधना, शुभकार्य, मांगलिक अनुष्ठान, शुभ संकल्प जीवन में अक्षय रूप से फलित होते हैं। इसीलिए शास्त्रि–परिषद् द्वारा सामूहिक रूप से विश्वशांति अनुष्ठान, अखण्ड आत्मशांति, विश्व मैत्री एवं सद्भावना विस्तार के लिए सम्पन्न किया गया है।

इस मांगलिक अनुष्ठान को देश के प्रमुख आचार्यों का आशीर्वाद एवं आचार्य श्री विमदसागर, आ. प्रमुखसागर आ. अतिवीर महाराज, मुनि श्री विरंजनसागर, मुनि श्री सुप्रभसागर, गणिनी आर्यिका जिनदेवी, स्वस्तिभूषण तथा माँ श्री कौशल जी ऋषभांचल का मंगल सान्निध्य प्राप्त हुआ। भारत के श्रेष्ठ गीतकार, भजन सम्राट रूपेश जैन के मंगलाचरण ने सभी के अंतर्मन तथा भावों को करुणा से विशुद्ध किया।

देश के विशिष्ट श्रीमंतों में श्री जमूनालालजी हपावत, मुम्बई महासभा कार्याध्यक्ष प्रमोद कुमार जैन मॉडल टाउन समाज अध्यक्ष, श्री मणीन्द्र कुमार जैन अध्यक्ष महासमिति, स्वदेशभूषण पंजाब केसरी, श्री दिलीप पाटनी गोयल नगर इन्दौर, श्री डी.के.जैन डी.एस.पी., श्री दीपक जी डायरेक्टर जनरल फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्रीज राष्ट्रीय उपाध्यक्ष तीर्थ संरक्षिणी समिति ने अपने विचार रखे। शास्त्रि–परिषद् के वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ. वृषभ प्रसाद जी लखनऊ, डॉ. सुशील मैनपुरी, डॉ. मुकेश विमल दिल्ली, डॉ. भरत शास्त्रि रजवांस इन्दौर, पं. दीपक शास्त्री दिल्ली, श्री राजेश जैन इन्दौर ने उद्गार प्रकट किए।

इस संयोजना में पं. दीपक शास्त्री ने जैनम् भक्तिभाव तथा यू–ट्यूब से डॉ. मुकेश विमल ने अर्हं विद्या जूम तथा यू–ट्यूब से श्री राजेश जैन (नवकार कम्प्यूटर, इन्दौर), डॉ. भरत शास्त्री ने गोलापूर्व जैन समाज डॉट कॉम, सम्माननीय जमनालाल जी हापावत के सहयोग से जैनम जूम पर श्री राहुल पहाड़े नासिक, डॉ. वृषभ प्रसाद लखनऊ के सहयोग से 1035 परिवारों ने आहुतियां सम्पन्न की।

कार्यक्रम का समापन संयुक्त मंत्री विनोदजी ने आभार पूर्वक किया।

300 के लगभग साधर्मीजनों के लिए देव आस्था पुस्तकालय द्वारा श्रद्धांजली सभा

कोविड कोरोना महामारी के दौरान हम आपके बीच से 300 के लगभग साधर्मीजनों का हम आपको छोड़कर जाना अत्यंत ही दुखित समय है। सभी दिवंगत आत्माओं के प्रति देव आस्था पुस्तकालय द्वारा श्रद्धांजली सभा 18 मई 2021 मंगलवार को दोपहर 1 बजे से आयोजित की गई। सभा को पावन आशीर्वाद– राष्ट्रसंत आचार्य 108 श्री विद्यासागर जी महाराज, गणाचार्य 108 श्री कुन्थूसागरजी महाराज, गणाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महाराज, प्रज्ञाश्रमण सारस्वताचार्य 108 श्री देवनन्दी जी महाराज गुरुदेव,परम पूज्य आचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी महाराज, परम पूज्य 108 श्री विंरजंन सागर जी महाराज, भारत गौरव वंदनीय गणिनी प्रमुख आर्यिका ज्ञानमति माताजी, आर्यिका रत्न चंदनामति माताजी, परम पूज्य 105 कर्मयोगी क्षु. समर्पणसागर महाराज, पीठाधीश रविन्द्र कीर्ति स्वामी जी हस्तिनापुर में आशीर्वचन, परमपूज्य आचार्य 108 श्री सौभाग्यसागर जी महाराज, परमपुज्य स्वामी चारुकीर्ति जी स्वामी मूडबद्री द्वारा दिया गया।

कार्यक्रम निदेशक, विधानाचार्य पं. श्री शुभम शास्त्री जी बडामलहरा, मंगलाचरण श्री संजीव भैया, कु. श्रुति संघी जबलपुर कंटगी, दीपज्योति परम संरक्षका श्रीमती भागवती देवी घुवारा धर्मपत्नी स्व. श्री कपूरचन्द्र घुवारा पूर्व मंत्री म.प्र.शासन।

देव आस्था पुस्तकालय द्वारा श्री निर्मल जैन सेठी जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष महासभा, दिल्ली, पद्मश्री इंदू जी जैन अध्यक्ष टाइम्स ऑफ इंडिया, दिल्ली, श्री कपूर चंद्र जी घुवारा पूर्व मंत्री मप्र शासन, श्री प्रदीप सिंह कासलीवाल राष्ट्रीय अध्यक्ष सामाजिक संसद, श्री कैलाश चंद्र जी पत्रकार पूर्व मेयर झांसी, श्री सुभाष जैन, कलेक्टर भोपाल, श्री अजित सिंह कासलीवाल ट्रस्ट उदासीन आश्रम इंदौर, श्री प्रदीप जैन. नौहरकला अध्यक्ष देवगढ़, श्री विजयकुमार प्रदेश उपाध्यक्ष भाजपा भोपाल, श्री डॉ. सुरेश खजुरिया ललितपुर, श्रीमन्त नरेश सेठ सागर, श्री कैलाश चौधरी श्रीमती ऊषा चौधरी मोहनगढ़ वाले टीकमगढ़, श्रीमती अंजना जैन बन्ना बक्सवाहा, श्री अखिलेश जैन मोन्टू टीकमगढ़, श्री मनोज जैन ब्रतीशा टीकमगढ़, श्री अभिनंदन जैन, बंधा जी, श्री सुनील इमलिया जैन ललितपुर, श्री रिषभ जैन करगुवां जी, झांसी का श्रद्धाजंलि सभा में सर्वप्रथम मंगलाचरण एवं देवलोक गए परमस्नेही साधर्मीबंधुओं के नामों का श्रद्धाजंलि वाचन क्रमशः जोन बार किया।

सभा के संयोजक सदस्य– अशोक जैन क्रांतिकारी, श्री अंकित जी जैन हीरापुर, श्री अरुण जैन घुवारा, श्री पुनीत जैन भगवाँ, श्रीमती सुषमा खुशी श्री जैन भिलाई, श्री शैलेंद्र संघी जबलपुर, पं. डॉ. श्री भरत शास्त्री रजवास इंदौर, श्री अजित जैन जी मास्टर साहब मढ़देवरा, श्रीसंजीव खाग शाहगढ, श्री पं. विमल शास्त्री दिल्ली,लोकेश जैन जी नवी मुम्बई, श्री राकेश जी केसरिया, बडागांव, डॉ. जिनेश रीवा, दिनेश जैन शिल्पी कार्ड सागर, अनिकेत जी साँधेलिया दलपतपुर, सजंय शास्त्री जी छतरपुर, पं. श्री अखिलेश जी शास्त्री रमगढ़ा, श्री सुमति प्रकाश मढदेवरा सागर, श्री निर्मल जी शास्त्री हटा, टीकमगढ़, श्री संजय शास्त्री जी सागर, श्री मुन्ना लाल जी ग्वालियर, श्री जिनेश जैन जी बहरोल सागर, श्री रवि जैन

लार सागर, श्री मुकेश शास्त्री चंद्रपुरा, पं. श्री नरेन्द्र जी जैन गोहाटी असम, श्री दिलीप मलैया बकस्वाहा, श्री मनीष जैन बकस्वाहा, गोल्डी बकस्वाहा, श्री संदीप फौजदार बडामलहरा, श्री पं. सतीश शास्त्री गुलंगज दिल्ली, श्री संजय जैन संजू खरगापुर, श्री विजय जैन भेलसी, श्री रविन्द्र जैन मंजू भेलसी, श्री राजकुमार पड़ेले जी हीरापुर वाले सागर, डॉ के.सी.जैन इन्दौर, श्री संकल्प जैन बड़ामलहरा, सी. ए. श्री प्रसन्न चौधरी घुवारा, पंडित श्री ऋषभ जैन जी गाजियाबाद, प्रमोद जैन जी गट्टू बड़ामलहरा, पं. अशोक जैन शास्त्री गडा वाले खतौली, श्री राजेश शास्त्री ललितपुर, श्री जिनेन्द्र शास्त्री मथुरा, श्री जयकुमार जैन शिक्षक रामटौरिया, पं. चकेश शास्त्री–हटाजी, पं.राहुल शास्त्री– करंगुवा जी।

देव–आस्था पुस्तकालय वर्ष 2004 से धार्मिक–समाजजिक गतिविधियों हेतु भूमिपुत्र पवन घुवारा द्वारा संचालित है जिसका कार्यालय घुवारा सदन टीकमगढ़ म.प्र. निवास पर स्थित है। समस्त गतिविधियाँ व्यवस्था निशुल्क ही स्वयं आधारित प्रयास से वषों तक आप–पास के पाठकों को प्रतिदिन दैनिक समाचारपत्र भी उपलब्ध रहते एवं पुस्तकों को भी अध्ययन हेतु रखा है।

अशोक जैन क्रांतिकारी

बुन्देलखण्ड ए शान के नाम से प्रसिद्ध श्री कपूरचंद जी घुवारा के देहवियोग के समाचार से मन अत्यंत स्तब्ध है। आप भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता थे, साथ ही आप बड़ामलहरा विधान सभा से विधायक रहे एवं आपको अपने जीवनकाल में हस्त शिल्प निगम के अध्यक्ष के साथ मध्यप्रदेश सरकार में कैबिनेट मंत्री का दर्जा भी प्राप्त हुआ था। आपने सामाजिक क्षेत्र में तो अनेक कार्य किये ही हैं किंतु आप राजनेता के साथ देव–शास्त्र–गुरु के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा थी। आप घुवारा नगर के होने के कारण घुवारा जी के नाम से विख्यात थे । आप द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र प्रबन्ध कमेटी के भी अध्यक्ष थे। आपने अपने जीवनकाल में अनेक स्तुत्य कार्य किये हैं । आपका हमारे साथ सदैव स्नेह रहा है, आपका वियोग हमारे लिए एक व्यक्तिगत क्षति भी है। आपके प्रति अश्रुपूरित श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए सम्पूर्ण परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूँ।

अमित जैन ''अरिहंत''
मड़ावरा

सामूहिक श्रद्धांजलि सभा

पंचमकाल में कोरोना काल की द्वितीय लहर अप्रैल के द्वितीय सप्ताह से प्रभावशील हुई और देखते ही देखते अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन समाज/संस्थाओं के उद्भट, अद्वितीय विलक्षण व्यक्तित्व, कृतित्ववान पू. भव्यात्मायें हमारे बीच से कपूर की तरह उड़कर बिछुड़ गये। उनकी क्षति अपूरणीय है, वे समाज/संस्कृति के आधार स्तम्भ थे।

दिवंगत भव्यात्माओं में आचार्य श्री विद्यासागरजी से दीक्षित मात्र 36 वर्षीय बजरंग गढ़ में प्रवासरत मुनि श्री निकलंकसागरजी महाराज, आचार्य श्री विरागसागरजी के दीक्षित मुनिराज इटावा में प्रवासरत श्री विशानुत्तरसागरजी मुनिवर, ब्र. श्री राजेशजी चैतन्य, अहमदाबाद, ज्ञानसागर गुरुकुल वरनावा के संस्थापक/संचालक ऊर्जावान ब्र. अतुल भैया, अखिल दिगम्बर जैन समाज के उद्भट नेता महासभा अध्यक्ष परम गुरु भक्त श्री निर्मलजी सेठी, दिल्ली, बुन्देलखण्ड गौरव/सिंह समान निर्भीक वक्ता, गरीबों के मसीहा श्री कपूरचंदजी घुवारा, सुप्रसिद्ध पत्रकार दैनिक विश्व परिवार के संस्थापक श्री कैलाशचंदजी झांसी, मिनलसार हसमुख व्यक्तित्व के धनी युवा प्रतिष्ठाचार्य पं. श्री अजित जी दिल्ली, प्रौढ़ विधानाचार्य, श्रुतसेवी, काव्य प्रतिभा के धनी पं. श्री प्रवीणजी हस्तिनापुर एवं वयवृद्ध प्रौढ़ साहित्य सेवी पंडित श्री गुलाबचंदजी आदित्य भोपाल, ब्र. त्रिलोक भैया जबलपुर, प्रतिष्ठाचार्य पं. जयकुमार जैन, भोपाल आदि समाज के महनीय शिखर पुरुष थे। सभी के लिये अ.भा.दिग. जैन शास्त्रि परिषद् के द्वारा सामूहिक श्रद्धा सुमन समर्पित किये गये। इन सभी दिवंगत श्रुताराधकों ने कठिन/विषम परिस्थितियों में संघर्ष कर सफलता के आयाम स्थापित कर जैन समाज को गौरवान्वित किया है। धर्म, समाज, संस्कृति की, जिनवाणी की बहुमूल्य सेवा कर जैन संस्कृति–इतिहास को सशक्त बनाया है। अतएव उपरोक्त सभी पुण्यात्माओं को स्मरण करते हुए यह श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गयी।

वर्तमान काल में दूरसंसार प्रणाली के तहत ऑनलाइन/झूम पद्धति पर यह सभा दिनांक 30 अप्रैल 2021को संध्याकाल 7:30 बजे अ.भा.दिग. जैन शास्त्रि–परिषद् के यशस्वी अध्यक्ष सर्वमान्य डॉ. श्रेयांसजी बड़ौत की अध्यक्षता में, श्री सुनीलजी हटा के तकनीकी प्रबन्ध सहयोग से संस्था के पूर्व संयुक्त मंत्री युवा प्रतिष्ठाचार्य, काव्य गुणालंकृत प्रतिष्ठाचार्य पं. श्री पवन दीवान मुरैना के मंगलाचरण से प्रारंभ हुई। सभा का संचालन परिषद के कर्मठ यशस्वी महामंत्री सुयोग्य प्रतिष्ठाचार्य, नवागढ़ क्षेत्र को समर्पित ब्र. जय निशांत जी एवं उद्भट लेखक/चिन्तनशील, वात्सल्य हृदय संयुक्त मंत्री प्रतिष्ठाचार्य पं. श्री विनोद कुमारजी रजवांस/इन्दौर ने संयुक्त रूप से किया।

श्रद्धासुमन समर्पित करने वाले वक्ताओं में सर्वप्रथम सर्व श्री डॉ. नरेन्द्रजी गाजियाबाद, श्रेष्ठी श्री जमूनालालजी हपावत मुम्बई, उपाध्यक्ष महासभा प्राकृत भाषा साहित्यकार वृद्ध डॉ. प्रेमसुमनजी उदयपुर, डॉ. श्री अनिल जी जैन जयपुर, डॉ. फूलचंद जैन 'प्रेमी' वाराणसी, श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर के

निदेशक एवं वि.प.पूर्व अध्यक्ष डॉ. शीतलचंदजी जयपुर, सांगानेर छात्रावास संस्थान के प्राचार्य वर्तमान विद्वत परिषद् अध्यक्ष डॉ. अरुणजी, श्री प्रदीप जी पाटनी लखनऊ, ब्र. श्री धर्मेन्द्रजी (राष्ट्रीस संस्कृत संस्थान) दिल्ली, श्री संतोषजी (घड़ी) सागर, भाषाविद् गंभीर वक्ता डॉ. ऋषभप्रसादजी लखनऊ, श्रेष्ठ वक्ता, पं. श्री राजकुमारजी सागर, मधुरकंठ के धनी सौम्य प्रतिष्ठाचार्य पं. श्री कमलजी कमलाकुंर भोपाल, पं. श्री जयन्तजी सीकर, मुरैना विद्यालय के प्राचार्य डॉ. हरिश्चंद्रजी गुरुजी, पूर्व पं. श्री महेन्द्रजी शास्त्री, पं. श्री पवनजी दीवान मुरैना, डॉ. निर्मल जी टीकमगढ़, श्री लवकेशजी जैन मुम्बई, पं. श्री अरुणजी जबलपुर, पं. श्री सुनीलजी टीकमगढ़, श्री सुनीलकुमारजी, पवनकुमारजी (सुपुत्रद्वय श्री कपूरचंदजी घुवारा), श्री प्रदीपजी रायपुर, महामंत्री श्री ब्र. जयनिशान्तजी, माननीय अध्यक्ष महोदय डॉ. श्रेयांस जी बड़ौत एवं संयुक्त मंत्री श्री पं. विनोदजी रजवांस ने अपने–अपने श्रद्धा सुमन समर्पित किये।

विशेष तौर पर समग्र भावों की अभिव्यक्ति ने दिवंगत आत्माओं के अवदान को उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करने की भावना व्यक्त करते हुए स्वयं को सजग रहने की पूर्ण समर्पण के साथ श्रुत सेवार्थ उद्गार व्यक्त किये। अधिकांश वक्ताओं की भावनाओं को दृष्टिगत करते हुए एक बृहत्, स्मृति ग्रंथ प्रकाशन की चर्चा भी आयी। यह श्रद्धांजलि सभा लगभग 3 घंटे तक निर्बाध गति से चली। अन्ततः सभा संयोजक / संयुक्त मंत्री ने सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए भगवान श्री शांतिनाथजी की जयघोष के साथ सभा विसर्जन की घोषणा की।

रहे कपूर की तरह महकते
नित कर्मों के द्वारा जी
जिसने जब आवश्यक समझा
तुमको आन पुकाराजी
ना होगा बुन्देलखण्ड में तुमसा कोई दोबारा जी
एक अकेले ध्रुवतारे सम
जग में आप घुवाराजी
सत्य से विचलित न होता,
ना किसी विरोध से घबराना
तुमने सिखाया दृढ़ निष्ठा से
लक्ष्य साध बढ़ते जाना
भूल नहीं सकता समाज कोई उपकार तुम्हाराजी
एक अकेले ध्रुव तारे सम
जग में आप घुवाराजी

समाज की विभूतियों के अकस्मात् निधन पर वर्चुअल दी गई श्रद्धांजलि

ऑनलाइन श्रद्धांजलि सभा में समाजसेवा, राजनीति और पत्रकारिता के नायकों को दी गई श्रद्धांजलि। वक्ताओं ने बताया अपूरणीय क्षति। समाजसेवी निर्मल सेठी, कुशल राजनेता कपूरचंद घुवारा, पत्रकारिता के पुरोधा कैलाश चंद्र जैन को दी गयी भावभीनी श्रद्धांजलि।

जैन समाज की विभूतियों के अकस्मात् निधन पर प्रज्ञा श्रमण जूमएप के माध्यम से जैन पत्रकार महासंघ (रजि.) व प्रभावना जनकल्याण परिषद् (रजि.) के तत्वावधान में वर्चुअल श्रद्धांजलि सभा का आयोजन प्रज्ञाश्रमण मुनि श्री अमितसागर जी महाराज, जन संत मुनि श्री विरंजन सागर जी महाराज, जगद्गुरु डॉ. स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी जी जैन मठ, मूडबद्री, कर्नाटक, स्वस्ति श्री रविंद्र कीर्ति स्वामी जी हस्तिनापुर के सान्निध्य में किया गया ।

श्रद्धांजलि सभा के संयोजक डॉ. सुनील संचय ललितपुर ने बताया कि जैन संस्कृति संरक्षण के महानायक, भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्मल कुमार जी सेठी, दिल्ली, वरिष्ठ राजनेता पूर्व मंत्री मध्य प्रदेश सरकार कपूरचंद जैन घुवारा टीकमगढ़, पत्रकारिता के स्तंभ कैलाश चंद जैन विश्व परिवार ,झांसी आदि विभूतियों के आकस्मिक निधन पर ऑनलाइन के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर श्रद्धांजलि दी गई। जिसमें उक्त विभूतियों के अकस्मात निधन को अपूरणीय क्षति बताया।

श्रद्धांजलि सभा की अध्यक्षता जैन पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष व अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के कार्याध्यक्ष रमेश जैन तिजारिया जयपुर ने की। श्रद्धांजलि सभा में सर्वप्रथम राष्ट्रीय कवि डॉ. कमलेश 'बसन्त' तिजारा ने श्रद्धांजलि गीत प्रस्तुत किया।

इस दौरान मुनि श्री अमितसागर जी महाराज ने कहा कि निर्मल सेठी जैन समाज, जैन संस्कृति की रक्षा में सदैव अग्रणी रहते थे। जगद्गुरु डॉ. स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी जी ने कहा कि सेठी जी का व्यक्तित्व महान था, उनके साथ अनेकों बार जैन संस्कृति के संवर्धन के संबंध में विचार विमर्श होते थे। स्वस्तिश्री रविंद्रकीर्ति स्वामी जम्बूद्वीप हस्तिनापुर ने कहा कि निर्मल सेठी को परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्रीज्ञानमति माताजी का आशीर्वाद था। उन्होंने जैन संस्कृति के लिए अपने जीवन के 50 वर्ष से अधिक समय दिया, उन्होंने विदेशों में भी जैन संस्कृति का संवर्धन किया।

इस अवसर पर मुनि श्री विरंजनसागर जी महाराज ने कहा कि निर्मल सेठी जी ने अपनी संस्कृति के संरक्षण के लिए खूब कार्य किया। श्री कपूरचंद घुवारा कुशल राजनीति के साथ बुंदेलखंड के शेर थे।

भारत सरकार के पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रदीप जैन आदित्य झांसी ने कहा कि निर्मल सेठी जी ने अनेक संस्थाओ का सृजन किया व पूरे जीवन भर समाज में एक नई ऊर्जा का संचार करते रहे। कपूरचंद घुवाराजी बुंदेलखंड की राजनीति में धवल नक्षत्र थे, वे अपने इंकलाबी इरादों के लिए जाने जाते थे।

घुवारा जी ने ललितपुर में रेल रोको आंदोलन किया था। सिंगरौली ललितपुर रेल मार्ग के वे नींव के पत्थर थे। कैलाश चंद्र झांसी जो झांसी नगर पालिका के मेयर रहे साथ ही पत्रकारिता जगत् के पुरोधा थे।

दिगम्बर जैन पंचायत ललितपुर के अध्यक्ष अनिल अंचल ललितपुर ने कहा कि तीनों विभूतियों के आकस्मिक निधन से अपूरणीय क्षति हुई है। उन्होंने अपना पूरा जीवन जिन धर्म और धर्मायतनों की रक्षा के लिए समर्पित कर दिया। ललितपुर जैन पंचायत की ओर से श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं।

ब्र. जय निशान्त जैन टीकमगढ़ निदेशक प्रभावना जन कल्याण परिषद एवं प्रागैतिहासिक क्षेत्र नवागढ़ ने कहा कि निर्मल सेठी जी विराट व्यक्तित्व के धनी तथा पुरातत्व की खोज में सतत् संलग्न रहने वाले थे। कपूरचंद्र जी घुवारा 1980 में 39 वर्ष की आयु में विधायक निर्वाचित हो गए थे। 2005 में पुनः विधायक व मध्यप्रदेश सरकार में दर्जा प्राप्त केबिनेट मंत्री बने। वे अपनी अनूठी कार्यशैली के लिए जाने जाते थे। कैलाशचंद्र जी झांसी का राजनैतिक, पत्रकारिता, समाज सेवा आदि में योगदान अविस्मरणीय है। डॉ. शीतलचन्द जैन निदेशक श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर, जयपुर ने दिवंगत विभूतियों के कार्यों को स्मरणीय बनाने के लिए स्मृति ग्रंथ प्रकाशित करने की बात रखी।

संचालन करते हुए राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद ने दिवंगत विभूतियों का परिचय दिया तथा कहा कि वे अपने उल्लेखनीय कार्यों की वजह से सदैव जीवंत रहेंगे।

कार्यक्रम समन्वयक उदयभान जैन जयपुर महामंत्री जैन पत्रकार महासंघ व मनीष विद्यार्थी शाहगढ कोषाध्यक्ष प्रभावना जनकल्याण परिषद ने बताया कि निर्मल सेठी जी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे, कपूरचंद घुवारा जी जन–जन के काम कराने के कारण वे क्षेत्र में अत्यधिक लोकप्रिय नेता रहे तथा कैलाशचंद्र जी ने पत्रकारिता जगत् को गौरवान्वित किया।

श्रद्धांजलि सभा में डॉ. श्रेयांस जैन बडौत अध्यक्ष अ. भा. दिगंबर जैन शास्त्रि–परिषद्, हंसमुख गांधी इंदौर, पुनीत जैन दिल्ली चेयरमैन टाइम्स ऑफ इंडिया, डॉ. मणीन्द्र जैन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री दिगंबर जैन महासमिति, स्वदेशभूषण जैन वाइस चेयरमैन दैनिक पंजाब केसरी समूह, राष्ट्रीय गायक, भजन सम्राट रूपेश जैन टीकमगढ़, राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित प्रो. भागचंद भास्कर नागपुर, द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र के मंत्री भागचंद जैन पीली दुकान ,प्रकाश मोदी चेयरमैन पारस चौनल, सुरेश जैन आईएएस भोपाल , जस्टिस विमला जैन भोपाल, जस्टिस पानाचंद जैन जयपुर, डॉ. चिरंजी लाल बगड़ा कोलकाता प्रधान संपादक दिशाबोध, संतोष जैन घड़ी सागर, अमित कासलीवाल इंदौर, त्रिभुवन जैन महामंत्री कानपुर जैन समाज , सुमेर काला अध्यक्ष मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र महाराष्ट्र, विमल जैन प्रांतीय अध्यक्ष बीजेएस जबलपुर, डॉ .जीवन प्रकाश जैन राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद्, डी के जैन डीएसपी इंदौर, विचार संस्था के संस्थापक कपिल मलैया, सागर, कमल बाबू जैन जयपुर, समाजसेवी

पवन घुवारा,टीकमगढ़, प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया के सदस्य प्रदीप जैन रायपुर संपादक दैनिक विश्वपरिवार रायपुर, समाजसेवी सुनील घुवारा टीकमगढ़, अध्यक्षता कर रहे रमेश जैन तिजारिया आदि ने उक्त जैन संस्कृति के महानायकों के कृतित्व व व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनके द्वारा जो कार्य प्रारंभ किए गए वो पूर्ण हों, तथा उनकी स्मृति में ग्रंथ का प्रकाशन हो तभी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

उक्त वेबीनार में डॉ. अनुपम जैन इंदौर, जमनालाल जी हापावत कार्याध्यक्ष महासभा, दैनिक आचरण के सम्पादक सुनील जैन पूर्व विधायक सागर, संजय पापड़ीवाल, भा. दिग. जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र, दिलीप जैन जयपुर, भरत काला संपादक जैन गजट लखनऊ, अकलेश जैन अजमेर संपादक अजमेर आजकल, डॉ. प्रगति जैन इंदौर, राकेश चपलमन कोटा, संजय बड़जात्या कामां, महेंद्र बैराठी जयपुर, जिनेन्द्र घुवारा, डॉ. सतीश जैन जबलपुर, रवि जैन गुरु जी दिल्ली अध्यक्ष अखिल भारतीय ज्योतिषाचार्य परिषद्, नैनागिरी एवं द्रोणगिरि सिद्ध क्षेत्र के उपमंत्री राजेश रागी बकस्वाहा, सुनील शास्त्री सोजना अध्यक्ष प्रभावना जनकल्याण परिषद, श्रेयांस जैन ककरवाहा, अशोक क्रांतिकरी बल्देवगढ़, विमल बज प्रांतीय महामंत्री युवा परिषद् राजस्थान प्रांत, राकेश सोनी इंदौर, संपादक देवपुरी वंदना, साहिल जैन पश्चिम बंगाल, प्रो. टीकमचंद जैन दिल्ली, डॉ.पी.के. जैन मेलबॉर्न, ऑस्ट्रेलिया, डॉ. डीसी जैन दिल्ली, डॉ. मनीष जैन जबलपुर, राहुल जैन अजमेर, संजय मरौरा, मैनेजर एसबीआई, प्रदीप सतरवांस ललितपुर, सुषमा भिलाई, पवन दीवान मुरैना, सुमति प्रकाश सागर, डॉ हरिश्चंद्र जैन मुरैना, पं. विनोद रजवांस, प्रदीप पाटनी लखनऊ, ऋषभ चंदेरिया कोतमा, प्रो. पी. के. जैन छतरपुर, सुरेश मरौरा इंदौर, यशोधर दिवाकर सिवनी, अंकित सांधेलिया, श्रीपाल गंगवाल, राकेश हटैया बड़ागांव, प्रदमुन शास्त्री जयपुर आदि अनेकों राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के शीर्ष पदाधिकारियों के साथ सैकड़ों श्रेष्ठियों ने भाग लेकर श्रद्धांजलि अर्पित की। तकनीकी सहयोग मोहित जैन मोही अमित सागर भक्तमंडल का रहा।

ऑनलाइन श्रद्धांजलि सभा में निर्मल सेठी जी, कपूरचंद घुवारा जी, कैलाश चंद्र जी के साथ ही मुनि श्री निकलंक सागर जी महाराज, मुनि श्री विश्वानुत्तर सागर जी महाराज, ब्र. राजेश भैया, ब्र. अतुल भैया, प्रतिष्ठाचार्य अजीत शास्त्री दिल्ली, पंडित प्रवीण शास्त्री हस्तिनापुर एवं उत्तमचंद डोंगरगढ़, वीर सेवा मन्दिर दिल्ली के अध्यक्ष श्री भारत भूषण जैन आदि विद्वत, श्रावक, श्रेष्ठियों के आकस्मिक निधन होने पर जैन समाज की अपूर्णीय क्षति के लिए भी नौ बार णमोकार मंत्र के साथ श्रद्धांजलि दी गई।

गणिनी आर्यिका ज्ञानमति माताजी का आशीर्वाद

ध्वजारोहण

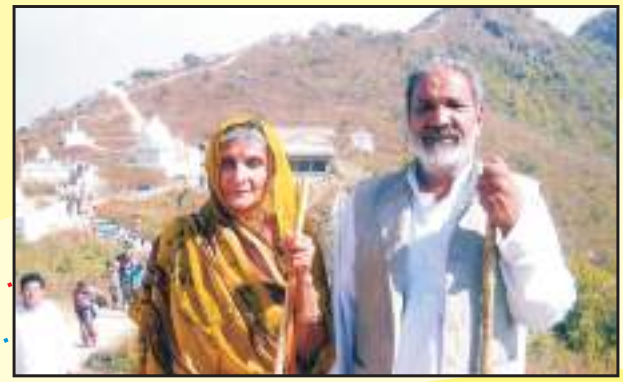

सहधर्मिणी के साथ तीर्थराज सम्मेदशिखरजी

डॉ. दरबारीलाल कोठिया, पं. गुलाबचन्द जैन पुष्प,
पं. बाबूलाल जैन पठा, पं. जगनप्रसाद जैन आदि विद्वानों के साथ

जीवन बीता जिनके साथ

राष्ट्रसंत आचार्य विद्यानन्द जी से विशेष परामर्श

आचार्य सन्मति सागर जी के चरणों में नमन

आचार्य वर्धमान सागर जी का शुभाशीष

शास्त्रि–परिषद् पुरस्कार सम्मान

महासभा सम्मान अध्यक्ष श्री निर्मल जी सेठी द्वारा

राष्ट्रीय सम्मान आर. के. जैन, मुम्बई द्वारा